बण्टा

डॉ. अमरेन्द्र

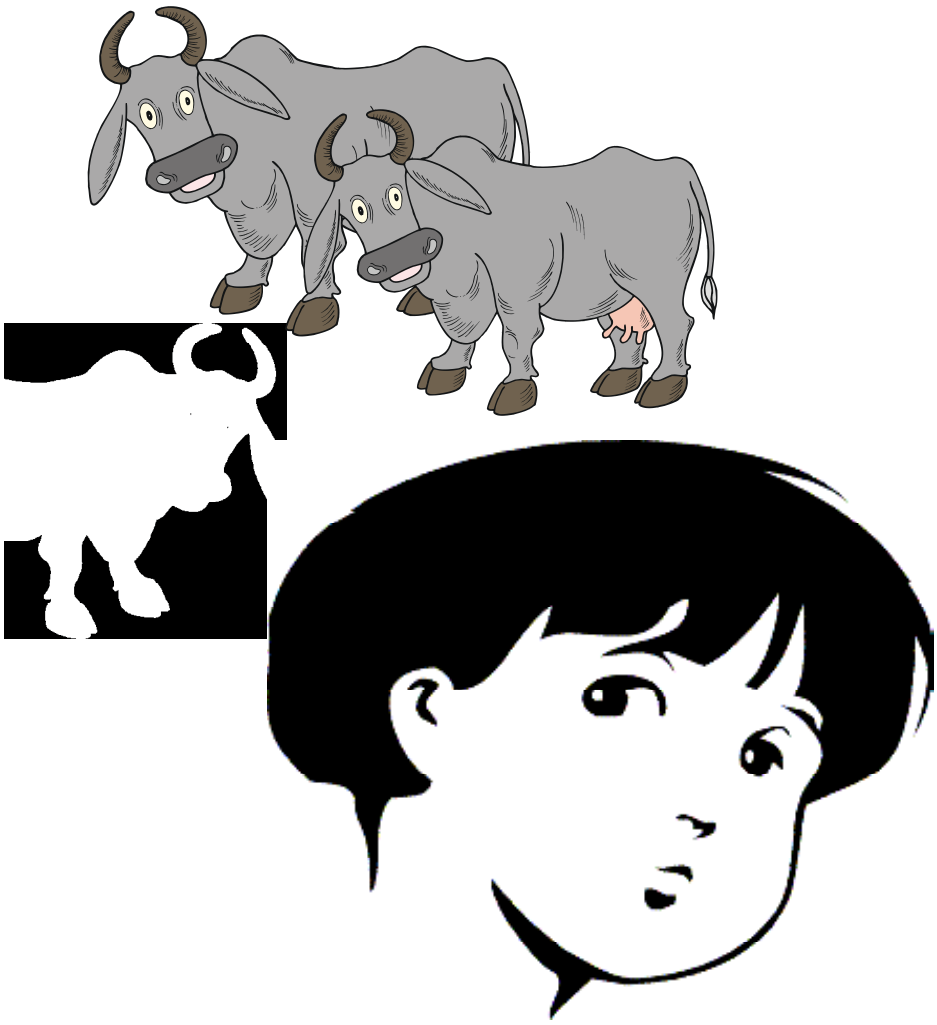

बण्टा

अंगिका बाल-उपन्यास

बण्टा

(अंगिका बाल-उपन्यास)

डॉ. अमरेन्द्र

अंगिका संसद
भीखनपुर-भागलपुर
(बिहार)

© Dr. Amrendra

उपन्यास : बण्टा
लेखक : डॉ. अमरेन्द्र
संस्करण : ई. २००६
प्रकाशक : अंगिका संसद, भागलपुर (बिहार)
मुद्रक : एमएलपी, भागलपुर
मूल्य : ७५ रूपये

BANTA (NOVEL) By Dr. Amrendra

आपनों बचपन कें

—अमरेन्द्र

सुनों नुनू-बाल-बुतरु सिनी

अप्रैल सें ही जे रं सूरज तपना शुरु होलौं, कि ठण्डा होय के नामे नै लेलकौं। दुर्भाग्य देखों कि अबकी सावनो-भादों सुक्खे रहलौं । पानी पड़बो करलौं तें बड्डी देर करी ।

मों उक-बिख करत्हैं रहलौं भर कातिक तांय । आबें आधों अगहन बीती रहलों छौं, आरो राती बिजली पंखा चलाय लें पड़ी रहलों छौं, बिजली तें रहै नै छौं—पंखा हूकों, आरो की ।

आबें सुनों,

हेने हालों में तोरों लें चार-चार किताब पूरा करलियौं ।

गर्मी के प्रभाव खाली नदी, गाछ-बिरिछे पर नै पड़ै छै, आदमी पर तें आरो । सोचौ, केना कें तोरा सिनी लें चार-चार किताब तैयार करलें होभौं । अनुवादवाला किताब बाहर छपना छेलै, से जल्दी-जल्दी सब काम करी कें भेजलां तपलों ताबा रं कोठरी में बैठील कें । दोबारा पढ़े के मौको नै छेलै, न मने बनलै ।

बची गेलै बण्टा, सोचलें छेलियै, एकरा दिसम्बर में छपबैबै, फेनू मों होलै, नया साल यानी २०१० जनवरी में छपबैबै । यही सोची जुलाय २००९ में पूरा होलों ई उपन्यास कें दोबारा नै देखलियै ।

आरो देखोंॅ, आय १४ नवम्बर यानी बाल दिवसर पर हठाते मोंन होय गेलै कि जेना हुएॅ, यही साल छपवाय देना छै । आय्ये तोरा लेंॅ ई दू शब्द लिखलियौं आरो कल्हे-परसू प्रेसोंॅ में दै देभौं, ताकि दिसम्बर के शुरुवे में यहू उपन्यास तोरोंॅ हाथोंॅ में हुएॅ । नया साल में नया बात सोचलोंॅ जैतै ।

मतरकि एक बात, ई उपन्यास के बण्टा जों तोरोंॅ सिनी के साथी बनेंॅ पारलौं, तेंॅ हमरा बड्डी खुशी होतौं । आरो सुनी ला, बण्टा बड़ोंॅ होय चुकलोंॅ छै । बड़ोंॅ मतलब बूढ़ोंॅ नै । मतलब कि नै बच्चा, नै जुआन, बीचोंॅ-बीचोंॅ के । सोचलेंॅ छियै कि अगला उपन्यास में ओकरोंॅ बादवाला कारनामा बतैय्यौं । मतरकि पहिलें तोहें ई तेंॅ बतैय्यौ कि 'बण्टा' केन्होंॅ बुझैलौं ।

तोरोंॅ सिनी के

लाल काका

१४ नवम्बर २००६ (बाल दिवस)

सम्पर्क :
लाल खां दरगाह लेन,
सराय, भागलपुर, ८१२००२
मो. ९९३९४५१३२३

डॉ. अमरेन्द्र रों अंगिका बाल साहित्य

०१. ढोल बजै छै ढम्मक ढम (कविता-संग्रह)
०२. बुतरु के तुतरु (कविता-संग्रह)
०३. बाजै बीन बजावै तीन (कविता-संग्रह)
०४. एक छड़ी पर अण्डा नाचै (कविता-संग्रह)
०५. तुक्तक-मुक्तक (कविता-संग्रह)
०६. पंचगव्य (एकांकी-संग्रह)
०७. दुपल्लो (एकांकी-संग्रह)
०८. फैसल रों जासूसी (उर्दू बाल उपन्यास के अनुवाद)
०९. शिकार आरो शिकारी (उर्दू शिकार कथा के अनुवाद)
१०. जंगल रों पहचान (उर्दू बाल उपन्यास के अनुवाद)
११. बण्टा (उपन्यास)
१२. घटोत्कच (बालखण्डकाव्य) प्रकाश्य

बण्टा

बण्टा घण्टा भरी सें देखी रहलोॅ छै—तीन-तीन भैंस ओकरोॅ बारी में घुसी ऐलोॅ छै आरो बड़ी निचिन्ती सें खेतोॅ के घास कचरेॅ लागलोॅ छै । एक-दू दाफी वैनें हट-हट करी केॅ भगैय्यो के कोशिश करलेॅ छेलै, एक-दू झिटकियो एक-एक करी केॅ सबके दिश फेकलकै, मतरकि भागै के बात तेॅ दूर, भैंसें मुड़ियो उठाय केॅ बण्टा दिश नै देखलेॅ छेलै । वहूं सोचलकै, आखिर की बिगाड़िये रहलोॅ छै भैंसें, आपनोॅ एक दिश चरी रहलोॅ छै, बाबू जन्नें परोल के लोॅत रोपलेॅ छै, हुन्नें तेॅ भैंस सिनी नहिये नी जाय रहलोॅ छै । जों हमरोॅ भगैला सें कहीं हुन्ने दिश भागी जाय, तेॅ भारी मुश्किल । हमरा सें भैंस सिनी तेॅ भागैवाला नै छै, लोतो रौंदतै, खैवो करतै आरो मुफ्त में मार खैबोॅ हम्में । बाबू कहतै—तोंही भैसोॅ केॅ हिन्नें भगैनें होबैं । आरो यहू कहतै—तोहें जरूर खेलै लेॅ भागी गेलोॅ होवैं आरो हिन्नें भैंसें सब लोॅत मोचरी गेलै ।

बाबू के याद ऐतै बण्टा केॅ कुछ झुरमुरी रं बुझैलेॅ आरो निसुआड़ी के एक ठार, पाँच-छोॅ बार दाँया-बाँया करी केॅ, तोड़ी लेलकै आरो भैंस के नगीच आवी केॅ खाड़ोॅ भै गेलै, कि जों केन्होॅ केॅ एक्को भैंसें हिन्नें मुँह उठैलकै कि ओकरोॅ मुँहे पर मारतै । वैनें बाबू केॅ हेन्है केॅ मारी केॅ कै दाफी भैंसी केॅ भगैतेॅ देखलें छै ।

साटोॅ लै केॅ बण्टा के खाड़ोॅ होना छेलै कि भैंसियो सिनी ओकरोॅ दिश मुँह उठाय केॅ इस्थिर होय गेलै—नै गर्दन हिलाबै, नै पुछड़ी । वैंनें भैंसिया सिनी के आँखी दिश देखलकै, ''अरे बाप रे बाप, सब के आँख कारोॅ पत्थर के गुल्ली रं एकदम इस्थिर—नै मटकी मारै छै, नै पिपनी हिलै छै ।''

आरो सबके आँख बण्टाहै दिश गड़लोॅ ।

ओकरा डोंर लागें लागलै । लागलै कि सब भैंसिया एक्के दाफी ओकरों दिश दौड़ी पड़तै आरो ओकरा खूँची-खाँची कें रक्खी देतै ।

एतना सोचना छेलै कि बण्टा भैंसिया सिनी कें देखले-देखले आठ-दस कदम पीछू कल्लें-कल्लें हटलै, फेनू हठाते पीछू मुड़ी कें सरपट भागलें आपनों दुआरी पर आवी कें खाड़ों होय गेलै आरो वहीं सें वैनें ऊ सब कें गुर्राय कें देखलकै ।

सब भैंस होन्हे कें घास कचरें लागलों छेलै—बीचों-बीचों में नेंगड़ी हिलाय-हिलाय कें ।

ओकरा याद ऐलै—आठे, दस रोज पहिलकों तें बात छेकै, ''अनारसी काका के भैंस हमरों खेतों में घुसी गेलों छेलै । बाप रे बाप, अनारसी काका के भैंस छेकै—जेना बिना सूड़वाला हाथी । देखथैं हम्में पुआली तरों में सुटियाय गेलों छेलियै, आरो वहीं सें खोंर हटाय-हटाय कें भैंसिया कें देखतें रहलों छेलियै । बाप रे बाप, आपनों घोंघरी सिंहों में की रं लोंत लपेटी कें खीची लै छेलै आरो जीहा में फँसाय कें गटकी लै । सब लोंत सुरकला के बादे झुमलों-झुमलों खदैया दिश बढ़ी गेलै । ऊ तें भगवाने हमरा बुद्धि देलकै कि भैंसी के जैतै, हम्में अनारसी का के घोंर भागलियै । कानी-कानी काका सें सब बात कहलियै आरो बाबू के मारों सें हम्में बची गेलियै । अनारसी कां बाबू के समझाय देलें छेलै, 'देख पचरासी, बच्चा बुतरू कें है रं बैल-बोतू रं डंगैलों नै करैं—गोबध लागतौ । अरे बच्चा-बुतरु के मनों में तें गैये के नी मोंन बसै छै । गाय, माय, बच्चा, सब बरोबर । आबें तोहें है रं आपने बच्चा कें पीटै छैं, तें दूसरा के बच्चा कें तोहें की दुलरैबैं । टोला भरी के बच्चा डरों सें कुछ भले नै बोलौ, भीतरी मनों सें तें राकसे कहतें होतौ । राकस का, राकस बाबा, राकस नाना, आरो नै जानौं की-की । अरे पचरासी, बच्चा तें सिलोट नाँखी होय छै, जे देखै छै, वही लिखाय जाय छै आरो होने फेनू जिनगी भर घोकै छै । कल फेनू वहूं होने रं करतै, तें तोहें कहबैं—कुलों में कलंक जनमलों छै । बच्चा कें दुलार करभैं, गलती कें समझाय कें बतैभैं, तें वहूं वहें रं करतै । आय जे बच्चा सिनी उद्दण्ड बनी गेलों छै, वैमें हमरों सिनी के दोख बुझैं पचरासी, खाली बच्चे कें गरियैला सें कुछ नै होय वाला छै । हम्में तें कहभौ—आपने बच्चा कें नै, टोला भरी के बच्चा के साथ खेलें, कल टोला भरी के बच्चा वास्तें तोहें आपनों पितियों, आपनों नाना, आपनों

बाबा रं बुझैबे । की समझलैं.....आबें भैंसे तोरों परोली के लोंत चाटिये गेलै, तें यै में बण्टू के की दोख । है दस बरिस के बुतरु भला भगाय लेतियै भैंसी कें की ? जानवर तें जानवर होय छै, हमरौ सिनी जानवरे रं करवै तें जानवर आरो मनुक्खों में की अन्तर । है ले, सौ टाका । तोरों नुकसान हम्में समझै छियौ । बण्टू कें मारियै नैं ।''

आरो पचरासीं ओकरा ठिक्के नै मारलें छेलै । बण्टा कें समझै में नै ऐलों छेलै कि कैन्हें नी ओकरों बाबूं ओकरा मारलकै । की अनारसी का के समझैला पर, आकि बाबू कें सौ टाका मिली गेलों छेलै, यै लेली । जे भी हुऍ, अनारसी का के भैंसीं परोली लोंत कें चाटी की गेलों छेलै, बण्टा कें तें आजादी मिली गेलों छेलै । लोतों के रहतें, ऊ दिन भरी नै तें ठीक सें खेलें पारै, नै आरामे करें पारें । दिन भरी बस एकरे चिन्ता लागलों रहै कि कहीं कोय बकरिये नै टटिया के फाँक सें घुसी आवें ।

भैंस-गाय घुसै, तें टटिया के बड़ी जोर सें आवाज हुऐ, से ओकरा समझहौ में देर नै लागै कि कोय भैंस-गाय घुसै के कोशिश करी रहलों छै । भनक मिलथैं ऊ साटों लै कें टटिया दिश बिरनी रं उड़ै, जेना अभी ओकरा काटिये लेतै, लेकिन ई बकरिया, पाठा, पाठी सें बण्टा बड़ी परेशान रहै, कखनी टटिया के फाँक सें घुसी जाय आरो ओकरा कुछ पतो नै लागै । ऊ तें जबें खैतें-खैतें कान पटपटाबै, तबें ओकरा समझै में आबै कि बकरी-छकरी घुसी गेलों छै ।

एक दाफी यहें रं मोटों-नाटों पाठा टटिया कें केन्हों ठेली-ठाली भीतर घुसी गेलै आरो चर्र-चर्र करी घास कें निगलना शुरु करी देलकै । कुछ देर लेली तें बण्टां ओकरा देखतें रहलै आरो फेनू मुहों में हवा भरी कें साँस रोकी लेलकै । बण्टा के दोनों गाल बेलुन नाँखी फुली गेलों छेलै । ऊ एकदम हौले-हौले, जेना खोटा-पिपरी चलतें रहें, पाठा दिश बढ़लै आरो जेन्हैं ओकरा लागलै कि आबें ऊ केन्हौ कें नै भागें पारें, झपटी कें पठवा कें धरिये तें लेलकै । पहिलें तें वैं ओकरों पिछुलका टेंगड़ी धरलकै, फेनू ओकरों दोनों कान आरो फेनू ओकरों पीठों पर सवार होय गेलै ।

पीठी पर सवार होतैं, पठवा ओकरों भार सें मुक्त होय लेली हिन्नें-हुन्नें भागना शुरु करलकै । बण्टा कें तें जेना ओकरों मनों लायक घोड़ा मिली गेलों छेलै ।

पठवा जेना-जेना तेज भागै के कोशिश करै, तेना-तेना बण्टा के देहों में गुदगुदी बढ़ै, आरो वैं बायां हाथों सें ओकरों पुछड़ी पकड़ी कें ऐंठै कि आरो तेज भागें । तखनी ओकरों दायां हाथ कस्सी कें पठवा के दायां कान धरलें रहै । पठवा के तेज होत्हैं बण्टा के दोनों हाथ पठवा के दोनों कानों पर आवी जाय ।

बण्टा तब तांय ओकरा खेतों में चारो दिश दौड़ैतें रहलै, जब तांय ऊ एकदम सें अघाय नै गेलै, खुद्दे हाँफें नै लागलै । पठवा तें हाँफतें-हाँफतें कै दाफी गिरियो गेलों छेलै । तखनी ऊ ओकरों पीठी सें उतरी जाय आरो ओकरा काने धरलें उठाबै । पठवा के उठै भर के देर रहै कि ऊ लद सना ओकरों पीठी पर बैठी जाय ।

कंठों तक अघाय गेलै बण्टा, तें पठबा कें टटिया लगीच लानी कें ओकरा पीछू सें एक लंग्घी मारलकै । पठवा एक बार तें गिरलै, मजकि उठथैं हेनों लगै छड़क्का उड़लै, जेना मरखन्नों साँढ़ देखी बुतरु उड़ै छै ।

ऊ दिन बण्टा बहुत खुश छेलै आरो रही-रही कें ओकरा बिट्टू के ख्याल आवी जाय ।

बिट्टू यानी दू साल के ओकरों भतीजा । मायं बाबू से कहलकै कि थोड़ों देर लें एकरा खेलाबौ, तें बाबू चित्त लेटी कें गोड़ ठेहुना सें मोड़ी लेलकै आरो पंजा के अड़कन दै गोड़ों पर बिट्टू कें बिठाय कें जोर-जोर सें हिलाबें-डुलाबें लागलै । बोललों जाय—घुघुआ घू, मलेल फूल, लब्बों घोंर उट्ठें, पुरानों घोंर खसें ।

बिट्टू झुलवा पर गाना सुनी कें चुप होय गेलों छेलै । ई देखी बाबूं एक दाफी आपनों टांग तें एत्तें ऊच्चों उठैलकै कि बिट्टू ससरी कें जेना पेटे पर आबी जैतियै । ऊ डरों सें काँपें लागलै आरो वही डरों में ओकरों गू-मूत बाहर निकली गेलै । बिट्टू के गू-मूत बाबू के टाँगी पर पसरै भर के देर छेलै कि बाबूं हेने ओकरा उठाय कें एक दिस राखी देलकै, जेना कि बाबू के देहों पर भोहा पिल्लू चढ़ी गेलों रहें आरो देखत्हैं झट से ओकरा हटाय देलें रहें । बिट्टू जे रं काननना शुरु करलें छेलै कि सौंसे टोला औनाय गेलों छेलै ।

बण्टा बाबू वाला घुघुआ घू आरो पठवा वाला सवारी कें मिलाय छै आरो एत्तें गदगद होय जाय छै कि आपनों जंग्घा पर खड़े-खड़ थपड़ी बजैतें उछलें लागै छै ।

कि तभिये ओकरों ध्यान भैंसी दिश गेलै । भैंस तें परछत्ती लुग चरतें-चरतें आवी गेलों छेलै ।

ऊ जोर सें चिकरलै । आवाज सुनलकै तें पचरासी दौड़ले-दौड़ले हाता में घुसी गेलै । परछत्ती लुग भैंस कें खाड़ों देखी बगले में धरलों साटों कें खींची लेलकै आरो एक साटों कस्सी कें भैंसी के धौनों पर दै देलकै । साटों खैतैं भैंस एक दाफी सरंग दिश मूँ करी कें बाँऽऽऽऽ करलकै आरो सीधे घुमी कें बहियारी दिश भागलै ।

बहियारिये दिशों सें अक्सर भैंस घुसी आबै छेलै । हुन्नें एकदम उदामों छेलै आरो ओत्तें बड़ों घेरा कें अड्डा या टटिया सें घेरबों मुश्किल छेलै ।

भैंसिया के भागथैं पचरासीं बण्टा कें गोदी में उठाय लेलकै आरो ओकरों पीठ सहलाबें लागलै । बाबू सें डाँट सुनै के जग्घा में ई रं दुलार पावी कें ऊ तें जेना सब बाते भूली गेलै । नै पठवा वाला बात याद रहलै, नै भैंसी केरों बात ।

दुलारला के बाद पचरासीं बण्टा कें नीचें उतारलकै आरो कहलकै, ''बण्टू, परसू सें तोहें इस्कूल जैबे । आय माट साहब सें हम्में बात करी लेलें छियै । पूवारी टोला सें कै छौड़ा तें जाय छै । लछमनिया, घोंघी, झबरा, मठिया आरनी; ओकरे साथ तहूँ चल्लों जय्यैं । है देख; तोरों वास्तें खल्ली आरो सिलोटो लानी देलें छियौ ।''

ई कही पचरासी आपनों दाँया हाथ कुर्त्ता के दाँया जेबी में डाललकै आरो ढेपो नाँखी खल्ली ओकरों हाथों में देतें कहलकै, ''है ले खल्ली आरो ई सिलोट ।''

वैंने बायां कंधा सें गमछी उतारलें छेलै, जेकरों एक छोरी में की बांधलों छेलै, ई तें बण्टा कें पता नै चललै, मतरकि दुसरों छोरी में बांधलों सिलोट ओकरा तुरत्ते दिखाय गेलै । जब तांय पचरासी ओकरा खोलतियै बण्टा थपड़ी बजैतै आपनों जग्घा पर उछलतैं रहलै—एक, दू, तीन, पाँच, आठ, दस । रुकलै तभिये, जबें पचरासीं ओकरों हाथों में सिलोट राखी देलकै । सिलोट लै भर के देर छेलै कि ऊ फुर्र सना माय लुग दौड़ी पड़लै ।

माय सूपों में कुछ फटकी रहलों छेलै कि तखनिये वैं सिलोट-खल्ली माय के आगू में राखी कें वांही पर लट्टू नाँखी घूरें लागलै ।

रात कें सुतबों करलै तें माय सें सट्टी कें नै, सिलोट सें सट्टी कें । छाती पर सिलोट राखले ओकरा नीन आवी गेलों छेलै, जेकरा बड़ी आहिस्ता सें ओकरों माय हटाय कें राखी देलें छेलै कि कहीं नीनों में चॉक नै पड़ी जाय ।

''है तें कहों कि बण्टु के सिलोट खल्ली तें कीनी देलौ, मजकि पिहनी कें की जैतै, यहा डाँड़ी सें सटलों पैंट आरो मजूरों नाँखी कपड़ा के गंजी पिहनी कें ।'' बण्टामाय पचरासी सें कद्दू छिलतें-छिलतें भोरे वक्ती कहलकै ।

''अरे मजूरों के बेटा मजूरों नाँखी कपड़ा नै पहनतै, तें की पहनतै ।'' ई बात कहलें तें छेलै हाँसिये हाँसी, मतरकि पचरासी के कंठ भर्राय गेलों छेलै, जेकरा बण्टा माय तुरत्ते भाँपी लेलें छेलै ।

''तोहें चिन्ता कथी लें करै छों । हम्में आय्ये घंटाघर जाय कें बण्टू वास्तें कमीज-पैंट कीनी ऐबै । सेथरों तें दुकान धारा-पांती सें रहै छै । सस्तों-महगों, सब किसिम के तें कुर्त्ता, पैंट बिकै छै । सौ टाका में कमीज-पैंट दोनों होय जैतै । सोचलें छेलियै कि जबें बण्टू के इस्कूली में नाम लिखैबै, तें लब्बों-लब्बों कमीज, पैंट कीनी देवै । यही लें तें, हम्में सौ टाका नीछी कें राखी देलें छेलियै ।'' बण्टामाय हुलासों सें कहलकै ।

ई सुनथैं पचरासी के मुँहों पर रौनक उतरी ऐलै । तहियो आपने बात कें धरतें फेनू कहलकै, ''ठीक छै, आरू जों नहियो रहतियै टाका, तभियो बण्टू इस्कूल तें जैबे करतियै । अरे भीखनपुर के कालिये थान वाला इस्कूल नी जैतै, कोनो मौन्टेसी इस्कूल तें नहिये नी, कि बुतरु कें हौ दौ, है दौ, ई कीनौ, हौ कीनों । सेर भरी के बच्चा छौं, तें पसेरी भर के किताबों सें बोझैलों बैग । बण्टू कें जानौ छै, तें कत्तें दूर । एक दरबनिया लगैते कि इस्कूलिये दुआरी पर रुकतै । आरो बोझों की ? बैठै लें एक एकठो चट्टी आरो लिखै लें एक टा सिलोट यही तें साथों में रहतै ।''

आरो वहें दिन बण्टा वास्तें लब्बों-लब्बों कपड़ा आवी गेलों छेलै । बहुत कुछ सोचियै कें ओकरी मायं कपड़ा आनलें छेलै—कुछ बड़े-बड़े ।

बण्टा झब-झब ओकरा चढ़ाय लेलें छेलै । पैंट छेलै, तें ठेहुना सें दू अंगुल नीचैं आरो कमीज छेलै, तें जाँघ भर ।

पचरासीं देखलकै तें कहलकै, ''है ठिक्के करलौ बण्टूमाय । आबें

कत्तो जल्दी बण्टू बढ़तै, तें दू साल तें पैंट-कमीज खाँटों नै पड़ै वाला छै ।''

''यहँ सोची कें तें दू अंगुल बड़ों कमीज किनलें छियै ।''

''ठीक करलौ, होना कें हम्में यहू सोचलें छेलियै, दुखहरन वाला जे पैंट-कमीज छै, ओकरै छटवाय कें छोटों करवाय देबै । कपड़ा में होले छै की । एत्तें मजगूत छै कि पाँच, छों महीना चलिये जैतियै । खैर, ओकरों जरूरते नै पड़लै ।''

''हेनों करियै कें तोहें कोंन बुद्धिमानी के काम करतियौ । दरजी काटी-छाँटी कें नाँपों के बनैतियौं, तें जानै छौ, कत्तें लेतियौं ? ओत्तें में तें ई नया कपड़ा आवी गेलै ।''

हुन्नें पचरासी आरो बण्टामाय में बातचीत चली रहलों छेलै, आरो हिन्नें बण्टा लब्बों-लब्बों कमीज-पैंट, चप्पल पिहनी कें मारे खुशी सें गद्‌गद होय रहलों छेलै ।

खाली पैंटे-कमीज नै, बण्टामायं हवाई चप्पलो जे लेलें छेलै, ऊ बण्टा के गोड़ों सें आधों इंची बड़े । बण्टा तें तखनिये सें गनगनाय रहलों छेलै, जखनी ओकरों गोड़ों के छाप ओकरी माय नें एक कागजों पर लेनें छेलै ।

आबें जबें हवाई चप्पल ओकरों गोड़ों में छेलै, तें ओकरों मोंन करी होलै कि पंजा बल्लों खूब हुमचौ । रहलों नै गेलै तें पंजा बल्लें वैं ऐड़िया कें खूब उठैलकै, फेनू बोंल लगाय कें एड़िया चप्पल में धंसाय देलके । फोंल ई होलै कि बायां चप्पल के एक दिशों के लब्बड़ वाला फीता बाहर निकली गेलै ।

कहीं टूटी तें नै गेलै, ई खयालों सें तें बण्टा एकदम कनमुहों होय गेलै मजकि जल्दिये ओकरी माय हाथों में चप्पल लेलकै आरो फीता के छोरी पर बनलों छोटों रं के चकरी कें चप्पल के छेदों में ठेली-ठाली कें, पीछू बनलों छोटों रं गोल खद्‌दो में अँटाय देलकै । फेनू समझैतें कहलें छेलै.... ''है रं उछलवे-कुदवे आरो कहूँ बीचे सें फीता टूटी गेलों, तें नढ़िये गोड़ जैय्यें इस्कूल ।''

माय के बात बण्टा बड़ी ध्यानों सें सुनलें छेलै, यही लें मोंन करथौं ऊ पंजा आकि चप्पल पर एड़िया भरी हुमचै के मोंन मारले रही गेलै ।

मजकि जबें आपनों बाबू के साथ चललै तें वैं आपना कें रोकें नै

पारै । ऊ दौड़ी कें पच्चीस हाथ आगू बढ़ी जाय आरो फेनू दौड़ले बाबू लुग आबी जाय । पाँच कदम बाबू साथें चलै, तें फेनू पच्चीस हाथ दौड़ी कें आगू बढ़ी जाय आरो वहें रं दौड़ी कें बाबू लुग आवी जाय । हेनै करी कें ऊ इस्कूल पहुँची गेलों छेलै ।

बण्टा कें वहीं इस्कूल में बिठाय कें पचरासी लौटी ऐलों छेलै—एकदम निचिन्त होय कें ।

बण्टा कें इस्कूल जैवों बड़ी अच्छा लागै । वहाँ कोय पढ़ाय-लिखाय तें हुऐ नै । जैते के साथ पाँच मिनिट के प्रार्थना हुऐ आरू फेनू वहू गलगुदुर । हुन्नें पाँचो मास्टर गप करी रहलों छै आरो हिन्नें सब बुतरु-बतराओ सिनी।

मास्टर सिनी के रस तखनिये भंग हुऐ, जखनी कोय लड़का चिचियाय उठै, ''मास्टर जी, दिनेशिया हमरा छुछुन्दरी कहै छै'', ''मास्टर जी उरवशिया हमरा लेधू पंडित कहै छै ।''

तखनी मास्टर जी है देखै छै कि कौनें चटियां शिकायत करलकै आरो केकरों बारे में शिकायत करलकै । बस दीवारी के एक मोखा में राखलों साटों उठाय छै आरो जे सामना में पड़ी गेलों, सिटपिटाय कें राखी देलकों । नै होलों तें बाद में दू-चार ऊपरों सें धौलो दै देलकै । जखनी इस्कूल में है रं कांड चलै छै, तखनी सें एक घण्टा लेली इस्कूली में एकदम शांति बनलों रहै छै । एकदम सकड़दम । सब चटियां खोड़ा या ककहरा सिहारें लागै छै—कोय तें आवाज करी कें, कोय मने-मन ।

बण्टा है समय में मुड़ी झुकैलें कोन्हराय कें खाली सबकें ताकते रहलों । खास करी कें मास्टर सिनी कें । आरो जबें ऊ निचिन्त होय छै कि कांही कुछ खतरा नै छै, तें वैं आपनों मूड़ी उठाय कें कुछ हेन्हे मुँह पटपटावें लागै छै, जेना वैं मनेमन कोय पाठ कें सिहारतें रहें । पाठ सिहारै के तें कोय बाते नै छेलै, कैन्हें कि पाठ याद करबों बण्टा लें पहाड़ उठैबों नाँखी लागै । कै दाफी वैं घरों में कोशिशो करलें छेलै कि जे मास्टर साहब याद करै लें देलें छै, ओकरा याद करी लें । मतरकि ई बात ओकरा लें एकदम कठिन बुझैलै ।

सिलोटी के एक दिशोॅ के कुछ याद करै, तेॅ दुसरोॅ दिश के लिखलोॅ भूली जाय आरो दुसरोॅ दिश के लिखलोॅ याद करै, तेॅ पहिलोॅ दिश के भूली जाय ।

तखनी ओकरोॅ सब गोस्सा सिलोटियै पर उतरै । वैं दोनों हाथोॅ सें पकड़ी केॅ सिलोट केॅ हेनै उठाबै, जेना कोय भारी चीजोॅ केॅ झटकै सें उठैलेॅ रहेॅ आरो वहेॅ तेजी सें पटकी दै लेॅ नीचें तक लानै, जेना फोड़िये देतै मतरकि पटकै नै । नया सिलोट फूटी जाय के चिन्ता सिलोट उठैथैं मनोॅ में ढुकी जाय ।

हौ वक्ती आपनोॅ गोस्सा शांत करै लेली वैं एक्के काम करै कि पेटोॅ पर सें गंजी केॅ ऊपर ससारै आरो सिलोटी पर लिखलोॅ सब अक्षर केॅ पहिलें पेटोॅ पर छापै । पेटोॅ पर छपलौ अक्षर केॅ कुछ देर ऊ देखथैं रहै, छपलोॅ उलटा अक्षर केॅ पढ़ै में ओकरा बड़ा आनन्द आबै आरो पढ़ी लेला के बाद सिलोटिये केॅ पेटोॅ पर दू-तीन बार रगड़ी-रगड़ी केॅ अक्षर मेटाय दै । जेना वैं आपनोॅ गोस्सा के कारणे केॅ रेगड़ी मेटाय देलेॅ रहै ।

बण्टा के आय पच्चीसमोॅ दिन बीती रहलोॅ छै, इस्कूली में ऐबोॅ । एक-एक लड़का सें ओकरोॅ घन्नोॅ परिचय होय गेलोॅ छेलै आरो इस्कूली सें गायब रहै के एक-एक गुर सें ऊ परिचित होय चुकलोॅ छेलै ।

इस्कूल सें गायब रहै के एकेक तरीका ओकरोॅ नसे-नस में उतरी गेलोॅ छेलै । हुन्नें गुरु जी केॅ कही दै कि माय के तबीअत खराब छै आरो घरोॅ में आबी केॅ कही दै कि ओकरोॅ ओटी विहाने से दरद करी रहलोॅ छै, नै रहलोॅ गेलै तेॅ इस्कूलोॅ सें चल्लोॅ ऐलियै ।

आरो ऊ दिन छुट्टिये-छुट्टी रहै छेलै बण्टा लेली ।

पचरासी कभी-कभार सोचबो करै कि आखिर आयकल बण्टू के ओटी में दरद कैन्हें रही-रही केॅ उठी जाय छै । वैनें ई बातोॅ पर बण्टू के माय सें एक-दू दाफी बातो करलेॅ छेलै । मतरकि बण्टामायं ई कही केॅ भरम मेटी देलकै कि घरोॅ में रहै छेलै तेॅ कुछ न कुछ मुँहोॅ में देतै रहेॅ, आबेॅ तीन-चार

घण्टा निराहारै रहै लें लागै छै, तें कुछ बुझैतें होतै । अभ्यास होय जैतै, तें सब ठीक होय जैतै ।

मजकि हौ दिन आबै के नौबते नै ऐलै । बण्टा के घरौवा नाम एक छौंड़ा, दू-चार आरो छौड़ां कें बताय देलकै, ''अरे एकरों नाम ध्रुव कुमार थोड़े छेकै, है तें ओकरों बाबू के गढ़लों नाम छेकै, जे ई इस्कूली में लिखाय देलें छै । एकरों असली नाम तें छेकै बण्टा ।''

बस की छेलै, तखनिये सें बण्टा ध्रुव कुमार के जग्घा में बण्टा बनी गेलै । ई बात जबें गुरु सिनी के कानों में गेलै, तें गुरुवो सिनी के जीहा पर ध्रुव कुमार के घरौवे नाम चढ़ी गेलै ।

आबें भले गुरुजी आरनी कें ई बात कचोटै वाला नै लागें, मजकि बण्टा तें भीतरे-भीतर कुढ़ी कें रही जाय, जखनी कोय गुरु जी पचास चटिया के बीचों में ओकरा बण्टा कही दै । ''एकरा सें की होय छै कि ओकरों असली नाम बण्टा छेकै, ध्रुवकुमार नये नाम छेकै तें की । आबें असली नाम हमरों यहें भेलै ।'' वैं मनेमन सोचै ।

एकरों सें ज्यादा बण्टा कें दुखमोचना सें चिढ़ हुऐ, जे दू-चार छौड़ा कें एकठो फैंकड़ा सिखाय देलें छेलै, आरो ऊ छौड़ा वकत-कुवकत वहें फेंकड़ा दुहरावें लागै—

जेकरों नाम छै बण्टा
वैं की पढ़थै, घण्टा ।

दुखमोचना इस्कूल भरी में सबसें ज्यादा पढ़ै-लिखै में तेज छेलै, यै लेली ओकरों सब पर धौंस भी चली जाय । बदमासियो करै तें कोय गुरु जी ओकरा मारै नै ।

वही एक हेनों लड़का छेलै, जे अकल्ले रिक्शा पर चढ़ी कें आबै । बाप कचहरी में नामी बड़ा बाबू छेलै । दुखमोचन के बाबू हफ्ता में एक दिन जरूरे इस्कूल आवी जाय । आबै, तें लागै जेना—इस्कूल इस्पेक्टर आवी गेलों रहै । देखथैं, सब गुरु जी पैरड लेली खाड़ों, जेना सिपाही रहें ।

जाय के पहलें सब गुरु जी कें जरूरे हुनी चाय-पान कराबै । यहा सें दुखमोचन के एक दुसरे रं के नवाबी छेलै, इस्कूली में ।

लेकिन बण्टा कें एकरा सें की । ऊ दिन दुखमोचना के पकिया साथी गरीबा इस्कूल सें लौटी रहलों छेलै ।

बैशाखों के शुरुआती दिन, मतरकि रौद तें जेना देह जराय दै वाला ।

कण्ठ सूखें लागलै, तें गरीबा इस्कूली सें आगू पचास हाथ दूरी पर गड़लों चापाकल के नगीच खाड़ों होय गेलै आरो कॉपी-किताब पेटों में खोसी कें चापाकल के हैंडिल ऊपर उठाय कें फेनू नीचें तांय दबाय देलकै । पानी निकललै, तें आगू बढ़लै—चुरु लगाय लें, मतरकि तखनी तांय तें पानी सोंऽऽऽ के आवाज करतें चापाकल के भीतर घुसी गेलै । वैं फेनू सें वहें रं आपनों देह के सौंसे भार देतें हैंडिल उठैतें ओकरा नीचें करी देलकै । अबकी पहिलका सें ज्यादाहै पानी निकललै, लेकिन जब तांय कि चापाकल के मुँहों सें आपनों चुरु सटैतियै, अबकियो दाफी पानी वहें रं सोंऽऽ करतें चापाकल के नीचें उतरी गेलै ।

बण्टा दूरे सें खड़ा होय कें तमाशा देखी रहलों छेलै । ओकरा भीतरे-भीतर गुदगुदी होय रहलों छेलै कि बच्चू फेरों में पड़लों छै । वैं बोलैबों करतियै केकरा, ओकरों सिवा तें आरो वहाँ पर कोय छेवो नै करलै ।

दुखमोचनें आँख उठाय कें इस्कूली दिश देखलकै, शायत कोय लड़का इस्कूली सें अभी निकलतें रहें । मतरकि वहाँ कोय नै छेलै । एकदम सून-सपाट होय गेलों छेलै ।

दुसरों दिश नजर घुमैलकै तें ओकरों नजर बण्टा पर पड़लै । सोचों में पड़ी गेलै—पुकारौं कि नै पुकारौं । कि हुन्नें सें बण्टा पहिलें बोली पड़लै "की बराय दियौ की ?" आरो दौड़ले-दौड़ले चापाकल लुग आबी गेलै ।

दुखमोचना कें प्यासे एत्तें लागलों छेलै कि ऊ कुच्छू बोलै के स्थितिये में नै रहै । हुन्नें जेन्हैं बण्टां सिलोट जमीन पर राखी कें हैंडिल दोनों हाथों सें धरलकै कि हुन्नें दुखमोचनो चापाकल के मुँहों सें आपनों दोनों हाथ कें दोना रं बनैतें सटाय देलकै ।

ओकरों हाथ तें जरूरे चापाकल के मुँहों सें सटलों छेलै, मजकि नजर बण्टाहै दिश तनलों ऊपर उठलों, कि जल्दी सें वैं हैंडिल कैन्हें नी दबाय रहलों छै । हुन्नें बण्टा के मनों में तें एक दूसरे बात घुमड़ी रहलों छेलै । वैनें हैंडिल कें हौले-हौले एक-दू दाफी ऊपर-नीचें करलकै आरो फेनू एक बारगिये हेनों जोरों सें दबाय देलकै कि पानी हों-हों करी कें बाहर निकली ऐलै ।

हौ पानी दुखमोचना के दोना नाँखी बनलों हाथों सें बाहर छिलकी

कें ओकरा सौंसे मुँहों कें भिगैतें, कालर, जेब, पैंट, सबकें भिंगाय देलकै । अकबकाय कें सोझों होलै, तें मुंहों-गर्दन के पानी टघरी कें पैण्टों में खोसलों कॉपी-किताब सबकें सरगद करी देलकै ।

दुखमोचना के देखै लायक स्थिति देखी कें बण्टा भीतरे-भीतर गनगनाय उठलै, मतरकि चेहरा पर हेने कुछ बनावटी भाव लानलें होलों छेलै, जेना—यैमें ओकरों कोय दोष नै रहें आरो ई बात के ओकरों दुक्खो बहुत रहें ।

हुन्नें दुखमोचना के मूं गोस्सा सें तमतम करी रहलों छेलै । प्यास-त्यास तें कखनिये खतम होय चुकलों छेलै ।

ओकरों ई हालत देखी कें बण्टा कें थोड़ों टा कचोट होलै, तें कहलकै, ''हम्में नै जानलियै कि हैंडिल दबैला सें पानी हेना कें होहाय जैतै, अच्छा अबकी हौले-हौले चलैवौ । एत्तें तें धूप छै । पाँचे मिनटों में कमीज-पैंट सुखी जैतौ । बस्ता पेटों सें निकाली कें धूपों में राखी दैं ।''

मतरकि दुखमोचना बण्टा के एक्को बातों के कोय जवाब नै देलकै आरो पेटों के आगू, पैंटों में खोसलों बस्ता निकाली कें सीधे घोंर दिश बढ़ी गेलै ।

आबें बण्टा कें आवै वाला खतरा के आभास हुऍ लागलै । ''जरूर वैं ई बातों के बदला लेतै । हेन्हों गुम्मी साधी कें कैन्हें गेलै । मतरकि यैं करै की पारें । है तें हुऍ नै पारें कि ऊ हमरा सें भिड़तै । एक्के पटकनिया में तें सब गुर्री भुतलाय जैतै....तबें ई हुऍ पारें कि वैं पीछू सें लंग्घी मारी दें आरो हेन्हों जग्घों मारें, जहाँ कि कादो-कीचड़ रहें ।'' ई बात सोचिये कें बण्टा एक मिनटों लें एकदम सावधान होय गेलै ।

मजकि वहाँ आबें कोय नै छेलै । दुखमोचना आँखी सें ओझल होय गेलों छेलै ।

बण्टां नीचें राखलों सिलोट-पेन्सिल उठैलकै आरो आपनों घोंर लगे छड़पनिया दै देलकै ।

घोंर तें आबी गेलै, मजकि दोसरों दिन इस्कूल जाय कें ओकरों हियाव नै हुऐ । बण्टां मने-मन सोचै, ''दुखमोचन जरूर बदला लै के कोय तरीका ढूंढतें होतै, आरो केना कें लेतै, ई कहना मुश्किल ।'' सोचतें सोचतें बण्टा हेनों कुछ सोची लै कि सोचियै कें ऊ डरी उठै, वैं मने-मन सोचलकै,

''हुएँ सकै छै, वें गुलेली सें गोली चलाय दै आरो गुलेली के गोली ओकरोॅ कोकड़ी, पीठी आकि गोड़े सें लगी गेलै, तबें तें बाप रे बाप, दस दिन खटिया सें सटलोॅ रहोॅ । एक दाफी गुलेली सें कस्सी कें गोली वैं एक ठो पठिया पर चलाय देलें छेलै । आधोॅ घंटा तक ऊ पठिया वहीं पर छटपटैतें रही गेलै । ऊ तें केकरो पता नै चललै, नै तें वहें दिन हमरा निनौन होय जैतियै ।''

गुलेल के बात सोचतैं ओकरा लागलै कि एक हनहनैतें ऐतें गोली ओकरोॅ पनखोखा सें लागलोॅ छै आरो ऊ छटपटावें लागलोॅ छै । बण्टा एकदम सें सिहरी गेलै । सोचलकै, ''नै, ऊ इस्कूल नै जैतै । कम-सें-कम दू-तीन दिन तक नहिये जैतै । तब तांय दुखमोचना के गोस्सा जरूरे उतरी जैतै । फेनू, की हम्में मारलें छियै, की पीटलें छियै ? जों पानी होहाय कें निकली गेलै तें, हमरोॅ की दोष ।'' वैंनें आपना कें निर्दोष दिखैतें मन कें ढाढस बंधैलकै कि काहीं कुछ नै होतै ।

आरो यहें सोची कें कि कांही कुछ नै होतै, वैनें काँखी में सिलोट-किताब दबैलकै आरो दोसरोॅ दिन इस्कूली दिश चली देलकै । दूरे सें जखनी ओकरोॅ नजर चापाकल पर पड़लै, ओकरोॅ आँखी में कलकोॅ वाला घटना घूमी गेलै । होहैतें पानी आरो दुखमोचन केरोॅ सरगद होलोॅ कमीज, पैंट, बस्ता । बण्टा के ठोरोॅ पर हस्सी फैली गेलै ।

ऊ मने-मन गुदगुदैतें इस्कूली के पिण्डा तांय पहुँचलै। ओकरा घोर आचरज होलै कि एक भी बच्चा हल्ला-गुल्ला नै करी रहलोॅ छेलै आरो दुखमोचन, सब लड़का सें अलग, ऊ मरखन्नोॅ मास्टर जमुआर लुग बैठलोॅ होलोॅ छेलै, जेकरोॅ मार सें यमराजो थरथर काँपै छेलै ।

अभी बण्टा पिण्डा के ऊपर चढ़लोॅ नै होतै कि जमुआर गुरु जी झपटी कें ओकरा धरलकै आरो बिना कुछ पूछलैं छड़ी सें सिटपिटाय देलकै वैं तब तांय सिटपिटैतें रहलै, जब तांय कि जमुआर गुरु जी थक्की नै गेलै ।

बण्टा कटलोॅ कबूतर नाँखी छटपटैतें रहलै, मतरकि कोय मास्टर बचाय लें नै ऐलै । लड़का सिनी कें तें खैर डरोॅ सें जाने निकली रहलोॅ छेलै; ऊ की बचाय लें ऐतियै !

जबें जमुआर मास्टर मारतें-मारतें हफसें लागलै, तें मारबोॅ छोड़ी देलकै आरो एक दिश राखलोॅ कुर्सी पर बैठी रहलै । बण्टा कमीजोॅ सें, बाँही सें, आरो अंगुरी सें लोर पोछतें होनै कें खाड़े रहलै । एक घण्टा नै, दू घण्टा

नै, तीन घण्टा नै, चार-चार घण्टा, जब तांय कि आखिरलका घण्टी जोरों सें टनटनाय नै उठलै ।

घण्टी के टनटनैतें सब चेला-चटिया सिलोट, बस्ता, बोरिया लेलें फुर्र पार होय गेलै । मतरकि बण्टा होनै कें खाड़ों रहलै । ओकरा साहस नै होलै कि आपनों सिलोट-कॉपी उठावें ।

मतर है सब कत्तें देर होतियै । आखिर गुरुओ आरनी कें तें जाय के हड़बड़ी छेवे करलै, से जमुआर मास्टर नें कर्रों बोली में कहलकै, ''देख बण्टा ई सब कुर्सी घोष बाबू के दुआरी पर पहुँचाय के काम तोरों आरो भोरोहो आवी कें तोर्है सबटा कुर्सी यहाँ लानी कें राखना छौ । बस ई समझैं कि आय सें ई काम तोरों होलौ । समझी गेलैं । जो, एक-एक कुर्सी कें घोष बाबू के ऐंगना में रखी आव, तबें घोंर जय्यैं ।'' ई कही कें जेन्हैं जमुआर गुरु जाय लें उठलै कि आरो सिनी गुरुओ उठी कें आपनों-आपनों रस्ता पर बढ़ी गेलै ।

बण्टा पीछू सें सबकें जैतें देखतें रहलै । वैनें दायां हाथ घुमाय कें पीठी पर राखलकै, तें एकबारगिये तिलमिलाय गेलै । हाथ वहीं पर पहुँची गेलै, जैठां छड़ी सें चमड़ी उखड़ी गेलों छेलै । ऊ तुरत्ते बत्ती नाँखी तनी गेलै आरो दर्द खतम होय के इन्तजारी में आँख मुनी लेलकै ।

अंगुरी छुवाय गेला के कारणें जे घाव लहरी उठलों छेलै, ऊ जेन्है कें कम होलै, बण्टा सब कुछ भुलाय कें कुर्सी दिश बढ़लै आरो एकेक कें घोष बाबू के दुआरी पर राखी ऐलै । अनदिना के बात रहतियै तें कोय बात नै छेलै, मजकि इखनी तें ओकरों पीठी में जरियो टा झुकला सें दरद हुएँ लागै । तहियो वैं पाँचो कुर्सी उठाय कें ठीक जग्घा पर राखी ऐलों छेलै आरो फेनू बस्ता उठैनें आपनों घोंर दिश बढ़ी गेलै ।

रस्ता में वैं कै दाफी आँखी के लोर दायां-बायां बाँही सें पोछलें होतै, कहना मुश्किल । मतरकि घोंर पहुँचतैं, ऊ एकदम गुम होय गेलों छेलै । वैनें नुकाय कें कमीज खोललें छेलै आरो जल्दी सें गंजी पिहनी लेलकै कि कहीं माय ओकरों घाव नै देखी लें । नै तें पिटाय के कारण पूछतै । फेनू एक-एक बात खुलतै आरो बाबू कें जबें मालूम होतै कि दुखमोचन साथें वैं की करलें छै, तबें पीठ सहलाय के बदला उल्टे बाबू ओकरा डंगैतै ।

से बण्टा सबटा दरद घोंटी कें पीवी गेलै । साँझ कें ऊ खेलै लें नै

निकललै । डिजना, सिंघवा, भूधरा, दुआरी पर बुलाय लें ऐवो करलै, तें वैं यही कही कें सब दोस्तों कें लौटाय देलकै कि गुरु जी ढेरे टास्क दै देलें छै, सब कें पूरा करना छै, यै लेली आय खेलै लें नै जैतै ।

साथी सिनी कें आचरजे लागलों छेलै, बण्टा के बात सुनी कें । मतरकि कुछ बोललै नै आरो दुआरी पर सें सब लौटी ऐलै । जखनी डिजना, भुदरा आरनी ओकरों लुग गेलों छेलै, तखनी सचमुचे में वैं कुछ सिलोटी पर लिखी रहलों छेलै ।

लिखतियै की, बस हिन्नें-हुन्नें टेढ़ों-मेढ़ों रेखा बनाय रहलों छेलै आरो बनैतें-बनैतें एक ठो हेनों नक्शा बनी उठलों छेलै कि ऊ जेना कोय भूत रहें ।

बण्टा हठाते बड़ी सावधान होय उठलै । वैंने बड़ी ध्यान सें ऊ बनी गेलों नक्शा कें देखलकै आरो कुछ देर तांय देखतें रहलै । फेनू वैं सिलोट कें कभी दायां दिश, कभी बायां दिश घुमाय कें ऊ नक्शा में बड़ों-बड़ों कान, बड़ों-बड़ों आँख बनैलकै । आँख के पिपनी सुइयाँ नाखी खाड़ों-खाड़ों । ऊपरलका ठोरी के ऊपर दोनों दिश दू बोढ़नी रं मूँछ आरो ठोरों सें बाहर निकललों भाला नाँखी वैं दाँत बनैलकै ।

सबसे बाद में ओकरों माथा पर बाल बनैलकै, ठीक होने, जेना कटैया के ढेरे गाछ उगी ऐलों रहें । बाल के दोनों दिश सांढ़ों वाला भालाहै नाँखी निकललों सींग ।

नक्शा बनैलों होलै तें बण्टां ओकरा बड़ी गौर सें देखलकै । देखलकै तें खुश होय उठलै । एकदम खुश । तबें वैं मोटों मोटों अक्षर में नक्शा के नीचू एक-एक अक्षर याद करी एकटा नाम लिखलकै—जमराज जमुआर गुरु जी ।

बनैला-लिखला के बाद जबें वैं गौर सें फेनू नक्शा देखलकै, तें एकदम सें गदगदाय गेलै । जेना ओकरों सबटा दरदे फुर्र पार होय गेलों रहें ।

कुछ देर तांय तें फोटू कें देखत्हैं रहलै, फेनू सिलोट कें जमीन पर राखी कें दोनों मुट्ठी कस्सी लेलकै । दांत-मूँ किच्ची कें दोनों मुट्ठी तब तांय कसतें रहलै, जब तांय मुट्ठी में दरद नै हुऍ लागलै ।

साँझ उतरें लागलों छेलै । बण्टां बाबू के आवाज सुनलकै, तें झट सना सिलोट के राकस कें मेटाय कें कोठरी दिश भागी गेलै आरो सिलोट

बस्ता में नुकाय कें राखी देलकै ।

हौ दिन ऊ खाय-पीवी कें सुतै लें गेलै, तें जल्दिये सुती रहलै । नैं तें माय सें बिना कहानी सुनलें सुतै नै ।

बण्टामाय कें समझै में नै आवी रहलों छेलै कि आखिर बण्टा एत्तें भोरे-भोर इस्कूल कैन्हें जाय लें मार करी रहलों छै । हेनों तें कहियो नै होलै । आखिर पूछिये बैठलै, ''अरे बण्टू, आय एत्तें जल्दी इस्कूल जाय के कैन्हें धड़पड़ी छौ ?''

बण्टाहौ जानै छेलै कि घरों में कोय-न-कोय ई सवाल करतै जरूरे, से वैं पहिलै सें एकरों जवाबो ढूंढी कें राखलें छेलै । से, माय जेना कें पुछलकै, ऊ तेन्है कें बोली पड़लै, ''आय गुरु जीं हमरा पर भार देलें छै । घोष बाबू के यहाँ सें लै कें सबटा कुर्सी इस्कूली में हमरै राखना छै । यहें लें धड़पड़ी छै । गुरु जी आवै सें पहिलैं जे कुर्सी सबटो राखना छै ।''

''ओ, इ बात छै'' बण्टो माय निचिन्त होतें कहलकै, ''तें, बेटा जल्दी-जल्दी खाय ले । रातकों रोटी तें छेवे करौ, नोंन, तेल लै ले, नैं तें अचारी तेल के दू बूंदे डाली दैं । एकदम स्वादिष्ट होय जैतौ । खैलों रहवे तें हम्मूं निश्चिन्त रहवों ।''

अचारी के बात सुनथैं बण्टा के मुँहों सें लार टपकी ऐलै, मतरकि वैं आपनों जीहा पर काबुए राखवों अच्छा समझलकै । ओकरा खूब याद छै कि यहें अचारी के चक्कर में ऊ चक्कर खाय चुकलों छै ।

बात ई होलों छेलै कि ओकरी माय बड़ों-बड़ों टिकोला के फाँक करी कुच्चा बनैलें छेलै । रोज तें आपने सामना में कुच्चा धूपों में सूखै लें दै, मतरकि हौ दिन बण्टामाय कें जरूरी कामों सें पड़ोसी कन जाना छेलै । रिश्ता में पितियो लागै, केना नै जैतियै ।

कुच्चा वाला बोय्यम धूपों में राखी देलकै, आरो बण्टा कें बोललै कि देखत्हैं रहियैं—बकरी-चकरी मूँ नै दै दौ ।

मतरकि बच्चा-बुतरु पर की भरोसोॅ, से बण्टामायं बण्टा के साथें साथ बिलटाहौ कें कही देलकै, ''बिलटू, जरा कुच्चा देखतें रहियैं—बकरी-चकरी मूँ नै दै दें । हम्में घण्टा-दू घण्टा में लौटवौ ।'' आरो ई कही कें ऊ ऐंगन सें बाहर निकली ऐलै ।

ऐंगन के बीचोॅ में कुच्चा वाला बोय्यम, तेल सें चुपचुप चमकी रहलोॅ छेलै, आरो ओतन्हैं ओकरा देखी कें बण्टा के आँखो चमकी रहलोॅ छेलै । जत्तें बोय्यम भरी तेल भरलोॅ छेले, ओत्ते हिन्नें बण्टा के मुँह भरी लार ।

आखिर वैं कत्तें देर टुकटुक कुच्चा कें देखतें रहैतियै । मन में ऐलै कि एकटा फाँक निकाली कें खय्ये लेवै, तें माय कें की पता चलतै । से वैं बोय्यम के ढक्कन उठैलकै आरो एकटा फाँक मुँहोॅ में टप सना दै देलकै, जना कोय बगुलां पोठिया मछली धरी कें चोंच के भीतर करी लेलें रहें ।

एकरोॅ बाद एक फाँक निकालियो लेलकै कि छहारी में बैठी कें आनन्द सें खैलोॅ जैतै । फाँक लै कें कपड़ा सें होनै कें बोय्यम रोॅ मूँ बांधलकै आरो बरण्डा पर बिछैलोॅ खटिया पर आवी कें बैठी रहलै ।

बण्टा कें की मालूम छेलै कि ओकरोॅ करतूत सब बिलटां देखी रहलोॅ छै । आरो कोय बात होतियै तें एकरोॅ शिकायत वैं मौसी सें कही कें बण्टा कें मारो खिलैतियै, मतरकि यहाँ तें कुच्चा खाय के बात रहै । बिलटाहौ के मुँहौ में कुच्चा देखी कें लार आपन्हैं आवी रहलोॅ छेलै ।

आबें चूँकि बण्टा ओकरोॅ शुरुआत करी चुकलोॅ छेलै, यै लेली ओकरा कांही सें कोय खतरो नै बुझाय छेलै । ऊ तमतमैलोॅ बण्टा लुग ऐलै आरो कहलकै, ''यहें कुच्चा के रखवाली करी रहलोॅ छैं । खैबे तोहें, आरो ढेंस लागतै हमरा पर । मौसी ई मानतै, कि हम्में नै खैलें छियै ? यहें सोचतै कि सिखा-बुद्धि करी कें दोनों खैलें होतै । आबें जबें तोरोॅ कारण हमरा पर शक करवे करतै, ढेंस लागबे करतै, तें कैन्हें नी हम्मू कुच्चा खैय्ये लीयै । आरो हम्में देखलें छियौ, तोहें दू-दू कुच्चा खैलें छैं । तोहें दू कुच्चा, तें तोरोॅ सें कोॅन मानै में हम्में कम । एक महीना के बड़ोॅ छियौ, से हम्में चार कुच्चा खैबौ ।'' एतना कही बिलटा दनदनैले बोय्यम दिश गेलै; बोय्यम के मुँहोॅ पर बान्हलोॅ कपड़ा कें खोललकै आरो गिनी कें सीधे चार कुच्चा निकाललकै । बोय्यम के मूँ बान्हलकै आरो बण्टा लुग आवी कें एक-एक करी के चटकारा दै-दै खावें लागलै ।

बण्टा के मुँहों के कुच्चा खतम होय चुकलों छेलै । अब तांय जोहो जीहा पर थोड़ों खटरस बचलों छेलै, वहू आलोपित होय गेलै । मन में गोस्सो बढ़ी गेलै । सोची रहलों छेलै, ''बिलटा कत्तो आपनों मौसेरों-ऊसेरों भाय रहें, घोंर तें हमरे छेकै आरो हमरे कुच्चा पर एकरों हेनों अधिकार । हम्में दू ठो खैबै, तें यैं चार ठो खैतै ।''

बण्टा गोस्सा सें तमतमाय उठलै आरो बिना कुछ कहले सीधे बोय्यम दिश दड़बनिया दै देलकै । मुन्हन खोललकै आरो दायाँ हाथों सें एक बोकटों कुच्चा निकाली कें बायां हाथों सें जेना-तेना घुमाय कें मुन्हन बान्ही देलकै ।

बरण्डा पर लौटलै, आरो बिलटा कें देखाय-देखाय काटी कें खाबें लागलै । चाटी-चाटी कें खाय के सवाले नै छेलै, कैन्हें कि ओकरों हाथों में कुच्चा के आठ-दस फाँक सें कम नै छेलै । तेल सें चपचपैलों होला के कारण ऊ गरय मछली रं मुट्ठी सें फिसली रहलों छेलै, जेकरा वैं बायां हाथ सें लैकें मुँहों में टप सें दै दै ।

बिलटा के मोंन तें होलै कि ओकरों हाथों सें सबटा छीनी कें एक्के साथ आपनों मूँ में राखी दै, मतरकि एकरों जरूरते की छेलै, जबें कि सामना में कुच्चा के खजाना राखलों छेलै । वैनें बण्टा सें कहलकै, ''एत्तें-एत्तें कुच्चा लेलैं, तें कोय बात नै, मुन्हन तें ठीक सें बान्ही देतियैं । ऊ की हम्में बान्हवै । अच्छा चलें, बान्ही दै छियौ ।''

आरो बान्हैं सें पहिलें बिलटौ एक बोकटों कुच्चा निकाली कें कुछ बायां हाथों में राखलकै, कुछ मुँहों में, आरो दोनों हाथों के सहारा सें बोय्यम पर कस्सी कें मुन्हन बांधी देलकै; हेनों कि बण्टा खोलें नै पारें ।

मतरकि आबें बण्टा कें वहाँ पहुँचै के जरूरते नै छेलै । अघाय गेलों छेलै । आबें तें ऊ दोनों हाथ कें धरती पर रगड़ी-रगड़ी तेल-हल्दी कें मेटाय के कोशिश करी रहलों छेलै कि माय कें पतो नै लागें ।

बिलटौं आपनों हाथ-मूँ कें एक ठो फेकलों कागज सें साफ करी, फेनू दोनों हाथों कें धुरदौ सें रगड़ी लेलकै । भरपेट भोजें बण्टा और बिलटा के दोस्ती कें एकदम्म घन्नों करी देलें छेलै । दोनों भीतर सें गनगनाय गेलै । हेनों भोज खाय के खुशी में दोनों में सें केकरौ ख्याले नै रहलै कि बोय्यम के कुच्चा आधों सें अधिक ओराय चुकलों छै ।

हौ तें बण्टामाय कें चिन्ता छेलै कि कहीं ऊ दोनों खेलै-कूदै में नै लागी गेलों रहें आरो हुन्नें बकरी बोय्यम लोढ़काय कें कुच्चा तितिर-बितिर करी देलें रहें । से ऊ पड़ोसी के यहाँ सें चल्लै तें सीधे घोंर दिश, एकदम धतर-पतर ।

घरों में घुसतैं ओकरा आँख बोय्यम पर पड़लै, तें माथों सन्न रही गेलै । ओकरा ई देखी कें आचरज होलै कि बोय्यम पर मुन्हन तें ठीके-ठाक बन्धलों छै, मतरकि कुच्चा एकदम अधियाय गेलों छै ।

बण्टामाय कें समझै में कुछुवे देर नै लागलै । ऊ सनसनैलें बरण्डा पर ऐलै आरो बण्टा के दोनो हाथ लैकें सूंघलकै । बण्टा के दोनों हाथ एकदम गमगम करी रहलों छेलै । धुरदा पर रगड़ला सें की होतै, अचार के काहीं गन्ध जाय छै । हाथों सें ज्यादा कहीं मूँ महकी रहलों छेलै ।

हाथों के हल्दी-तेल तें केन्हों कें छूटी गेलों छेलै, मतरकि ठोरों पर तेल आरो हल्दी अलगे सें चमकी रहलों छेलै ।

बण्टौ कें समझै में देर नै लागलै कि आय ओकरों मैय्ये हाथें नै, बाबुओ हाथें निनौन छै । माय बाबू कें कहतै आरो फेनू ओकरों कुच्चा के मजा आखिर में खट्टा होय कें रहतै ।

माय के तमतमैलों मूँ देखी कें बण्टा बिना मूँ खोलले बिलटा दिश कुल्हों उठैलकै आरो आँखी सें बार-बार इशारा करी बतैलकै, कि एकरा में ऊ असकल्ले नै, बिलटौ शामिल छै ।

आबें यै में के कत्तें शरीक छै, है तें बण्टामाय कें पता लगैवों कठिन छेलै । पतो लगाय कें की करतियै—आखिर बहिनबेटा छेलै बिलटा, ओकरा तें नहिये मारें सकै छेलै । की पता बिलटै के सनकैला पर बण्टाहौं कुच्चा खाय लेलें रहै । बहुत सब अन्देशी कें बण्टामाय नें तें बण्टा कें मारलकै, नै बिलटाहै कें कुछ कहलकै । बस बोय्यम उठैलकै आरो कोठरी के सबसें उपरलका ताखा पर राखी देलकै ।

बण्टा हौ दिन कें भूलें नै पारै छै । जबें भी अचार लुग पहुँचै छै कि ओकरा कुच्चा वाला बात याद आवी जाय छै ।

''अचार के तेल निकालें पारवैं कि बोय्यमे गिराय देवैं। ठहर, हम्मी निकाली दै छियौ, हुएँ सकै छै, तोहें सब्भे तेले नै होहाय कें राखी दैं ।'' बण्टा माय नें पीछू सें कहलें छेलै आरो आपन्हैं सें तेल निकाली कें रोटी में मली

देलें छेलै, जेकरा बण्टा एक अखबारी में लपेटी कें बस्ता में राखी लेलकै आरो ई कहतें जल्दी-जल्दी निकली गेलै कि कुर्सी सड़ियैला के बाद वैं वाहीं बैठी कें खाय लेतै ।

घरों सें चललै, तें सीधे सरपट दौड़लें इस्कूले जाय कें ऊ रुकलै । बस्ता काँखी पेटों में दबाय के कोय सवाले नै छेलै । दौड़ै में गिरौ पारें, से वैं बस्ता कें छाती में दोनों हाथों सें कस्सी कें दबाय लेलें छेलै ।

इस्कूल पहुँचलै तें वहाँ एकदम सुन-सपाट छेलै । एकदम सुनाफड़ में इस्कूलो तें छलै । जब तांय इस्कूल के बच्चा आरो गुरु जी आवी नै जाय, हुन्नें एक्को आदमी नै दिखावै । हों, पीछू दिश एक बड़ों रं पोखर जरूरे छेलै, जैमें भैंस सिनी हेलतें रहें । भैंसी कें हेलतें देखी कें बण्टा के मोंन गदगद होय जाय । इस्कूल में छुट्टी होला के बाद ऊ कुछ-न-कुछ देर लेली पोखरी दिश जरूरे चल्लों आवै । पानी में हेलतें भैंसी कें देखै, तें ओकरों मोंन करै कि ऊ सीधे ओकरों पीठी पर कूदी जाय । शायत कूदियो जैतियै, मतरकि पोखर तें तीन मरद गड्ढा में छेलै । पता नैं भैंस कोन दिशा सें आरो केना घुसी जाय छै । वैं सोचै आरो घुरी आवै ।

आय तें इस्कूल ऊ बहुत पहिलें पहुँची गेलों छेलै । ऊ पोखरियो दिश जाबें पारै छेलै, मतरकि ओकरों दिमागो में तें तूफान उठी रहलों छेलै, "बाप रे बाप, की रं मारलें छें मरखन्ना जमराज मास्टर नें । खेलरी उदारी देलें छें। ऊ तें माय नें चूतड़ परकों घाव नहिये देखलें छै । देखतियै तें की इस्कूल आवें देतियै ।"

बण्टा रों मनों में तूफान उठी रहलों छेलै । वैनें आपनों बस्ता इस्कूल के दीवारी सें सटाय कें राखलकै आरो घोष बाबू के दुआरी पर पहुँची गेलै ।

काठों के कुर्सी । बच्चा लें भारी बोझों सें कम नै छेलै । मतरकि बण्टा कें ऊ दिन कुर्सी सिनी होनों भारी नै बुझैलै । ऊ कुर्सी के पीछू उल्टा

दिशा सें खाड़ों हुएँ आरो पीठी पर कुर्सी कें डाली इस्कूल पहुँचाय दै । कुर्सी उठैला पर ऊ एत्तें झुकी जाय कि कुर्सी ससरै के सवाले नै छेलै ।

एक, दू, तीन, चार, पाँच । बण्टा पाँचो कुर्सी उठाय कें इस्कूली के बरण्डा पर राखी ऐलै आरो हिन्नें-हुन्नें देखी कें आहिस्ता-आहिस्ता पोखरी दिश चल्लों गेलै । एकरा एकरों सुधे नै छेलै कि रोटी के गंध पावी कें कोय कौआ, चिल्ला, कुत्ता ओकरों बस्ता लै कें उड़ें पारें ।

पोखरी दिश सें लौटलै, तें आमों के पत्ता में कुछ नुकैलें ऐलै आरो एकेक कुर्सी पर हिन्नें-हुन्नें पत्ता कें घुमावें लागलै, जेना—सिलोटी पर खल्ली सें कुछ लिखतें रहें ।

सब्भे कुर्सी पर कुछ-कुछ लिखला के बाद वैं आमों के पत्ता इस्कूली के पिछुवाड़ी के झाड़ी में रिंगाय कें फेंकी देलकै । ऊ पत्ता कोय ढेपो थोड़े छेलै कि रिंगाय कें फेंकला सें दूर जाय कें गिरतियै । दू हाथ आगू उड़लै आरो फेनू नीचें गिरें लागलै । ऊ तें खैर तखनिये जोरों के हवा उठलै आरो सब पत्ता सिनी उड़ियाय कें पोखरी में जाय गिरलै ।

बण्टा कें निश्चिन्ती भेलै । लौटी कें ऐलै आरो बस्ता उठाय कें पिण्डा सें नीचें उतरी गेलै । लड़का सिनी के ऐवों शुरु होय गेलों छेलै । मतलब कि गुरुओ जी कें आवै में आबें देरी नै छेलै ।

वैं सोचलकै—कुच्छू देर आरो रुकी जाँव, जब तांय गुरु जी आरनी नै आवी जाय छै, फेनू नै जानौं की सोचलकै कि ऊ चुपचाप वैठां सें खिसकी गेलै—आपनों सब बस्ता-बोरिया समेटनैं ।

इस्कूली में ई नियम छेलै कि जब तांय प्रार्थना नै खतम होय जाय, तब तांय गुरुजी आरो चेला-चटिया बराण्डा के बाहरे रहै । बराण्डा के बाहरे प्रार्थना होय आरो यही लें सब लड़का गुरु जी सिनी के आवै तांय बाहरे में धुर-फिर करतें रहै ।

जबें सब गुरु जी आवी गेलै, तें प्रार्थना शुरु होलै । एक दिश गुरुजी सिनी आरो दोसरों दिश सब लड़का । लड़का सिनी रेघाय-रेघाय गावी रहलों छेलै—

ईश्वर अल्लाह तोरे नाम
सबकें सन्मति दौ भगवान ।

आरो जमुआर गुरु जी सब के बीच खोजी रहलों छेलै बन्टा कें ।

आखिर ऊ दिखाय कैन्हें नी रहलों छै ! आखिर गेलै कहाँ ! कुर्सी सब आनले छै; हुएँ सकै छै फेनू खाय लें घोंर चल्लों गेलों होतै । खाय कें आवी जैतै । सोची कें जमुआर गुरु जी निश्चिन्त होय गेलै ।

हुन्नें प्रार्थना खत्म होलै तें लड़का सिनी आपनों-आपनों जग्घा पर बैठै लें दौड़ी पड़लै । गुरुओ आरनी आपनों-आपनों कुर्सी पर आराम सें बैठलै ।

मजकि आय आराम वाला बाते कहाँ छेलै। कुछ देर बादे देह-हाथ चुनचुनाबें लागलै । एक ठो के चुनचुनैतियै तें कोय दुसरों बात होतियै । यहाँ तें सब गुरु जी के होने हाल छेलै ।

पहिलें तें केहुनिया नोचैबों शुरु होलै, फेनू पीठ आरो चूतड़ साथे-साथ । सब गुरु जी परेशान—पहिलें पीठ नोचें कि पहिलें जांघ । अजीब दृश्य होय गेलों छेलै—कोय गुरु जी जांघ खोखरी रहलों छेलै, तें कोय दोनों हाथों के पीछू करी पीठ, आरो कोय तें कोहनिये भमोरै में लागलों छेलै ।

ई हालत देखी कें लड़का सिनी डरों सें थरथराय रहलों छेलै । जानें की होय गेलै गुरु जी सिनी कें । बात कुछुओ हुएँ, मार तें आखिर ओकरै सिनी के पड़तै ।

क्लास में सब लड़का-बुतरु, जेठ के ताव में हक-हक करतें कबूतर, कौआ नाँखी चुप छेलै आरो गुरुजी आरनी सावन-भादो में कौआ-कबूतर नाँखी आपनों देह-हाथ खुजलावै में बेहाल ।

बण्टा मनेमन अनुमान लगैलकै—हुरकुस्सी के असर चढ़त्हैं सब गुरु जी ओकरों घोंर दिश दौड़तै आरो ओकरा घरों सें खीची कें धुनाटतै । से वैं इस्कूल खत्म होला के बादे घोंर लौटवों भला समझलकै ।

वहें होलै । बलुक इस्कूल खत्म होला के आधों घण्टा बादे ऊ घोंर दिश चललै । एकदम सावधानी पूर्वक । कि ''कहीं कोय गुरुजी रास्ता में नै मिली जाय । पता तें लगिये गेलों होतै कि देह-हाथ नोचवाय के की

कारण छेकै आरो केकरों ई करतूत होतै । हमरा मार पड़लों ढेरे दिन थोड़े होलों छै । मिनिट में सब पता लागी गेलों होतै । वहू में कि हम्में क्लासो सें गायब छेलियै, तें शंका केकरौ आन पर जाय के कोय सवाले नै उठै छै ।''

यहें सोचतें-विचारतें ऊ आहिस्ता-आहिस्ता आपनों घोंर दिश बढ़ी रहलों छेलै कि हठाते ओकरों गोड़ घरों सें दू बाँस पीछुवे थमी गेलै । एकबारगिये । देखलकै कि सब मास्टर तें ओकरे घरों के बाहर खड़ा छै । साथे-साथे चौधरी काकाहौ दू-चार आदमी साथें खड़ा छै ।

बण्टा के देहों में जेना करेण्ट लागी गेलों रहें आरो गोड़ों में जना पंख । ऊ सीधे उल्टे पाँव हौले-हौले बसंबिट्टी दिश ऐलै आरो पैंटों में बस्ता कें आधों खोसी कें, लगै उड़ौन सबौर दिश दै देलकै । बंसबिट्टी पार करी कें लीची बगान, फेनू आम बगीचा, आरो वहीं सें लोदीपुर वाला एकपैरिया धरी कें सबौर दिश एक्के साँस भागलों चल्लों गेलै, जब तांय ऊ सबौर नै पहुँची गेलै ।

बण्टा रों गायब होय जाय के खबर सौंसें मुहल्ला में फैली गेलै । चौधरी काका तें तखनिये गुरु सिनी कें कहीं सुनैलें छेलै, ''देह-हाथ की नोचै छों गुरु जी, बण्टा नै मिललों तें मुहल्ला वालां ठिक्के देह-हाथ नोची देतौं । की सोचलौ, गरीबों के बेटा छेकै, जूट के खोंर पतार रं डंगाय दियै । की वहा रही गेलै जमाना ? वहें रं मारै के छेकै लड़का कें ? की समझै छौ, बण्टा माय-बाप कें नै तें संगियो साथी नै जानलकै । हमरा सब मालूम होय गेलों छै कि जखनी बण्टा खलिहान में धान नाँखी पिटाय रहलों छेलै, तखनी आरो गुरु जी सिनी तमाशा देखी रहलों छेलै, जेना भालू के नाच होतें रहें । बण्टा कें खाली नै नी मिलै लें दौ । तबें देखियौ कोर्ट-कचहरी के तमाशा ।''

घरों के लोग आरो मुहल्लो वालां सोचलें छेलै कि गोधूली बेला होतें न होतें बण्टा जरूरे घोंर लौटी ऐतै, मतरकि गोधूली बेला के पूछें, रात के दोसरों पहर बीतें लागलै, मतरकि बण्टा के काहूं पता नै छेलै ।

आखिर जैतै कहाँ ! इस्कूली के पोखरी में चोरबत्ती घुमाय-घुमाय कें देखलों गेलै । बंसबिट्टियो में चार सेल के चोरबत्ती के रोशनी घुमाय-घुमाय कें फेंकलों गेलों, मतरकि बण्टा की, कोय्यो किसिम के संदेहो नजर नै ऐलै । जे दू-चार सियार हुआ-हुआ करै के ताकों में बैठलों छेलै, चोरबत्ती के रोशनी देखी, वहू नै जानौ कोंन बिलों में जाय कें सुटियाय गेलै । जरियो टा कन्नो खरखुर होलै, तें मुहल्ला वाला हुन्नैं घुसी-घुसी कें खोजलकै—शायत डरों सें सुटियाय कें बैठलों रहें बण्टा, मतर सब प्रयास बेरथ ।

बण्टा के जे-जे आपनों दोस्त छेलै, ऊ तें ओकरा खोजै में परेशान छेवे करलै, मतरकि सबसें ज्यादा हौ सिनी खोजै में आरो परेशान छेलै, जे सिनी कें बण्टा सें लड़ाय-झगड़ा होत्हैं रहै । ऊ सबकें मनों में पुलिस, दारोगा सें बढ़ी कें चौधरी काका रों डोंर छेलै । सब पुरानों झगड़ा के कसर यहें में निकलै वाला छै ।

ई सोची कें मनमुटाव राखै वाला दोस्त तें आरो खोजै में अस्त-व्यस्त छेलै । चार-चार छौड़ा के जेरों बनाय कें रातो-रात बरहपुरा, लालूचक लोदीपुर, इशाकचक, मुंदीचक, खोजी चुकलों छेलै । की पता बरहपुरा के कब्रिस्तान में छुपी कें बैठलों रहें, आकि फेनू मुंदीचक के गढ़ैये में ।

जेरों कें मालूम छेलै कि मुन्दीचक के गढ़ैया में बण्टा कें सबसें ज्यादा मोंन लागै छै । गढ़ैया में जमलों पानी आरो पानी के ऊपर बाँस भरी बिछलों जलकुम्भी । बण्टा कें आरो कोय काम नै रहें, तें साथी सिनी साथें कुम्भी कें खींची-खींची नगीच लानै, फेरू वै पर असकल्लों बैठी कें हिन्नें-हुन्नें डोलतें रहै, जेना भैंसिया पर आराम से बैठलों ओकरा पानी में हंकैतें रहें । है बस ओकरों साथिये सिनी कें मालूम छेलै कि वही गढ़ैया में एक खोहो बनलों छै । खोह की छेलै, लोगें माँटी खोदतें-खोदतें एत्तें भीतर तांय खोदी देलें छेलै कि सुरंग नाँखी लागै । बण्टा आरनी वहा सुरंग में बायां दिश आरो एक खोह खानी देलें छेले, जेकरा में दू आदमी आसानी सें छिपी कें बैठें पारें । जखनी ई गढ़ैया में बण्टा आनन्द मनावै आरो माय-बाबू आकि हेने आदमी कें ऐतें देखै, जे घरों में शिकायत करें, तखनी ऊ वहें सुरंग के सुरंग में घुसी कें बैठी रहै ।

बण्टा कें खोजै में बदहवास ओकरों दोस्त सिनी वहू गढ़ैया के सुरंग तक गेलों छेलै । राते में चोरबत्ती लेनें । सुरंग में घुसी कें चोरका सुरंगो तक

रोशनी मारी कें देखलकै । चोरबत्ती के रोशनी पड़तैं सुरंग में बैठलों कुत्ता भूंकतें एत्है तेजी सें उछली कें भागलै कि डरों सें चारो साथी वही पर एक दुसरा के ऊपर लुढ़की कें चिचयावें लागलै । चोरबत्ती छिटकी कें एक दिश फेंकाय गेलै ।

हौ तें चोरबत्ती के बटन हेनों दबाय देलों गेलों छेलै कि ऊ जरतैं रही गेलै, नै तें अन्हारों में सबके प्राणे निकली जैतियै । एक नें दौड़ी कें चोरबत्ती लेलकै आरो बारले-बारले चारो घोंर लौटी ऐलै । एकरों बाद ऊ सब फेनू खोजै लें नै निकललै । ई सोची कें—आबें जे होतै सें होतै ।

संझवाती बेरा होय गेलों छेलै, जखनी बण्टा भिट्ठी पहुँचलै । दौड़तें-दौड़तें थक्की जाय, तें कोय गाछी के नीचू थिराय लै । हेन्है कें पहुँचलें छेलै ऊ आपनों मौसी के गाँव, भिट्ठी ।

ठीक गाँव के सिमानै पर मिली गेलों छेलै बिलटा । बण्टा कें देखथैं ओकरों खुशी के ठिकानों नै रहलै, होनै कें बण्टौ के । मतरकि बिलटा के मनों में हठाते शंका उठलै, "है वक्ती ई असकल्ले ! इस्कूल बस्ता सब कुछ लेनैं ! जरूर कांही कुछ बात छै ।" आरो ई शंका उठत्हैं वैं पूछियो लेलकै, "एक बात तों बताव बण्टा, तोहे काँहीं घरों सें भागी कें तें नै ऐलों छैं ?"

"हों, भागी कें ही ऐलों छियै ।" आरो बण्टा एकेक बात सुनाय देलकै, खड़े खड़ । पीठी के घाव तक दिखाय देलकै—कमीज आरो गंजी कें उपर उठाय कें ।

बिलटां देखलकै—आकरों पीठी पर होने छड़ी के दाग उभरी गेलों छेलै, जेना गिलहरी के पीठी पर मोटों-मोटों रेखा । बिलटा के मुँहों सें आह निकली गेलै ।

मतरकि बण्टा के चेहरा पर चमक छेलै । ऊ बोललों जाय रहलों छेलै, "आय बुझैलों होतै सब गुरु सिनी कें, सबके कुर्सी पर हुरकुस्सी रगड़ी देलें छेलियै । इस्कूल सें घोंर गेलियै, तें सब गुरु जी वहाँ हाजिर छेलै । बस की छेलै, हम्में यहाँ लें लगै उड़ोन दै देलियै । ई तें जानवे करै छेलियै कि यहें रास्ता भिट्टी जाय छै । जहाँ-जहाँ रुकियै, लोगों सें रस्ता पूछी लियै । कोय

कुछ पूछै, तें मौसा के नाम बताय दियै । आरो यहाँ आवी गेलियै ।''

''ठीक करलैं तोहें । आबें तोरा कुछ नै बोलना छौ। सब बात हम्मीं माय कें बतैवै । आबें तोरा आपनों घरो नै जाना छै । चल घोंर चल ।''

राती जखनी खाट पर सब बैठलै, तखनी बिलटा के माय नें बण्टा के पीठ उघारी कें बिलटा के बाबू कें देखैतें कहलें छेलै, ''देखौ, राकसें की रं फूल किसिम बच्चा कें खुचलें छै ।''

बिलटा-बाबूं सुखलों-सुखलों लहू आरो पपड़यैलों चमड़ी कें देखलें छेलै आरो बड़ी गंभीर होतें कहलकै, ''बंटू आबें यहाँ सें नै जैतै । यांही पढ़तै । कल्हे इस्कूली में नाम लिखाय दै छियै । तोहें भोरेरियैं किसना के हाथों सें खबर भिजवाय दियौ कि बंटू भिट्टी में छै । खबर तें अखनिये भिजवाय देतियै, मतरकि इखनी कोय आदमी बगीचे-बगीचा जाय वाला नै मिलतै ।''

मौसा के बात सुनी कें बण्टा के मोंन तें एकदम हलहलाय उठलै, बस हेने मोंन करें लागलै कि वही ठां उछलें-कूदें लागै । मतरकि सबटा खुशी दबैनें हेने बैठलों रहलै, जेना—सबसें चोराय कें मुँहों में रसगुल्ला दबैनें, होलै-हौले ओकरों रस तालू आरो जीहा सें गारतें रहें ।

खैला-पीला के बाद बण्टा आरो बिलटां खटिया कें ऐंगना में पारलकै । दोनों छिनमान जामें बच्चा रं लागै । जन्म सें बस एक महिना के अन्तरे सें बड़ों-छोटों छेलै ।

खटियां पर जेन्हैं मोटों गेंदरा दै कें वै पर चादर बिछैलों गेलै, दोनों बढ़िया सें गोड़-हाथ धोय कें, पोछी-पाछी कें राजकुमारे रं लोघड़ी गेलै । दोनों लें अलग-अलग तकिया । बण्टा कें तें घरों के ख्याले नै रहलै ।

''सुनों बिलटामाय, हम्में जरा हटिया सें घूमी कें आवै छियौं, जों टेलीफोन बूथ खुल्ला होतै, तें केन्हों कें भीखनपुर खबर करवाय के कोशिश करै छियौं । वहू लगतै तबें नी । सारों, हिन्नें से पचास बार टेलीफोन करों, तें हुन्नें से बोलतौं—सभी लाइन व्यस्त हैं । जेना लागै छै टेलीफान नै रहें, बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली के सड़क रहें—लाइन व्यस्त है ।'' बिलटाबाबू चिढ़तें होलें बोललै ''खैर देखै छियौं, तोहें डढ़िया लगाय लें ।''

''पता नै कखनी ऐतै आबें हुनी'' बिलटा मायं मने-मन सोचलकै आरो खटिया के गोरपारी दिश दोनों के पैर उठाय कें बैठी गेलै । खटिया पर

बैठै भर के देर छेलै कि रोजके नाँखी बिलटा कहलकै, ''माय कोय खिस्सा कहैं नी ।''

खिस्सा के बात सुनथैं बण्टा जेहोॅ ओघरैलोॅ छेलै, उठी कें बैठी रहलै ।

''नै बेटा, उठै के काये जरूरत नै छै, लेटले-लेटले सुनें । एक ठो खिस्सा सुनाय छियौ—छौ भाय राजकुमार आरो एक भाय बिज्जी के ।'' रूपसावाली दोनों के गोड़ कें बारी-बारी सें हौले-हौले मलतो जाय आरो खिस्सा कहतें जाय रहलोॅ छेलै, ''एक ठो राजा छलै । राजा कें अपार सम्पत्ति छेलै ।''

''हमरोॅ चौधरियो काका सें भी ज्यादा ?'' बण्टा बीचोॅ में जिज्ञासावश पूछलकै ।

''तोरोॅ काकौ सें ज्यादा । राजा रं केकरा धोॅन हुऍ पारें ! तें, ऊ राजा कें सात रानी छेलै । मतरकि एक्को टा सन्तान नै । से राजा बड़ी दुखी रहै । घरे में उदास बैठलोॅ रहै ।''

''तें हुनी खेलै-ऊलै लें कैन्हें नी चल्लोॅ जाय छेलै ।'' बण्टा फेनू बीचे में टोकलकै ।

''हों जाय छेलै नी, शिकार खेलै लें । तखनी राजा आपनोॅ छोटकी रानियो कें साथ लै लै । राजा छोटकी रानी कें बहुत मानै छेलै ।''

''एत्तें ?'' बण्टा सुतले-सुतले दोनों हाथ दोनों दिश फैलैतें पूछलकै ।

ई देखी रूपसावाली कें हँसी आवी गेलै आरो वहूं दोनों हाथ फैलाय कें कहलकै, ''हों एत्तें ।''

''अभी खिस्सा शुरुवे होलोॅ छेलै आरो बण्टा तीन दाफी टोकी चुकलोॅ छेलै । तबें तें ई खिस्सा भोरो तांय पूरा नै हुऍ पारतै ।'' ई सोची कें बिलटां हौले सें बण्टा कें चुट्टी काटलें छेलै । तें, बण्टौ समझी गेलै कि खिस्सा सुनै वक्ती ओकरा टोका-टोकी नै करना छै । मतरकि ऊ सुतलोॅ नै रहलै, उठी कें बैठी रहलै । यैलें कि कांही सुनतें-सुनतें नीन नै आवी जाय ।

रुपसावालीं खिस्सा आगू बढ़ाय देलें छेलै, ''एक दाफी राजा असकल्ले जंगल दिश शिकार खेलै लें निकली गेलै, नै छोटकी रानी लेलकै, नै कोय सेनापति, नै कोय सिपाहिये ।

''ऊ दिन राजा आरो निराश छेलै । सोचलो जाय कि तभिये जंगल में हुनका एक साधु दिखाय पड़लै । पता नै, राजा के मनोॅ में की होलै कि हुनी साधु नगीच पहुँची गेलै । घोड़ा पीछुवे के एक गाछी सें बांधी देलकै ।

''जबेॅ राजा साधू के नगीच पहुँचलै तेॅ साधूं राजा के मूँ उदास देखी कहलकै, 'तोहें देखल्हैं सें राजा बुझाय छौ, मतरकि तोरोॅ चेहरा पर ई दुख कैन्हें छौं ?'

''राजां साधु के गोड़ छुवी केॅ आपनोॅ सबटा दुख सुनाय देलकै । राजा रोॅ दुख सें द्रवित साधुं हुनका एक चांदी के छड़ी देलकै, आरो कहलकै, 'पूरब दिश गेला पर कोस भरी के दूरी पर एक गाछ छै, जे पचास गाछ सें घिरलोॅ छै । सबटा गाछ आमे केरोॅ छेकै, आरो सब्भे में आम फरै छै । जे गाछ रोॅ आम छोटोॅ-छोटोॅ बुझावौं, बस वही गाछोॅ सें तोहैं सात आम ई छड़ी सें तोड़ी लियोॅ । याद राखियोॅ, कभियो सात सें ज्यादा तोड़ै के लोभ नै करियोॅ, नै तेॅ तोड़लोॅ सातो आम सहित छड़ियो गाछी सें सट्टी जैतौं ।'

''साधू सें छड़ी पावी केॅ राजा के खुशी केॅ तेॅ कोय सीमाहै नै रही गेलै । हुनका सें आशीर्वाद आरो छड़ी लै केॅ राजा पूरब दिस चली देलकै । कोस भरी बढ़ला पर ठिक्के हुनी पचास आम गाछोॅ के बीच एक ठो छोटोॅ आम वाला गाछ देखलकै । राजां छड़ी सें सात आम तोड़लकै आरो लौटेॅ लागलै । कि तखनिये हुनका मनोॅ में ई बात उठलै कि कैन्हें नी छोटकी रानी वास्तें एक ठो आरो आम तोड़ी लौं । ई सोची केॅ राजा आठमोॅ आम तोड़ी लेलकै । तोड़ै के देर भर छेलै कि आठो आम आरो ऊ छड़ी गाछी सें जाय केॅ सट्टी रहलै ।''

''जा ।'' बण्टा रोॅ मुँहोॅ सें हठाते निकललै ।

''ई देखी राजा पछतैतें-उछतैतें फेनू साधु लुग गेलै आरो लोभ के कहानी सुनैलकै । यहू कहैलकै कि आबेॅ फेनू लोभ नै करतै । राजा के बात सुनी केॅ साधु फेनू दोसरोॅ छड़ी देलकै । छड़ी लैकेॅ राजा फेनू वहेॅ पूरब दिश बढ़ी गेलै । मतरकि अबकी कोय लोभ नै करलकै । बस सात ठो आम तोड़लकै आरो राजमहल दिश बढ़ी गेलै । राजमहल पहुँची केॅ सातो रानी केॅ एक-एक आम पूजा-पाठ करी केॅ खाय लै लेॅ कहलकै ।

''बड़की छवो रानी तेॅ जल्दी-जल्दी पूजा-पाठ करी आम खाय लेलकै, मतरकि छोटकी रानी आम केॅ कोठरी के ताखा पर राखी केॅ दासी

सिनी साथें गंगा नहाय लें चल्लों गेलै । सोचलकै, हेनों फल गंगा नहैला के बादे ग्रहण करना चाही । हुन्नें छोटकी रानी गंगा नहाय लें गेलै आरो हिन्नें कन्हौं सें एक ठो बिज्जी ऐलै आरो ऊ आम कें चाटी कें छोड़ी देलकै ।''

''तबें तें आम में जहर भरी गेलों होतै ।'' बण्टा कें चुप नै बैठलों गेलै, से जानै के ख्याल सें पूछलकै ।

''जहर तें नै भरलै, मतरकि चाटला के असर ई होलै कि आरो सब रानी कें तें राजकुमार होलै, मतरकि छोटकी रानी कें बिज्जी । राजा तें ई खबर पैत्हैं उदास होय गेलै, मतर छोटकी रानी दुखित होय्यो कें दुखित नै होलै—ई सोची कें कि जबें विधि कें यहें मोंन छै, तें यहें सही । हुन्नें राजकुमार सिनी धीरें-धीरें बड़ों हुएँ लागलै । जबें छवारिक रं सबठो होय गेलै तें सब्भैं राजा कें कहलकै कि आबें ऊ सिनी व्यापार करै लें परदेश जाय लें चाहै छै । राजा ई सुनी कें बड्डी खुश होलै आरो हुनी इजाजत दै देलकै । जबें ई बात बिज्जी कें मालूम होलै, तें बिज्जियो जाय लें माय लुग मचलें लागलै । छोटकी रानी के बहुत्ते मना करला के बादो बिज्जीं एक नै मानलकै आरो वनिज वास्तें छवो भाय साथें निकली गेलै । छवो राजकुमार घोड़ा पर छेलै आरो बिज्जी उछललों-कुदलों घोड़ा सिनी के आगू-पीछू चल्लों जावें लागलै ।''

''तें, कोय भाय आपनों घोड़ा पर बैठाय नै लेलकै ?'' बण्टां बड़ा मुरझैलों रं आवाज में बोललकै ।

''नै बैठलकै । भैय्यो सिनी बिज्जी कें भाय कहै में चिढ़ै छेलै । नै चढ़ैलकै, तहियो बिज्जी ऊ देश पहुँची गेलै जोंन देश के राजा कन छवो राजकुमार गेलै आरो परिचय दै कें वहाँ बड़ों-बड़ों पदों पर काम करें लागलै । सांझे छवो राजकुमार एक्के कोठरी में अलग-अलग पलंग पर आवी कें सुती जाय ।''

''आरो बिज्जी ?'' बण्टां बड़ी चिन्तित होतें पूछलकै ।

''बिज्जियो वहें कोठरी में कोय पलंग के नीचें राती सुती रहै । कोय राजकुमार के मालूमो नै हुऐ । जखनी भुरकवो नै उगै, बिज्जी कोठरी सें निकली कें कुम्हारों के यहाँ चल्लों जाय ।''

''कुम्हारों कन कथी लें ।'' बण्टा के आश्चर्य बढ़ी गेलै ।

''बिज्जी वहें कुम्हारों कन काम करें लागलों छेलै । दिन भरी

गदाहा पर मिट्टी ढोवै आरो साँझे कुम्हारे कन खाय-पीवी कें राती राजकुमारों लुग आवी जाय । पेटभत्तै पर बिज्जीं कुम्हारों कन नौकरी करी लेलें छेलै । आरो कुम्हार छेवो करलै एक नम्बर रों कंजूस । एत्तें सस्ता में काम करै वाला आरो के मिलतियै । सें बिज्जी कें पेटभत्ता पर राखी लेलें छेलै ।

''एक दिन जबें बिज्जी पलंग के नीचे ओघरैलों छेलै कि वैं राजकुमार सिनी के आपसी बातचीत करतें सुनलकै, कि ठीक पाँचमों रोज सब आपनों राज लौटी जैतै । जे जत्तें कमैलें छै, सब बोरा में कस्सी-कुस्सी आपनों-आपनों घोड़ा पर लादी लेतै । ई सब बातचीत सुनी कें बिज्जी सोचें लागलै कि वैं तें धोंन कमैलें नै छै, वैं की लै जैतै । ऊ रात भरी सोचत्हें रहलै आरो एकदम भोररिये कुम्हारों कन काम करै लें चल्लों गेलै ।

''कुम्हारों कें एकटा बेटा छेलै, जे रातिये वक्ती पोंर-पखाना वास्तें निकलै । ऊ डरगुहो ओत्ते छेलै । जोंन दिनों सें बिज्जी घरों में ऐलों छेलै, बिज्जिये ओकरों साथ मैदान जाय । ऊ दिन जबें कुम्हार के बेटा साथें पोखरी दिश गेलै, तें एकान्त पावी कें बिज्जीं कहलकै, 'तोहें सच-सच बताव कि तोरों बाबू धोंन कमाय कें कोंन तहखाना में राखै छौं । राजा सें लैकें प्रजा तांय के काम करै छौ, तोरों बाबू सें बढ़ी कें मातवर तें राजाहौ नै होतै । आय तोहें ई बात नै बतैलैं कि तोरों बाबू धोंन कहाँ राखै छौ, तें हम्में तोरा काटी लेवौ, आरो तोहें मरी जैबे ।'

''बिज्जी के बात सें कुम्हारों के बेटा डरी गेलै आरो सब्भे टा बात बताय देलकै कि बाबू आपनों धोंन या तें चाक के नीचें गाड़ी कें राखै छै आकि फेनू जाँतों चक्की के नीचें । सबटा बात सुनी कें बिज्जीं कहलकै, 'सुन, जों तोहें केकरौ ई बात बतैलैं कि तोहें ई बात हमरा बतैलें छैं, तें तोरा हम्में काटी लेवौ, आरो तोहें मरी जैबे ।

''वही दिन सें बिज्जी ई मौका में रहें लागलै कि केना सबटा धोंन निकाललों जाय । निकालियो लेतै, तें लै जैतै केना, यहू सब सोचै । आखिर वैं उपाय निकालिये लेलकै । कुम्हारों कें एक गधैया छेलै, जे एक टांग से लंगड़ी छेलै । कुम्हारें ओकरा खैय्यो लें नै दै । जे मिलै वही खाय लै । एक राती बिज्जी जाँतों सें दूर हटी कें आपनों नाखून सें माँटी खोदना शुरु करलकै आरो जाँतों लुग पहुँची गेलै । देखै छै कि हीरा, मोती, पन्ना, लाल, एक बोरिया में भरलों छै । वैनें केन्हों खींची कें निकाललै आरो गधैया कें

बोरा खोली सबटा हीरा, मोती खिलाय देलकै । ठीक वहेँ रं चाक के नीचहौ सें हीरा, मोती निकाली-निकाली गधैया कें खिलाय देलकै ।

''आबें ठीक वहेँ दिन, जे दिन राजकुमार सिनी के लौटे के बात छेलै, बिज्जी कुम्हारों के पास ऐलै आरो कहेँ लागलै कि एत्तें दिन तोरा कन हम्में काम करलियौं, आबें हम्में आपनों देश जाय लें चाहै छी । ओत्तें दूर पैदल केना जेवों, से तोहें आपनों लंगड़ी गधैया दै दें । कुम्हार ई सुनत्हैं खुश होय गेलै कि लंगड़ी गधैया सें मुक्ति मिललों । वैं तुरंत 'हों' करी देलकै । कुम्हारों के हों कहतैं बिज्जी गधैया लै कें वहाँ सें निकली गेलै आरो राजकुमार सिनी के साथें साथ चलें लागलै । ई देखी कें राजकुमार सिनी हाँसै । राजकुमार घोड़ा पर छेलै आरो बिज्जी गधैया पर । भला गधैया घोड़ा के बराबरी करें पारतियै । देखत्हैं-देखत्हैं राजकुमार सिनी आगू निकली गेलै । लेकिन राजमहल पहुँचलै सब आगुए-पीछू ।

''मतरकि गधैया हौ हीरा, मोती, मुहर, केना खाबें पारें ।'' बिलटा कहतें-कहतें उठी बैठलै ।

''सुनलै नैं, कुम्हारें ओकरा खाय लें नै दै छेलै, तबें करतियै की । जे मिललै वही खाय गेलै ।''

''आगू के खिस्सा तें सुन.....।'' एतना कहतें बण्टा कहलकै, ''तबें की होलै मौसी ?'' आबें बण्टाहौ उठी कें बैठी गेलै ।

''तबें । तबें सब राजकुमारें आपनों कमैलों धोंन खोली-खोली कें दिखावें लागलै । राजा साथें छवो रानी बड़ी खुश होलै आरो जखनी बिज्जी गधैया साथें राजमहल पहुँचलै, तें सब राजकुमार हाँसें लागलै, मतरकि बिज्जी गधी साथें आपनों माय लुग पहुँची गेलै आरो गदही कें ऐंगना में बान्ही कें माय सें डांग लानै लें कहलकै । छोटकी रानी कें जरियो टा बात समझै में नैं आवी रहलों छेलै, से डांग लानी कें बिज्जी के हाथों में थमाय देलकै । तबें की छेलै, बिज्जीं गदही पर डांग बरसाना शुरु करलकै । हुन्नें डांग पड़ै आरो हिन्नें गदही लीद के जग्घा में हीरा, जवाहरात निकाललें जाय । ऐंगना में हीरा, मोती, मुहर, केरों ढेर लागें लागलै । छोटकी रानी ई देखी कें सन्न छेलै ।''

''है बात राजा आरो राजकुमार कें नै मालूम होलै ?'' बण्टा बड़ा धीरें सें बोललै, जेना—बगले में राजकुमार खाड़ों रहेँ आरो वैं सुनी नै लें ।

''हों, राजा कें मालूम होलै, मतरकि जबें राजकुमारो सिनी कें मालूम होलै तें आपनों लानलों धोंन के आधा हिस्सा दै कें छवो राजकुमारें बिज्जी सें ऊ गदही खरीदी लेलकै । बिज्जियो विरोध नै करलकै । दै देलकै । आबें तें बिज्जी के ऐंगना में गोड़ राखै भरी के जगह नै छेलै, कहाँ हीरा, मोती नै बिछलों छेलै ।

''हुन्नें राजकुमारें सिनी गदही कें ऐंगना में बांधी कें डंगाना शुरू करलकै । मतरकि बेचारी लंगड़ी गदही हीरा, मोती केना लीद करतियै । ऊ तें सब बिज्जिये कन गिराय देलें छेलै । बहुत डंगावें लागलै तें गदही मारों सें घास वाला लीद करी कें घिनाय देलकै ।''

ई सुनी कें तें बण्टा आरो बिलटा के हँसी जे छुटलै, तें रुकवां नै रुकलै । रूपसोवाली कें हंसी आवी गेलों छेलै । ई सब हँसी तें तब्हें रुकलै, जबें द्वारी पर बिलटाबाबू के झिंझिंर खटखटैबों साथें 'हम्में छेकां' के आवाज होलै ।

रुपसावाली उठलै, तें बण्टा आरो बिलटा तुरत खटिया पर लुढ़की कें आँख मुनी लेलकै ।

''बात होलौं ?'' हुड़का खोलतें रुपसावालीं पूछलकै ।

''हों, होलै'' भैरो कापरीं ठंडा स्वर में कहलकै, ''बाते नै होलै, हम्में कही देलियै, कि बण्टू आबें साल, छः महीना यहीं रहतै । नाम लिखाय देबै, बिलटू साथें पढ़तै-लिखतै ।''

''तें, दुल्हाजीं की कहलकौं ?''

''कहतै की, हमरों बात हुनी मानी लेलकै ।''

''आबें तोरों काम रहलौं कि बण्टू के नाम कोय दिन इस्कूली में लिखाय ऐयौ ।''

आँख मुनले-मुनले बण्टा आरो बिलटां सब बात सुनलें छेलै । सुनी कें दोनों के मोंन बड़का बेलून नांखी फूली कें पानी रं पातलों होय गेलै—कि आबें फूटथै कि तबें ।

होना कें तें भैरो कापरी कृषि कॉलेजों में कल्र्के छेलै, मजकि ज्ञान में कोय प्रोफेसर-डॉक्टर सें कम नै । दुनिया भरी के गाछ-बिरिछ के जानकारी सें लै कें हजार किसिम के दबाय-दारू के जानकारी राखै । मोंर-मोकदमा के दांव-पेच तें जत्तें भैरो कापरी कें मालूम छेलै, ओत्तें वकीलो वैरिस्टर कें नै होतै । भले गाँव के ऊ मुखिया नै रहें, मतरकि गाँव के छोटों सें छोटों मामलौ पर मुखिया, पंच जरूरे भैरो कापरी सें मिलै ।

बण्टा के घाव आरो देहों के दरद छुड़ाय वास्तें कोय डॉक्टर लुग जाय के जरूरत नै पड़लै । मौसा जे जड़ी-बुटी देहों सें लगाय दै, वही काफी । पाँच दिन पुरतें न पुरतें सब घाव हेनों चोखैलै, सबटा दरद हेनों फुरपार होलै जेना फटाका के आवाज सुनी बगीचा रों बानर ।

होना कें बण्टा के दरद तें वहें रात दूर होय गेलों छेलै, जोंन राती वैं सुनलकै कि ऊ आबें याहीं रहतै । ई सुनला के बाद भला दरद केना, की बुझैतियै । खूब घोर नीनों में हौ राती ऊ सुतलों छेलै । रात-रात भरी वैं सपना में बिज्जी कें देखतें रहलै—की रं घोड़ा रों पीछू-पीछू दौड़लों जाय रहलों छै । केना पलंग नीचें घुर-घुर करी रहलों छै । केना बिल बनैतें-बनैतें जाँतों-चाक तांय पहुँची गेलै । केना सबटा हीरा, मोती, मुहर निकाली कें लेंगड़ी गदही कें खिलाय देलकै आरो केना हिन्नें बिज्जी गदही कें डांग मारै, तें हुन्नें सें लीद बदला हीरा-मोती गिरावै ।

सपनाहें में बण्टा कें बिज्जी सें दोस्ती होय गेलै । खूब गाढ़ों दोस्ती । रात-रात भरी दोनों बाजी लगैलकै कि बेशी तेज के दौड़ें पारें । बिज्जी खूब जोर लगैलकै, मजकि बण्टा तें घोड़ा निकललै । बिज्जी रस्ता में हाँफी रहलों छेलै । ई देखी बण्टा झट सना ओकरा गोदी में उठाय लेलकै आरो देर तांय ओकरों पीठ सहलैतें रहलै ।

बिहानै जबें उठलों छेलै तें मौसी ओकरा पीठ सहलाय रहलों छेलै । पूछलकै, ''की अभियो खूब दरद करी रहलों छौं ?''

''नै कुछुवो नै ।'' बण्टा धड़फड़ैलै उठलै ।

रुपसावालीं एकरा सच्चे मानलकै, कैन्हें कि गरम तेल में जड़ी डाली कें एत्तें लगाय देलें छेलै कि रात भरी में जरूरे दरद सोखी लेलें होतै ।

पाँच दिन, आठ दिन, दस दिन । ठीक दसमों दिन घरों में पंचायत

बैठलै कि बण्टा के कोंन क्लासों में नाम लिखैलों जाय आरो कोंन इस्कूली में ।

इस्कूल के नाम सुनत्हैं बण्टा कें जमराज गुरु जी के मार याद आबी गेलै । एक-एक साटों । पड़...पड़...पड़....पड़.... । याद करतैं बण्टा ऐंठी कें रही गेलै । अभी आरो कुछ बोलतियै कि बण्टा पहिले बोली उठलै, ''हम्में घरे में पढ़बै, इस्कूल नै जैबै ।''

भैरो कापरी बात कें समझी गेलै । कहलकै, ''यहाँ गुरु जी होनों नै छै, जे तोहें सोची रहलों छैं । आबें तोरों मरजी पर छौ कि तोहें अंग्रेजी इस्कूल में पढ़े लें जैबे कि सरकारी इस्कूल में ? मौसीं यही कही रहलों छौ कि अंग्रेजी इस्कूल में ही नाम लिखाय दौ । अंग्रेजी से पढ़तै-लिखतै तें बड़का नौकरी मिलतै, बड़का इज्जत मिलतै । तोरों की मोंन छौ ? अंग्रेजी सें सकें पारबै ?''

''सकें कैन्हें नी पारतै । अभ्यास करला सें तें आदमी पहाड़ो उठाय छै ।'' रुपसावाली बण्टा सें पहिलैं बोली उठलै ।

''सुनों, तोहें कुछ समझै-बुझै तें छौ नै, खाली फेंकड़ा पढ़े छौ । अंग्रेजी पहाड़ नै छेकै, मूसों छेकै । मूसों, जे आदमी के पहाड़ हेनों दिमाग कें भीतरे-भीतर कुतरी कें हिलाय दै छै । समझलौ । निहाल करी रहलों छौं नी बिलटू ।'' थोड़ों मूं ऐंठतें भैरो कापरी बोललै, ''अंग्रेजी इस्कूल में पढ़ैवों बेटा कें । अंग्रेजी के आठ टा शब्द घोकै में आठ दिन लगावै छौं । तोहें समझै लें कैन्हें नी चाहै छौ कि बच्चा आपने माय-मौसी लुग रहै छै, परों घरों में नै आरो आपने माय बच्चा कें ठीक सें पालै-पोसै छै, परों घरों के जोंर-जनानी दू पैसा दिएँ पारें, बच्चा के गू-मूत नै देखें पारें आरो नै एकरों खयाल कि बच्चां खैलकै कि नै, नीन ऐलै कि नै ?.....के लकड़सुंघां लकड़ी सुंघाय देलें छौं कि बेटा कें पढ़ैवों तें अंग्रेजी पढ़ैवों, बहिन-बेटा कें पढ़ैवौं तें अंग्रेजी पढ़ैवों । तोरों बस चलौं तें हमरों नाम तोहें अंग्रजी इस्कूली में लिखाय दौ । हम्में नौकरी करै लें चललियौं । तोर्हे सिनी तै-तमन्ना करी लें कि बण्टा कहाँ पड़थौं । बाबू बनथौं कि लाट साहब ।''

आरो जखनी साँझे लौटलै, तें फेनू घरों के पंचायत बैठलै, जैसें बण्टा, बिलटा दोनों गायब छेलै । भैरो पूछलकै ''बण्टू नै दिखावै छै ।''

''हिन्नें-हुन्नें कन्हौं बिल्टू साथें खेलतें होतै ।''

''तें, की तै भेलै ?''

''तय की होतै । बण्टू साफ बोलै छै कि हम्में इस्कूल नै जैबै, नै सरकारी, नै अंग्रेजी । घरे में पढ़बै । आबें तोंही बताबों, ओकरा घरों में के पढ़ैतै । मानी लें कि ऊ इस्कूल नहिये जाय छै, ओकरों लें घरे में गुरु जी राखियो दै छियै । तें, गुरु जी दिन भरी तें नहिये नी पढ़ैतै । बिहनकी ऐतै आकि सँझकी, घण्टा भरी रहतै आरो चल्लों जैतै । हुन्नें दस बजतें-बजतें बिल्टू इस्कूल चल्लों जाय छै, बेचारा ई असकल्ले रही जैतै। भला असक्कलों एकरों मोंन की लागतै । सबसें बड़ों चिंता तें यहें बातों के छेकै ।''

''तोरा चिन्ता करै के कोय जरूरत नै छै । हम्में नौकरी पर जेबै तें आपनों साथ लै लेबै । कॉलेजों में बड़का ठो मैदान छै । गाछ-बिरिछ छै, किसिम-किसिम के चिड़िया, मधमक्खी कें घोंर, किसिम-किसिम के फूल, पत्ती । आपने मोंन लागलों रहतै । फेनू हम्में तें रहबे करबै । जबें आपने मनों सें बोलतै कि इस्कूल जैबै, तें नाम लिखाय देलों जैतै ।''

आरो यहें बात पक्की मानलों गेलै ।

तिनकौड़ी निषाद कें गाँव भरी के लोग माँछो काका कहै छै । मछली मारै के काम करै छै । एकदम भोरे-भोर उठलों, जाल उठैलकों आरो गंगा दिश कखनी गेलों कि, कोय जानो नै पारें । हुन्नें आकाशों सें सुरुज हुलकै छै, आरो हिन्नें माँछोका बड़का चंगेरा लेलें गाँवों में बूलें लागलों ।

तिनकौड़ी निषाद के कोशिश रहें छै कि सबसें पहिलें भैरो कापरी के यहैं पहुँचें । हुनका तीन सेर वाला मछली चाही आरो तीनो सेर । भैरो कापरी कन दू-चार आदमी ऐतैं-जैतैं रहै छै, कभी कोय, तें कभी कोय, कभी ई, तें कभी ऊ, कभी है, तें कभी हौ । तीन सेर मछली के मोले की !

बण्टा जखनी घरों पर रहै छेलै, तें बंशी लै कें दोस्तो सिनी साथें नै होलों तें सूरा बांध चल्लों गेलों; वहीं वंशी में गूड़-सत्तू वाला चारा फंसाय कें मछली फंसाय के कोशिश करतें रहलों । कभी फँसलों, कभियो नहियो ।

फँसवो करलों तें डरों सें घोंर नै आनलकौ कि माय-बाबू डाँटतो—मछली मारै लें कैन्हें गेलों छेलैं ? से वैं पकड़लों मछली रस्ता भरी तें हुलासे सें लानै मतर घोंर लगीच ऐतें-ऐतें बड़ी दुखित मनों सें दोस्त कें दै है । ई बात सें ओकरों दोस्त ओकरा सें बड़ी खुश रहै कि ओकरा टेंगटा-पोठिया चार-पाँच ठो आरो मिली जाय ।

भैरो कापरी के दुआरी पर मांछो काका पहुँचै कि—बण्टा सबसें पहलें दौड़ी कें पहुँचै आरो काका लुग खाड़ों होय जाय छै । चंगेरा उतरतैं ओकरों आँख एकेक मछली के पीछू घूरें लागै, ''बाप रे बाप, एत्तें-एत्तें बड़ों मछली । किसिम-किसिम के मछली ।'' चंगेरा में मछली जत्तें घुर-फुर करै, ओत्ते बण्टा के मनो ठो । कि है छुवौं, कि हौ छुवौं । ''की एत्तें-एत्तें बड़ों मछली वैं उठावें पारतै । हों, दोनों हाथ लगैला पर उठें पारें । मतरकि जों कहीं काटी लें । बाप रे बाप, कत्तें बड़ों-बड़ों गलफरों छै । केकरो केकरो मूँछों कत्तें बड़ों । आँख केन्हों काँचों के गुल्ली रं चमकै छै ।''

बण्टा के मनों में किसिम-किसिम के भाव उठतें रहै छै; माँछो का जब तांय दुआरी पर बनलों रहै छै ।

''माँछों का जरा दस मिनिट बैठियों । हुनी तुनुक मिसिर जी कें मछली के नेतों दै लें गेलों छौं ।'' रुपसावाली ऐंगने सें बोललै ।

''कोय बात नै छै बेटी, बैठले छियै ।''

मौसी के बात सुनी कें बण्टा निचिन्त होय गेलै । सोचलकै, ''होय गेलै, आधों घण्टा सें पहिलें आवै वाला नै छै मौसा ।'' ऊ वाहीं पर पालथी मारी कें बैठी रहलै । ओकरा एकरो होश नै रहलै कि धरती पर बेठी रहलों छै तें पैंटों में धुरदा लागतै। ऊ तें हेन्है कें बैठतें ऐलों छै । उठलों तें दोनों हाथ पीछू करी पैटों कें झाड़ी लेलकों । बस होय गेलै । जेना ऊ साबुन में साफ करी लेलें रहें पैंटों कें ।

''अरे नूनू पैंट धुरियाय जैतौ ।'' माँछो काका कहलकै ।

''छोड़ों नी काका । पहलें हमरा ई बतावों कि है एत्तें बड़ों मछली मिलै छौं कहाँ ?''

''गंगा में मिलै छै आरो कहाँ ?''

''गंगा में मिलै छै एत्तें बड़ों-बड़ों ! ई तें लागै छै जेना समुद्री मछली छेकै ।'' बण्टा एक दाफी अंगुली बढ़ाय कें छुवै के कोशिश करलकै, मतरकि

ई सोची कि उछली नै जाय, हाथ खींची लेलकै ।

''तोहें, बोललै तें एकदम ठीक बेटा, हिलसा समुद्रे वाला मछली छेकै ।''

''तें गंगा में केना आबी जाय छै ?''

''अण्डा दै लें । हिलसा मछली कें अण्डा दै लें मीठा पानी चाही । समुद्र के पानी तें खारों होय छै, यै लेली समुद्रों सें चली कें, नै खाली ई यहाँ तक आवी जाय छै, इलाहाबाद के गंगो तांय पहुँची जाय छै ।''

''मतरकि है मछली हमरों घर में तें कभियो नै ऐलै ?''

''ऐतै कहाँ सें बेटा । आबें ई मिलै कहाँ छै । कभी काल फँसी गेलों । जबें फरक्का बांध नै बंधलों छेलै, तखनी बोहों के बोहों मछली यहाँ तक आबी जाय छेलै । आदमी हिलसा छोड़ी कें कोय मछली नै खाय छेलै । बांध बंधी गेलै तें मछलियो हिन्नें आबै नै पारै छै । एत्तें बड़ों-बड़ों आबें रेहुओ मछली कहाँ मिलै छै ।''

''तबें हमरा सिनी जे रेहू मछली घरों पर खाय छियै, ऊ कोंन रेहू मछली छेकै ?'' बण्टा माँछो का कें देखतें पूछलकै ।

''ऊ सब नकली रेहू छेकै । जादा सें जादा रेहू के किसिम कहों । रेहुए की कहै छौ, आबें तें मांगुर, नैनी, कोशी, चीतल, गरै, मांच, कतला, मिरगल, हिलसा, सब दुर्लभ होय रहलों छै ।''

माँछो का के मुँहों सें मछली के एत्तें-एत्तें नाम सुनी कें बण्टा के आँख फाटी कें रही गेलै । ''बाप रे बाप, कत्तें-कत्तें नाम जानै छै । कोंन इस्कूली में पढ़लें छै काकां । नै, मनों सें घोकतें होतै, यही सें काकां एत्तें-एत्तें नाम जानै छै ।'' बण्टा एक क्षण लेली सोचलकै आरो आपनों भाव कें बिना जानले देलें वैं माँछों का से आगू पूछलकै, ''काका हिलसा तें मानी लें बांधी कें कारण नै आबै पारै छै, मतरकि है सब मछली कैन्हें नी मिलै छै ?''

''अरे एत्तें सब बात जानी कें तोहें की करवा । बड़को-बड़को जानबे करै छै तें की करें पारै छै । बतैला सें तें दुक्खे होय छै ।'' ई कही कें माँछो का चुप होय गेलै । ओकरों चेहरा पर दुख के भाव उभरी ऐलै ।

बण्टा कें लागलै, बात जरूर कुछ गड़बड़ छै । मतरकि बात छेकै की ? ओकरों मनों के जिज्ञासा चंगेरा में पड़लों मछलिये रं उछलें-कूदें लागलै, तें बण्टा दोहराय कें पूछलकै, ''तहियो काका ?''

बण्टा दोनों केहुनी कें दोनों जांघों पर टिकैलकै आरो तरहत्थी फलकाय कें ओकरों बीचों में ठुड्ढी कें जमाय लेलकै ।

''तोहें कभी पोखरी में मरलों मछली कें उपलैतें देखलें छौ ?''

''हों, एक दाफी । हमरों चौधरी काका के पोखरी में एक दाफी एक मोंन सें ज्यादा मछली मरी कें उपलाय गेलों छेलै । सब बोली रहलों छेलै, कोय डाही सें राते में जहर दै देलें छेलै ।''

''बस, बस बेटा, आबें तोरा सब बात समझै में कुछओ देर नै लागतौं । आबें तोंहीं सोचौ, एक चुटकी जहर सें सौ मन मछली मरी गेलै, तें गंगा में जे हजारो-हजार मोंन रोज जहर कल-कारखाना उगली रहलों छै, ओकरा सें मछली मरतै की बचतै ? गंगा तें जहर बनी रहलों छै । आरो जे मछली बचलों छै, वहू में जहरे बूझों । मछली के तें वंशे जना खतम होय गेलौं, ई फैक्टरी-कारखाना के कारण । आपना यहाँ तें नै, कहै छै अकेले उत्तर प्रदेश मं गंगा के किनारी-किनारी डेढ हजार कल-कारखाना छै, जेकरों जहरीला पानी आरो कूड़ा-कचरा गंगा में जैतें रहै छै । रहें पारतै भला गंगा आरो रहें पारतै मछली जीत्तों ? फेनू पानियो तें एकदम घटलों जाय रहलों छै । कभियो मौसी-मौसा साथें गंगा जैभौ, तें देखभौ कि गंगा केन्हों नाला नाँखी बहें लागलों छै ।''

''गंगा कन्नें छै ?''

''हुन्नें ।'' माँछों कां उत्तर दिश हाथ करतें कहलकै । एक समय ई गंगा एत्तें चौड़ा छेलै आरो वैमें एत्तें पानी रहै छेलै कि गर्मियो दिनों में जहाज डूबी जाय, तें पता नै लागें ।''

''तें आबें की होलै ?''

''गंगा में पानिये नै आबै छै ।''

''गंगा में पानी कहाँ सें आबै छै काका ?''

''हिमालय पहाड़ों सें ।''

''हिमालय पहाड़ में की बड़का पोखर छै ?''

''नै हो, नै'' माँछो का खिलखिलैतें बोललै, ''तोहें बरफ वाला इस्क्रीम खाय छौ नी । बस हिमालय में वहें बरफ के खान छै । कोस भरी के नै; हजारो हजार कोस के । वही बरफ पिघली-पिघली कें गंगा में आबै छै, तें गंगा बहै छै । सुनै छियै कि हिमालय परकों वहू बरफ खतम होय

रहलों छै ।''

''कैन्हें, ऊ सब बरफ कोय राकस आरनी जरूरे खाय जैतै होतै ?'' बड़ी चिन्तित होतें बण्टा पूछलकै ।

''राकस तें की कहबौ, तबें राकसे बूझों । सब मिली कें जंगल काटलें जाय छै । पहिलकों जमलों बरफ गली कें बहलों जाय छै, आरो जमबों रुकी गेलों छै । तहिया पहाड़ गाछी सें भरलों छेलै, तें पहाड़ ठण्डैलों रहै छेलै । ठण्डैलों रहै छेलै, तें मेघ उड़ी-उड़ी कें आवै आरो जमी कें बरफ बनी जाय, तें समय पर पिघलबो करै । आबें तें गाछे नै छै, तें बरफ की जमतै । पहाड़ चूल्हा पर खपड़ी रं गरम होलों जाय रहलों छै । गंगा नाला नै बनतै तें आरो की । सब जग्धों के गंगा मरगांग बनी गेलै ।'' कहतें-कहतें लागलै माँछो का जेना कानी भरतै ।

''काका, पहाड़ों पर हमरा सिनी गाछ नै लगाबें पारौं ।''

''की बोलै छों नूनू, ओत्तें बड़ों पहाड़ों पर गाछ सिनी के लगाबें पारतै कोय्यो। ई पहाड़ की बौंसी के मनार छेकै कि जेठोरों के पहाड़ । वहू पहाड़ों पर तें गाछ नै लगाबें पारै छै आदमी । हिन्नें एक लगावै छै, तें हुन्नें दू ठो काटी लै छै ।''

''अच्छा, हम्में बड़ों होबै नी काका, तें ढेर गाछ लगैबै ।'' बण्टां आपनों दोनों हाथ एकदम पीछू तानतें कहलकै । ओकरों चेहरो पर एकदम वीर भाव जागी उठलों छेलै ।

ऊ शायत आरो कुछ बोलतियै कि तखनिये झट सना ऊ चुकुमुकु बैठी रहलै आरो टानलों हाथों कें चूतड़ पर राखी कें जल्दी-जल्दी धुरदा झाड़ें लागलै । असल में ओकरों आँख दूर सें ऐतें मौसा पर पड़ी गेलों छेलै । धुरदा झाड़ी-पोछी खड़ा होय गेलै आरो ई कहतें घोंर घुसी गेलै, ''मौसी, मौसाबू आबी गेलै ।''

''की बात छेलै, बण्टू बड़ी जांघ-जूंघ जोड़ी कें बैठलों छेलै । कोय खिस्सा सुनी रहलों छेलौं की ? खिस्सा-गप, खेलै कूदे में एकरों बड़ी मोंन लागै छै ।'' भैरो कापरीं हाँसतें-हाँसतें कहलकै, तें माँछो का भी बोली उठलै, ''जे कहों दादा, ई लड़का निकलतौं बड़ी विलक्षण । लक्षणे बताबै छै ।''

''ई तें छै, मतरकि सबसें बड़ों कमी यै में यही छै कि पढ़ै के नाम सुनथैं एकरों बुद्धि मंद पड़ी जाय छै । बहियार देखी आबै लें कहौ, पोखरी

पर भैंसी कें देखी आबै लें कहों, तें पूरा बात सुनै के जरूरतो नै..... ।''

''अच्छा, पढ़ना तें पढ़नै छै, जबें ई दुआरी पर आबी गेलों छै ।'' माँछो कां बड़ा विश्वास साथें कहलकै ।

''से तें ठिकके कहलौ । अच्छा छोड़ों, ई अच्छा करलौ कि तीन सेर वाला ई रेहू लानलौ । एकरा यांही राखी दौ, आरो सब बेची कें लौटों तें पैसा लै लियों । .....लागै छै लौटै में हमरा बेर भै गेलै ।''

माँछो का बड़का मछली दुआरी पर राखी जाबें लागलै तें भैरो कापरीं फेनू टोकतें कहलकै, ''जल्दिये लौटियौ, ई मछली बनाना छौं तोहरे ।''

''ठीक छै'' कही कें माँछो का आगू बढ़लै, तें रूपसावाली मछली उठाय कें ऐंगना में राखी ऐलै ।

ऊ दिन बण्टा कुछ उदासे-उदास रहलै । माँछो का के बात रही-रही कें ओकरा याद आबी जाय । दिन्हौं खाय वक्ती ऊ बहुत्ते खुश नै दिखलै, नै तें थरिया पर मछली देखत्हैं ओकरों चेहरा हजारी गेंदा नाँखी खिली उठै । मतरकि आय होनों कोनो बात नै छेलै । तहियो मछली तें मछलिये छेलै । खुश केना नै होतियै ।

तीन-तीन सेर वाला मछली भला की एक्के शाम खतम होय वाला छेलै । दिनकों खाना में चार ठो खवैया ऐलों छै, तुनुक मिसिर, अंजनी शर्मा, दिलीप कर्ण आरो शरदेन्दु शेखर । कत्तें खैतियै । दुए परोसन में अघाय गेलै । भरी-भरी डब्बो सें कुट्टी आरो झोल गिरैलें छेलै इकबारगिये । रूपसावाली के हाथों के बनैलों के स्वाद अलगे मूँ मारी दै छै ।

हौ माहौली में कोय ई गमे नै पारलकै कि बण्टा के मूँ कुछ'कुछ मनझमान छै । साँझकियो वक्ती बण्टा के मूं बहुत खिललों-खिललों नै छेलै, खाय पर बस तीने आदमी तें बैठलों छेलै—भैरो कापरी, बिल्टा आरो बण्टा । रूपसावालीं आपने सें खाना परोसी रहलों छेलै । कि हठाते ओकरों नजर बण्टा पर पड़लै । आय मछली पर गुमसुम छै, कैन्हें—सोचत्हैं पूछी बैठलै, ''की बण्टू, मोंन तें ठीक छौं ?''

''एकदम ठीक छै ।'' बण्टा मुस्कैतें बोललै, आरो झबझब कौर मुँहों में लिऍ लागलै ।

''काँटों-कूसों देखी कें बण्टू । होना कें आयकों मछली में तें काठी हेनों काँटों छै, तहियो देखिये कें ।'' भैरो कापरीं टोकलें छेलै ।

खैला-पीला रों बाद जबें खटिया पर बण्टा आरो बिलटा गेलै, तें ऊ दिन बिल्टा के पहिलें बंटाहै कें नीन आवी गेलै, नै तें गपसप करतें पहलें बिल्टाहे कें नीन आवी जाय छेलै । बण्टा तें कुछ देर हेन्है उकुस-पुकुस करतें रहै, तभिये ओकरा नीन आबै । बिल्टा कें आचरजो होलै ।

हुन्नें बण्टा नीन में एक दूसरे लोक पहुँची गेलों छेलै, जहाँ नद्दी बहै छेलै । नद्दियो हेनों, जैमें घुटनौ सें बहुत नीचें पानी छेलै । नीचे के बालू साफ दिखाबै ।

बण्टा नद्दी किनारी खाड़ों होय कें नद्दी सें कहलकै,

नद्दी नद्दी पानी दे,
नै तें मछली रानी दे ।

बण्टा के बात सुनी कें नद्दी हुन्नें से जवाब देलकै,

कहाँ सें देभौ पानी कें
चमचम मछली रानी कें
आबें मेघ नै आबै छै
पानी नै बरसाबै छै
बादल कें जाय विनती कर
नद्दी कें पानी सें भर ।

नद्दी के बात सुनी कें बण्टा आकाश दिश देखलकै आरो फेनू दोनों हाथ कें हौले-हौले ऊपर-नीचें करें लागलै । हेना कें करत्हैं ऊ आकाश दिश उड़ें लागलै । ऊपर, एकदम ऊपर कि उड़तें-उड़तें ऊ बादल लुग पहुँची गेलै आरो कहलकै,

बादल-बादल पानी दे
नै तें बिजली रानी दे ।

ओकरों बात सुनी कें बादल बड़ी उदास होय गेलै । फेनू सोची कें बोललै,

कहाँ सें देभौ पानी कें
चमचम बिजली रानी कें
जंगल नै तें छाया दै
खड़ा हुवै लें पाया दै
गरम हवा ठण्डैतै नै

बादल भी तें ऐतै नै ।

बादल के बात सुनी कें ऊ वहाँ एक्को मिनट नै ठहरलै आरो पूरब दिश उड़ें लागलै । उड़तें-उड़तें एक जग्घों पर उतरी गेलै, जैठां कुछ गाछ खाड़ों छेलै। ऊ कटलों-छटलों जंगल छेलै । एक उचकवा पर खाड़ों होय कें वैं जंगल सें कहवों शुरु करलकै,

जंगल मेघ कें छाया दैं
खड़ा हुवै लें पाया दैं ।

बण्टा देखलकै कि ओकरों बात सुनी कें सब्भे गाछ एक्के साथ बोली उठलों छै,

कहाँ सें देबौ छाया कें
खड़ा हुवै लें पाया कें
जंगल तें सब कटी गेलौ
करखाना में बँटी गेलौ
गाछ लगाबें पहिलें जो
सब लोगों सें कहलें जो ।

गाछ-बिरिछ के बात सुनी कें बण्टा वहाँ सें तुरत आपनों गामों दिश चली देलके । रास्ता में कबूतर, मैना, बगरो सब आपस में बतियावें लागलै,

बुतरु चललै गामे-गाम
गाछ लगैनें ठामें-ठाम

सपना में बण्टा यहू देखलकै कि ओकरों साथें आरो ढेरे बुतरु गामे गाम गाछ लगैबों करी रहलों छै । गाँव-गाँव गाछ-बिरिछ सें सुहावन हुऍ लागलै छै । जंगल देखी कें बादल घुमड़ें लागलों छै । नद्दियो खल-खल करी कें बहें लागलों छै । बण्टा साथें सब्भे बच्चा-बुतरु उछली-उछली कें गीत गैलें जाय छै,

बुतरु जेन्हैं जुटी गेलै
धरती वन सें पटी गेलै
जंगल-जंगल घूमी कें
ऐलै बादल झूमी कें
आरो नद्दी बहलै सब
सुख आबै—दुख सहलै सब ।

पता नै, कखनी तांय सपना में बण्टा खुशी मनैतें रहलै । कोंन-कोंन जंगल के बीच दौड़ लगैतें रहलै आरो नै जानौं, कोंन-कोंन नद्दी के खलखल धारा देखी ऐलै ।

जे भी हुएँ आरो जखनी ऊ भोरकी बेरा उठलै, ओकरोंं चेहरा एकदम खिललोंं छेलै । उठत्हैं वैं सरपट पोखरी दिश उड़ान दै देलकै । ओकरा विश्वासे नै होलोंं छेलै कि वैं राती जे सपना देखी रहलोंं छेलै, हौ तेंं बस सपनाहै छेलै आरो यहू मानै लेंं तैयार नै छेलै कि सपनाहौ के बात कही सच्चो होय छै की !

मतरकि वैठां नै तेंं कोय जंगल छेलै, नै कोय नद्दी । बस चार-पाँच ठो बस वहेंं शीशम रोंं गाछ आरो खदैया नाँखी पोखर । तहियो मरद भरी पानी तेंं वै में होभे करतै । बण्टा के मूँ सूखी केंं टोय्यां होय गेलै ।

बण्टा केंं पोखर सें बड़ी डोंर लागै छै । वैं आपनोंं आँखी सें घुंघरु केंं पोखरी में डुबतें देखलें छै । केकरो बात नै मानी केंं ऊ पोखरी में फुललोंं कमलगट्टा केंं तोड़ै लेंं हौले-होले उतरलोंं छेलै आरो हेनोंं गोड़ ससरी गेलै कि चुभ सना डुबी गेलै । सब्भे चिल्लावेंं लागलै । लोग जुटलै । खूब खोजला पर घुंघरू मिलवो करलै, मतरकि बोली-बाजी सब बंद । घुंघरु के माय-बाप जे रं कानवोंं शुरु करलकै, कि मत पूछोंं ।

ओकरोंं बाद बण्टा पोखरी, नदी पर गेवो करलोंं तेंं दूरे सें सब कुछ देखलकोंं । ओत्है दूरोंं सें कि कोय पीछू सें धकेलियो देंं तेंं पोखरी आ नद्दी में नै गिरेंं ।

बण्टा पोखरी सें दूर एक टिल्ला पर खड़ा छेलै कि तखनिये बिल्टा वहाँ पहुँची गेलै आरो पीछू सें जोर सें बोली उठले—'हुआ' ।

बण्टा के सौंसे शरीर भौवाय उठलै । बिल्टा ठठाय केंं हंसलै तेंं ओकरोंं जानोंं में जान ऐलै ।

''की सोचलैं, भूत छेकै ?'' बिल्टा हाँसतें-हांसतें बोललै ।

''हेनै करै के छेकै ? चल मौसा-मौसी कें कही कें मार खिलाय छियौ ।''

''मार तें तोहें खैबे आबें गुरु जी सें । नूनू, कल तोरों नाम लिखैलों जैतौ । होय गेलों तोरों टुकनी नाँखी दिन भर उड़तें रहवों ।''

''तोरा ई बात के कहलकौ ?''

''बस, समझें, जानी लेलियै । बाबू जी सरकारी इस्कूल के एक गुरु जी सें बात करी रहलों छेलै । आरो गुरु जी सें बात करी रहलों छेलै तें कथी लें करतें होतै, तोहीं समझैं ।''

''अनुमान तें तोरों ठिक्के छौ, मतरकि हम्में इस्कूल जैबै, तबें नी ।''

''इस्कूल नै जैबे नूनू, तें बाबू तोरा तोरों घोंर भेजी देतौ । एक दिन माय बोली रहलों छेलै, 'बन्टा हेन्हैं हट्टो-हट्टो करतें रहतै आरो पढ़तै-लिखतै नै, तें दीदी की सोचतै । नै पढ़ै तें दीदी लुग भेजिये देला में भलो छै । वहाँ तें मारो डरों सें पढ़ते, यहाँ तें डांटवो मुश्किल छै ।''

बिल्टा के बात सुनी कें बण्टा हठाते एकदम उदास होय गेलै ।

''कैन्हें, की होय गेलों तोरा ?'' बिल्टा गंभीर होतें बोललै ।

''मतरकि हम्में घरो नै जाय लें चाहै छियै ।''

''तें तोहें यहाँ इस्कूले गेलों कर । अरे सब जग्घों के इस्कूल मास्टर एक्के रं थोड़े होय छै ।''

''की यहाँकरों गुरु जी चेला-चटिया कें नै पीटै छै ?''

''कथी लें पीटतै । आबें बदमाशी करतै, तें पीटतै नै । मतरकि बिना बदमाशी के कैन्हें पीटतै ?''

बण्टा फेनू हठाते साचें-विचारें लागलै ।

''फेनू की सोचें लागलै ?''

''यहें कि हमरा इस्कूल जाना चाही ।''

''ठीक साचेलें छैं । देखें, दिन भरी हम्में इस्कूल में रहै छियै आरो तोहें हिन्नें-हुन्नें करतें रहै छैं । फालतुए नी । साँझे इस्कूली से लौटवे, तें दोनों खूब जमी कें खेलवों-धुपवों । आरो तोहें आबें जत्तें जानै छैं, ओत्तें तें तोरों कलासी के कोय लड़का की जानें पारतै ।''

''अच्छा एक बात बताव बिल्टू । की तोरों इस्कूली में चटिया कें गाछी सें बांधी कें गुरु जी साटों सें पीटै छौ ? मौगली बांध लगाय कें

देह-हाथ फोड़ी दै छै ।''

''अरे नै रे, ई सब अंगरेजी स्कूल में नै होय छै ।''

''तें, ई सब सरकारी इस्कूले में कैन्हें होय छै बिल्टू ?''

''नै बतावें पारवौ । मतरकि इकबाल काकां बतैलें छेलै कि जे गुरुं लड़का कें पीटलकों, समझी लें कि वैंमें जरूरे ज्ञान के कमी छै । आपनों कमजोरिये छिपाय लें गुरु जी चटिया कें डंगैलकों, नै तें जे गुरु जी ज्ञानी रहै छै, ऊ तें ज्ञान दै लें चटिया कें खोजलें फिरै छै ।''

''ई इकबाल काका के छेकै ?'' बड़ी उत्सुकता सें बण्टा पूछलकै ।

''सरकारिये इस्कूल के गुरु जी छेकै ।''

''तबें तें हुनियो चेला कें डंगैतें होतै ?''

''आय तांय केकरो नै डंगैलें छै । हमरा सिनी पहिलें हुनकै सें पढ़ै छेलियै ।''

''सच ?'' बड़ी आचरज सें बण्टां पूछलकै ।

''अरे, तें यै में झूठ बोललला सें कौन मिठाय मिलै वाला छै । सुन, तोरा तें इस्कूल जाना नै छौ, हम्में भागलियौ । ऐवौ, तें एकठो बात बतैवौ ।'' ई कही कें बिल्टा सीधे घोंर दिश दड़वनियाँ दै देलकै ।

बण्टा बड़ी देर तांय वहीं बैठलों सोचतें रहलै । कभी बादल लेली, कभी मछली लेली, तें कभी इस्कूल के बारे में आरो कभी इकबाल काका के बारे में ।

यहू अलग सें दिमाग में चक्कर काटी रहलों छेलै कि आखिर बिल्टू आवी कें की एक ठो बात बतैतै । मतर ओकरा की मालूम कि बिल्टू नें तें हेन्हैं कें खाली कही देलें छेलै ।

फेनू मने-मन बोललै, ''मौसा-मौसी बूझै छै कि हम्में पढ़ै-लिखै लें नै जानै छियै । मौसा कें की मालूम कि बिल्टू दां हमरा नवे महिना में अक्षर जोड़ी-जोड़ी कें कत्तें पढ़ै-लिखै लें सिखाय देलें छै । सिलोटी-कॉपी पर नै, है एत्तें बड़ोंं धरती वाला सिलोटी पर, आरो पेन्सिल कथी के, तें मोटों रं सुखलों छड़ी के । धरती पर गांथी-गांथी कें, बालू में अंगुरी सें अक्षर खींची-खींची वैं ओनामासी धंग सिखलें छै आरो आबें तें चौथी कलास के किताबो पढ़ें सकै छियै ।...एक दिन जबें मौसा-मौसी ई सब जानतै, तें आचरज में खुशी सें पागल होय जैतै । मतरकि इखनी नै बताना छै ।

बिल्टुओ दा कें कही देलें छियै कि मौसी-मौसा कें नै बतावें । एक्के दिन सब ज्ञान खोली कें राखी देबै ।'' एतना सोचतैं बण्टा के दिल-दिमाग गौरव सें गनगन करें लागलै । खुशी में वैं वहें मोखलों छड़ी लै आनलकै आरो सों करलों भुरभुरों जमीन पर यहाँ सें वहाँ तक लिखना शुरु करलकै,

१. हम्में आपनों पढ़ाय आरो काम पूरा निष्ठा सें करवै आरो महान बनवै ।

२. आय सें हम्में, कम-सें-कम दस अनपढ़ लोगों कें पढ़ै लिखै लें सिखैबै ।

बण्टां दू के बाद तीन तें लिखलकै, मतरकि ओकरों बाद कुछ लिखलकै नै । अभी तांय ऐड़िया बल्लों ऊ जे उछली-उछली लिखलें जाय रहलों छेलै, रुकी गेलै आरो पालथी मारी सोचें लागलै, ''अभी तांय यहें दू काम तें होलों छै । वैं बिल्टू दा सें जे-जे सिखलकै, हौ सबटा, भोलू, गणेशी, मुकुटनाथ, गिदरा, अनारसी, अजनसिया, खोको, चम्मो, हिरदा, वैष्णव आरो गन्हौरी कें सिखैलें छै । आबें यै सिनी हमरा सें दुए पैसा कम जानै छै । कल यहू सब महान बनतै, जेन्हों हम्में आपना लें सोचै छियै । मतरकि पहलें हमरा महान बनना छै ।'' आरो फेनू छड़ी एक दिश राखी कें बण्टा बैठले-बैठले दोनों हाथों कें तीरतें पीछू तांय लै जैतें आपने-आप बोललै, ''एत्तें बड़ों महान ।''

आरो ओकरों मों एकदम सें गनगनाय उठलै । जत्हैं तेजी सें वैं आपनों दोनों हाथ पीछू करलें छेलै, ओत्हैं तेजी सें वैं झबझब, सबटा लिखलों दोनों हाथों सें मेटाय कें, घोंर दिश चिड़ियै नांखी फुर्र होय गेलै । घोंर ऐलै तें आपनों वस्ता खोली कें एक कॉपी निकाललकै आरो ओकरा बीचे बीच खोललकै । बड़ी मनों सें अखबार के एक टुकड़ा, जे कॉपी के एक पन्ना सें साटी देलों गेलों छेलै, पर अंगुरी कें ऊपर सें नीचें तांय हौले-हौले लै जैतें मने-मन वाक्य सिनी पढ़तें गेलै, फेनू आँख मुनी कें सिहारतो गेलै ।

औंगरी कें ऊपर सें नीचें तांय लै जाय आरो आँख मुनी कें सिहारै में दस मिनिट सें कम नै लागलों होतै । एकरों बाद कॉपी कें बंद करी हेनों किसिम सें बस्ता में रखी देलकै, जेना कोय बूढ़ी-पुरानी जनानी रामायण कें पढ़ी ओकरा कपड़ा में लपेटी कें ताखै पर राखै छै ।

''इकबाल भाय, आबें तोंहीं हमरों पगड़ी राखें पारें छौ । बण्टू के बारे में तोहें सब जानिये रहलों छौ । तोरा सें कोय बात छिपलौ नै छै । दिन भरी हिन्नें-हुन्नें हट्टो-हट्टो करलें फुरै छै । कुछ डाँटो-डपटें नै पारौं । जे सोची कें राखलें छेलियै, ऊ समझों एकदम गलत निकललै । पढ़ै-लिखै में जरियो टा मोंन नै लगाबै छै । ने मालूम, पोखरी पर जाय कें दिन भरी की करतें रहै छै । एक दिन हुन्नें गेलों छेलियै, तें देखलियै कि चौरस जमीन पर यहाँ सें वहाँ कुछ-कुछ मेटैलों रेखा सिनी छै । की करतें होतै ? छड़ी या औंगुरी सें राकस सिनी के फोटू बनैतें होतै, आकि कौआ, मैना, गाछी के । मतरकि फोटू बनैला सें होय वाला छै की, जों अक्षर नै जानलकै, तें सब बेरथ । बदनामी जे माथा पर लिखना छै, से ऊ अलग ।....आबें तोहीं ओकरा समझाय बुझाय कें आपनों इस्कूली में नाम लिखी ला, तें ई चिन्ता दूर हुएँ। घरों में रूपसावाली यै बातों कें लै कें रोज माथों खैतें रहै छै, ओकरौ सें छुटकारा मिलतों ।''

भैरो कापरी के बात सुनी कें इकबाल ठठाय पड़लै आरो मजाके-मजाक में कहलकै, ''तें, आपनों बोझों हमरों माथा पर राखै लें चाहै छौ । की भैरो जी ।''

''आबें जे बूझों भाय ।'' भैरों बड़ा टुटलों आवाजों में कहलकै ।

''चिन्ता करै के कोय बात नै भैरू, तोहें बन्टू कें कैन्हौं कें हमरों घोंर भेजी दियौ । सीधे इस्कूल भेजवौ तें ऐतौं नै । हम्में घरों में नै रहवै, तें इस्कूल आवी जैतै । खाली हाथों में कोय लिफाफा थमाय दै दियौ, हमरा दै दै लें । बस चार-पाँच बार हेन्हैं करना छै । सब अपने आप ठीक होय जैतै ।''

आरो वहें होलों छेलै । भैरो कापरी एक लिफाफा बण्टा कें थमैतें कहलें छेलै, ''जो, इकबाल काका कें दै अइयैं, घरों पर नै मिलौ, तें इस्कूलिये में जाय कें दै अइयैं ।''

बण्टा कें जबें इकबाल के घरों पर गेलै आरो पता चललै कि हुनी घरों पर नै छै, इस्कूल में छै, तें ऊ सीधे इस्कूल पहुँची गेलै ।

इकबालें देखलकै, तें ओकरा कलास के आगू में बिठाय कें पढ़ावें लागलै, ''कल तोरा सिनी जे खिस्सा सुनलें छेलौ, ओकरा सें ई तें मालूम

होय्ये गेलों होतौं कि राजां चूँकि गलत समय में, गलत मांटी पर, ऊ सोना के गाछ लगैनें छेलै, यही लें गाछ मरी गेलै । आय तोरों सिनी कें सम्मुख हम्में बारह बुझौव्वल राखवौं, जे ज्यादा उत्तर देतै, यानी जौंनें फस्ट करतै, ओकरा एक गाँधी जी के किताब पुरस्कार में मिलतै । ठीइइक । तें आबें बुझौव्वल सुनों,

काक फरै गुल्लर फरै...

ऊ बुझौव्वल इकबाल गुरु जी अभी पूरा करलो नै छेलै कि सब कें 'ठहरों ठहरों' कहतें उत्तर दै सें रोकलकै आरो कहलकै, ''सब आपनों-आपनों सिलोटी पर पहिलें सबटा बुझौव्वल लिखी लें, तबें नीचें में एकेक करी कें ऊ सिनी के उत्तर लिखों आरो सिलोट हमरा लुग जमा करों । हम्में एकेक करी कें देखभौं । समझलौ, तें लिखों,

पहिलों लिखों,

काक फरै गुल्लर फरै, फरै बत्तीसो डार
चिड़ियां चुनमुन लटकी रहै, मानुख फोड़ी-फोड़ी खाय ।

दुसरों लिखों,

उजरी बिलाय, हरी पूँछ
नै जानै तें हमरा सें पूछ ।

आबें तेसरों लिखों,

तीन रंग के तितली
हाथ धोय कें निकली ।

चौथों लिखों,

एक चिड़ैया ऐंसनी खुट्टा पर बैसनी
पान खाय मुचुर-मुचुर से चिड़ैया कैसनी

होलौ तें, पाँचमों लिखों,

इती टा भाल मिया बड़के ठो पूँछ ।

आबें छठमों लिखों,

तनी टा छौड़ा जनम जहरी
तेकरा पिन्हला लाल घँघरी ।

आबें सातमों बुझौवल लिखों,

चाकरों-चाकरों पात तेकरों गदद लड्डुआ

जे नै बुझें ऊ नकचढ़ुआ
आठमों लिखों,
हिलै नै डुलै बैठलों गिलै ।
नौमों लिखों,
बाप रहलै पेटों में बेटा गेलै गया ।
होलौ ? तें दसमों लिखों,
छेकां हम्में रात रों रानी
लोर चुआबौं कानी-कानी ।
ग्यारमों छेकै,
सब राजा रों अजगुत रानी
दुमड़ी रस्ता सें पीयै पानी
आरो बारहमो छेकौं,
नाथ नगर जात बरै दिग्घी में कुय्याँ
दरियापुर में आग लगै खैरे में धुय्याँ ।

सब लड़का आपनों-आपनों सिलोटी पर तड़ातड़ लिखी लेलें छेलै, मजकि एक कोण्टा में बैठलों बण्टा खाली आगू-पीछू मूड़ी घुराय रहलों छेलै । शुरु में वैं, चाहलकै कि ओकरौ केन्हौं कें कोय सिलोट मिली जाय, तें वहूँ ई सब लिखी लै, मजकि जबें हेनों नै होलै, तें ऊ आँख बन्द करी आपनों ध्यान इकबाल गुरु के बातों पर लगाय देलकै आरो हुनकों एकेक बुझौव्वल कें मनों में बैठैलें जाय रहलों छेलै आरो वही बीचों में ओकरों उत्तरो । जबें बारमों बुझौव्वल खतम होलै, तें एक दाफी ऊ फेनू उकुस-पुकुस करें लागलै । ओकरों आँख हौ लड़काहौ सिनी पर घुरी-फुरी कें जाय, जे माथों पकड़ी-पकड़ी उत्तर सोचै में लीन छेलै, तें कभियो गुरुओ जी पर कि, सबसें पहिलें ओकरै सें उत्तर पूछें । की होलै जे वैं सिलोटी पर नहिये लिखलें छै ।

मतरकि गुरु जी के ध्यान तें सब लड़का सिनी पर छेलै ।

घण्टी खतम होय में आबें बीस मिनिट बची गेलों छेलै । गुरु जीं सिलोट जमा करै के आदेश देलकै, ई देखी कें सबसें ज्यादा खुशी बण्टाहै कें होलों छेलै ।

देखथैं-देखथैं गुरु जी के बगलों में सिलोट पर सिलोट जमा होय गेलै । सिलोट जमा करी कें सब आपनों जग्घा पर बैठलों गलगुदुर करें

लागलों छेलै । हुन्नें गुरु जी सिलोट देखी-देखी आरो वैं पर खल्ली सें सही-गलत के चेन्हों लगैतें, सिलोटी कें उलटाय-उलटाय राखलें जाय रहलों छेलै ।

जबें सब सिलोट जाँचलों होय गेलै, तें बण्टा सें नै रहलों गेलै । ऊ बोली पड़लै, ''हम्मूं बुझौव्वल के उत्तर दै लें चाहै छी । हमरौ सें पूछों ।''

गुरुवे जी के नै, सब लड़काहौ के ध्यान एकबारगिये बण्टा दिश चल्लों गेलै, जे खाली गुरुवे जी कें देखी रहलों छेलै ।

''तोहें जवाब देबौ, तें ठीक छै, तोरों सें आखरी में एकेक करी कें सब बुझौव्वल पूछवौं । इखनी बैठों ।'' इकबाल गुरु जी मुस्कैतें कहलकै ।

आपनों बात कहै लें जे बण्टा खाड़ों होय गेलों छेलै, बैठी रहलै । गुरु जी अब तांय सब सिलोट जाँची चुकलों छेलै आरो नाम पुकारी-पुकारी लड़का सिनी कें सिलोट लौटाय देलकै । नम्बरो बोल्लों जाय रहलों छेलै—सितुआ—दू नम्बर, चांदो—एक नम्बर, अखिलेश—सुन्ना, किसुन—दू नम्बर, फागो—दू नम्बर.....क्लास के तीसो लड़का के नम्बर आरो सिलोट लौटैला के बाद गुरु जीं फेनू एक लड़का सें सिलोट लै कें बण्टा दिश होतें कहलकै, ''अच्छा तोरा से पूछै छियौं, एकेक करी कें जवाब देलें जय्यों; जेकरों नै जानों, तें कहियौ 'नै' ।''

सब लड़का आचरज में डूबी गेलै, जबें बण्टा पहले बुझौव्वल के सही-सही उत्तर में बोललै, ''एकरों उत्तर छेकै सुपारी ।'' तीसो लड़का में से एक्को टा एकरों उत्तरे नै लिखलें छेलै ।

गुरु जी के चेहरा पर चमक आवी गेलै आरो क्लास भरी में एक चुप्पी । वैठां खाली गुरु जी कें रही-रही के बुझौव्वल गूंजी रहलों छेलै आरो बण्टा के खटा-खट करी कें एक-एक बुझौव्वल ठीक-ठीक उत्तर—मूरय, सिंघाड़ा, जाँतों, सूई-धागा, मिरचाय, ताड़, कोठी, आगिन आरो धुआँ, मोमबत्ती, दीया, हुक्का ।

रहलों नै गेलै तें इकबाल गुरु जीं कोण्टा तक बढ़ी कें बण्टा कें गोदी में उठाय लेलकै आरो पीठ थपथपैतें बोललै, ''एक दिन नूनू तोहें बहुत बड़ों आदमी बनवौ, हमरों बात खाली नै जावें पारें ।''

ई तें नै कहलों जावें पारें कि गुरु जी के ई बात आरो बण्टा के हौ सबटा उत्तर देबों—सब बच्चा कें अच्छे लागलै, मतरकि कुछ लड़का स्कूल

खत्म होला के बाद ओकरों पीछू लागी गेलों छेलै आरो वहें दिन ऊ दसो लड़का ओकरों लंगोटिया दोस्त बनी गेलै। यही तांय नै, दसो बण्टा कें ओकरों घोंर तांय छोड़ै लें ऐलों छेलै । ऊ दिन हौ सब के लौटै वक्ती बण्टाहौ, होन्है सब कें द्वार के बाहर सड़क तांय छोड़लकै, जेना बाहर सें ऐलै कोय आत्मीय पोंर-परिजन कें घरों के लोग बस्ती तांय आवी कें छोड़ै छै ।

दोसरों दिन भैरो कापरी कें इकबाल गुरु जी तांय बण्टा कें भेजै के कोय उपाय नै ढूढ़ै लें लागलै । बण्टा आपन्हैं स्लेट-कॉपी बस्ता में लैकें इस्कूल जाय लें तैयार छेलै । ओकरा एकरों फिकिर नै छेलै कि वै इस्कूली में आकरों नाम नै छै । एकरा सें की होय छै, इकबाल गुरु जी कल कहलें तें छेलै, ''तोहें रोज आवी गेलों करों । तोरा हम्में पढ़ैभौं ।'' बण्टां मनेमन सोचलकै आरो मने मन कहलकै, ''बस काफी छै ।''

ऊ दिन ढेर समय तक पोखरी हिन्नें नै पड़लों रहलों छेलै । बिल्टे साथें वहूं मूँ-हाथ धोलों छेलै, नहैलें छेलै, इस्कूल जाय लें कपड़ा पिन्हलें छेलै । बिल्टा नांखी बण्टा इस्कूल ड्रेस तें नै पिन्हलें छेलै, मजकि साफ-साफ पैंट आरो कमीज पिहनी कें वैं बस्ता कें कांखी में जखनी दबाय लेलकै, तें ओकरों गदगदी के कोय ठिकानों नै रहलै ।

बिल्टा दुआरी सें निकलत्हैं बारी-बारी सें हाथ डुलाय-डुलाय कें माय-बाबू कें 'बाय मम्मी, बाय पापा'' कहलकै, तें माय के चेहरा पर खुशी दौड़ी गेलै ।

बण्टो के मोंन होलै कि वहू होने करै, मजकि वैं चाहियो कें हेनों नै करें पारलकै । बिल्टा इस्कूली के रिक्सा पर बैठी चुकलों छेलै आरो बण्टा के नया दोस्त सिनी सड़के सें हुलुक-पुलुक करी रहलों छेलै कि बण्टा जल्दी सें निकलौक । बण्टा के नजर आपनों दोस्त सिनी पर पड़लै, तें ऊ मौसी-मौसी लुग ऐलै आरो काँखी के बस्ता नींचें राखी कें दोनों के गोड़ छुवी-छुवी आपनों हाथों कें माथा सें लगाय लेलकै ।

पता नै की होलै कि रूपसा वाली के सौंसे देह जेना बरफ बनी कें पिघली उठलै । झुकी कें गल्ला सें लगाय लेलकै, तें आंखो लोराय गेलै । याद ऐलै कि रुपसा में हेनै कें इस्कूल जाय वक्ती हमरौ सिनी माय-बाबू के गोड़ छुविये कें इस्कूल जाय छेलियै ।

भैरो कापरी कें तें लागलै, जेना वैं सब कुछ पावी लेलें रहें । बोललै कुछ नै । बस मनेमन सुख लेतें रहलै । आँख एक क्षण लेली आपने आप बन्द होय गेलै । खुललै, तें देखलकै, बण्टा आपनों साथी-संगी साथें हँसलों-कुदलों इस्कूल दिश चल्लों जाय रहलों छै । घुमी कें रुपसा वाली सें कहलकै, ''आबें की; बस समझों कि पठार पर मलदैया आमों के गाछ फरै वाला छौं । घोंरे की, टोला-गाँव जखनी गमकतै, तखनी देखियौ ।''

दोनों के मोंन हेनों जुड़ाय गेलै कि कुछु बोलनाहौ मुश्किल छेलै ।

घोषणा मोताबिक बण्टा कें सब लड़का के बीचों में ''गांधी जी के आत्मकथा' किताब देलों गेलों । किताब देलकै इकबाल गुरु जीं, आपनों हाथों सें । सब लड़का यै पर ताली बजैलें छेलै आरो बण्टा के दस ठो खासम खास दोस्तें तें जरूरत सें ज्यादा देर तांय मुड़ी झुकाय कें ताली पीटतें रहलों छेलै ।

रुकलों छेलै तब्हैं, जबें गुरु जीं रुकै लें कहलकै । ऊ दिन सें तें बण्टा आपनों किलासों के मुनीटरे बनी गेलै ।

कोय लड़का कें कुछ काम करना रहै, तें ओकरा जरूरे पूछै, यहाँ तांय कि कोय कठिन सवालो के उत्तर पहिलें वैं बण्टाहै सें पूछै ।

जों बण्टा ऊ सवालों के उत्तर नै जानै आरो कहै कि हम्में नै जानै छी, तें पुछवैय्या कें कम्मे विश्वास हुऐ कि वैं नै जानै छै । सोचै, इखनी नै बताय लें नै चाहै छै, दुसरों दिन बताय देतै । आरो ठिक्के में बण्टा ऊ सवालों के जवाब दूसरों दिन जरूरे बताय दै । हुऐ है कि, जबें ऊ घोंर लौटै, तें रात में खाय वक्ती मौसा सें हौ सिनी सवाल के उत्तर पूछै, जे इस्कूली में

ओकरॉ दोस्तें पूछलें छेलै ।

यहू नै हुऐ कि इस्कूल जैतैं, सीधे उत्तर बताय दै । हौ लड़का के दू-तीन दाफी पूछले पर बताबै—कुछ हेनॉ भाव सें कि ई सवाल के उत्तर तें पहिलैं सें वैं जानै छेलै, मजकि कल मूड नै छेलै, यै लेली नै बतैलकै । एकरा सें बण्टा के ज्ञान के धाक भले इस्कूली में जमें लागलॉ छेलै, मजकि ओकरा हौ सब के उत्तर जानै लें मेहनतो खूब करै लें पड़ै । खेल-कूद सें धीरें-धीरें ओकरॉ साथ छूटें लागलॉ छेलै ।

हौ दिन इस्कूल सें लौटला पर वैं बड़ी हुलासॉ सें पहिलें मौसी कें फेनू सँझकी मौसाहौ कें ऊ किताब दिखैनें छेलै आरो वहें दिन किताब के कत्तें नी पन्ना पीछुवे दिश सें पढ़ी गेलॉ छेलै ।

पढ़तें-पढ़तें ऊ सहसा चौंकी उठलै । किताब के लेन्हैं ऊ बस्ता दिश दौड़लै आरो कॉपी के बीच में राखलॉ वहें अखबार के टुकड़ा पर अंगुरी बढ़ाय-बढ़ाय कें मनेमन पढ़लकै ।

ओकरॉ चेहरा पर आचरज के भाव उड़ी रहलॉ छेलै । वैं कभियो कॉपी के बीच पन्ना कें पढ़ै, कभियो गांधी जी के आत्मकथा कें । फेनू की होलै कि हो पोथी के बीचॉ में राखलॉ अखबार के टुकड़ा कें 'गांधी जी के आत्मकथा' वाला किताबॉ के बीचॉ में हिफाजतॉ सें राखी देलकै आरो किताब बन्द करी ताखा पर होनै के राखी देलकै ।

वैं माय कें देखतें ऐलॉ छेलै—रामायन कें हेन्हैं सहेजी ताखा पर राखतें ।

छुट्टी के दिन छेलै आरो हवो हौल्कॉ-हौल्कॉ ठहार बुझावें लागलॉ छेलै । बण्टा साथें दसो दोस्त के योजना शनिचरे कें तै होय गेलॉ छेलै कि पोखरी पर पिकनिक मनैलॉ जाय । योजना यहू बनलै कि पांडे का के फुलवारी में घुसी कें कबरंगा तोड़लॉ जाय ।

पहलें तें बण्टा चोरी-चपारी सें साफ मुकरी गेलै । कहलकै, ''है सब

कामों में हम्में तोरा सिनी कें साथ नै देबौं, आरो नै कहबौं—हेनों करै लें । जों कि पकड़ाय भै गेलौं तें देह-हाथ के भरता निकली जैतौं । घरों में धुनाठन पड़तौं—से तें अलगे ।''

बण्टा कें हठातें जमुआर गुरु जी के मार याद आवी गेलों छेलै ।

''तोहें बेकारे डरै छैं, पांडेका तें आपनों फुलवारी कभियो नै आवै छै । बस एकठो बूढ़ों रं जोगवारों फुलवारी जोगै छै । वहू में ओकरा सुझवो करै छै कम । आबें जों तोरा एत्तै डोंर लागै छौ, तें तोहें बाहरे रहियैं । हमरै सिनी भीतर घुसबै । कबरंगा तोरो वास्तें बाहर फेकी देबौ ।''

बार-बार कबरंगा के नाम सुनी बण्टाहौं चुप्पी लगाय देलकै । सोचलकै, ''हरजे की छै । धरैतै तें यहें सब, नै धरैतें तें बांट-चूट तें बराबरे होतै ।''

''सोचै की छैं'' मीरवां टन सना बोललै, ''जानै छियै कि तोरों रं डरपोक दीवाल फानै नै पारें । खैर, तोहें एक काम कर—तोरा बाहरे सें गाछी पर खाली ढेपों मारतें रहना छौ, कभी सामना सें, कभियो पीछू सें, कभी दायां दीवाली दिश सें, आरो कभियो बायां दीवाली दिशों सें । जोगवारों कें तें ठीक सें सूझै नै छै । गाछी पर ढेपों के आवाज सुनी जबें ऊ बायां दीवाल दिश दौड़तै, तें हमरा सिनी बायां दीवाली पर चढ़ी गाछी के कबरंगा तोड़बै; बायां दिश दौड़तै तें दायां दिश के तोड़बै; हिन्नें दौड़तै, तें हुन्नें सें तोड़बै आरो हुन्नें दौड़तै, तें हमरा सिनी हिन्नें सें तोड़बै । की समझलैं ।''

''समझी गेलियै ।'' योजना सुनी कें बण्टा कें हँसी आवी गेलै आरु ऊ सिनी मूं पर हाथ राखी खिलखिलाय पड़लै । हँसै वक्ती सिपकियो भर नै आवाज निकलै लें देलकै कि काँही जोगवारो नै आवाज सुनी लें । लड़का के आवाज सुनत्हैं सावधान होय जाय छै, आँख के कमजोर रहला सें की, कान के बड्डी पातरों छै ।

''तें, चल शुरु ।'' बण्टां कहलकै ।

कमाण्डर के इशारा भर होना छेलै कि दसो लड़का दीवाली सें सटलों-सटलों फुलवारी के पिछुलका दिश चल्लों गेलै आरो हिन्नें बण्टा दोनों जेबी में आठ, दस छोटों-छोटों ढेपों भरी कें फुलवारी के बाहर वाला एक ठुट्ठा गाछी पर बैठी रहलै । कथी के गाछ छेलै, पता नै, मतरकि छेलै बड़ी मजबूत । से बण्टा गाछी के ओत्तै फुनगी तक पहुँची गेलै, जहाँ सें फुलवारी

के पछिया दीवारी के पिछुलका भाग दिखावेॅ पारेॅ । बण्टां देखलकै कि तीन लड़का दीवारी पर चढ़े में लागलोॅ छै । पहिलें दीवारी पर छः पंजा दिखलैलै, फेनू तीन-तीन टांग आरो देखत्हैं-देखत्हैं तीन लड़का दीवारी पर छेलै । फेनू की छेलै, बण्टा पूवारी ओर के गाछ सिनी पर ढेपोॅ कस्सी केॅ मारलकै । पत्ता पर खर-खर के आवाज होलै आरो फेनू एक्के साथ ढेपोॅ साथें कोय आरो चीज भद सें गिरलै ।

जोगवारोॅ, जे चुपचाप खटिया पर बैठलोॅ खैनी रगड़बो करी रहलोॅ छेलै, आवाज सुनत्हैं झट सना खैनी मुँहोॅ में राखलकै आरो, ''हो, हो, के छेकैं रे, के छेकैं रे, के कबरंगा तोड़ी रहलोॅ छैं रे, ओकरोॅ टांग तोड़ी देबौ रे'' कहतें-कहतें आवाजे दिश दौड़लै ।

जोगवारोॅ केॅ दौड़तें देखलकै, तेॅ बण्टा आरो ढेपोॅ नै फेकलकै । जोगवारोॅ पूबारी दिश आवी केॅ बायां कान के भुरकी में बायां हाथ के अंगूठा घुसैलकै आरो आवाज के दिशा पहचानै के कोशिश करलकै । ई जानी केॅ कि आवाज पछिया दीवारी दिश सें आवी रहलोॅ छै, ऊ एक बड़का साटोॅ उठैलें वहेॅ दिश दौड़ी पड़लै, ई कहतें कि, ''ठहर कबरंगा तोड़ै छैं, तोरोॅ अभी टांग तोड़ै छियौ ।''

जोगवारोॅ ई किसिम सें दौड़लोॅ छेलै कि दीवाली पर खाड़ोॅ तीनो लड़का धप-धप करी केॅ बाहर कुदी गेलै । बची गेलै भीतर में रमखेलिया, जे गिरलोॅ कबरंगा चुनै लेॅ भीतर घुसी गेलोॅ छेलै । भीतर घुसै के मनसुआ देलेॅ छेलै शेखरें । से ऊ सबसें ज्यादा चिन्तित छेलै कि केना ओकरा बाहर करलोॅ जाय ।

''रमखेलिया जरूर कोय गाछी के पीछू में खाड़ोॅ होतै आरो जोगवारोॅ सें बचै के कोशिश करतें होतै ।''

''जों कजायत रमखेलिया पकड़ाय गेलै, तबेॅ ?'' मीरकां चिन्ता जाहिर करलकै ।

''तबेॅ तेॅ हमरा सिनी के बदला वहीं बेचारा मार खैतै ।'' अंजुम बोललै ।

''मार खाय के चिन्ता नै छै'' तखनिये पीछू सें आवी बण्टा कहलकै, ''चिन्ता तेॅ एकरोॅ छै कि जों रमखेलिया पकड़ाय छै, तबेॅ वैं एकेक धौल पर एक-एक के नाम बोलतै कि के, के कबरंगा तोड़ै में छेलै, जेना बिज्जी के डांग

पर गदहीं हीरा, मोती, हागै छेलै ।''

''आरू समय रहतियै, तें बिज्जी-गधी बातों पर बण्टा खूब हँसतियै, मतरकि ऊ कटियो टा नै हँसलै ।

''से तें तोहें एकदम ठीक कहलैं बण्टा, तबें की करलों जाय ?'' शेखर बोललै । सब के आँखी में डोंर काँपें लागलों छेलै ।

''देखें, आबें एक्के उपाय छै । हम्में दक्खिन दिश सें गाछी पर ढेपों चलाय छियौ; आरो जोगवारों जेन्हैं दक्खिन के दीवाली दिश जाव; तोरा में सें कोय दीवाली पर चढ़ी रमोखिलया के हाथ पकड़ी कें खीची लियैं ।''

''ठीक छै ।'' अंजुम बोललै

आरो योजना मोताबिक बण्टा दक्खिन दीवाली दिश पहुँची गेलै आरो जेन्हैं देखलकै कि अंजुम दीवाली पर चढ़लों होलों छै, वैं हुन्नें सें नगीच वाला गाछी पर ढेपों चलाना शुरु करी देलकै । दक्खिन दिश गाछी पर ढेपों चलत्हैं जोगवारों वहें दिश साटों लै कें दौड़लै आरो हिन्नें, झुकी कें अंजुम रमखेलिया कें घीचें लागलै । मतरकि दुर्भाग्य हेनों होलै कि रमखेलिया कें अंजुम की घीचतै, रमखेलिया छेवै करलै एत्तें घुमाँटों कि अंजुमे फुलवारी दिश खिंचाय गेलै ।

खूब जोरों सें धम्म के आवाज भेलै, तें दक्खिन दिश छोड़ी कें जोगवारों पछिया दिश दौड़लै । आरो एकरों पहिले कि ऊ दोनों फेनू दीवारी पर चढ़ै के कोशिश करतियै, जोगवारों ओकरों सामना में जमराज नाँखी खाड़ों भै गेलै ।

ओकरों हाथों में मोटों साटों देखी कें दोनों के सिट्टी-पिट्टी गुम छेलै । अभी वैं साटों उठैबे करतियै कि फुरती सें रमखेलियां जोगवारों कें हेनों लंग्घी मारलकै कि ऊ सीधे लद सें जमीन पर चित्त गिरी पड़लै । हाथों के साटों छिटकी कें दूर गिरी गेलै । आरो ई सब देखै कें पहिलैं अंजुम आरो रमखेलिया सीधे दीवाली सें सटलों गाछी दिश भागलै । जानें कहाँ सें ऊ फुरती आवी गेलों छेलै कि दनादन बन्दर नांखी ठाहुर पकड़ी दोनों गाछी पर चढ़ी गेलै आरो फेनू दीवारी पर खड़ा होय कें सीधे हौ पार हुनमान कूद लगाय देलकै । हौ दोनों के बाहर निकलना छेलै कि सब एक्के दाफी सबौरों दिश दरबनिया लगाय देलकै । कन्नें कबरंगा गिरलै, के कत्तें लेलकै, केकरों होश ने छेलै । के आगू रहलै, के एकदम पीछू ? एकरों होश नै ।

हुन्नें जोगवारों ताड़ गाछी के पकलों ताड़ नाँखी भद सना जे गिरलै, तें पाँच मिनिट बादे उठलै । उठलै तें चारो दिश देखलकै । तब तांय तें सब फुरपार छेलै । ऊ थोड़ों नेंगचैतें-नेंगचैतें आपनों खटिया ओर बढ़लै आरो वहीं पर बैठतें बड़बड़ावें लागलै, ''अच्छा बरगाहो सांय सिनी, कोय दिन हम्मू पकड़ी कें कचूमर नै निकाललियौ, तें हमरों नाम बगोछों महतो नै ।''

''बण्टा अंजुम, रमखेली, शेखर, मीरका, शेखावत, घोल्टू, सोराजी, अठोंगर, बमबम, सब खड़ा हो जा ।'' हाजरी लेला के बाद इकबाल गुरु जीं फेनू ग्यारहो कें खड़ा करी देलकै ।

आरो सब लड़का ई देखी कें सन्न छेलै । खास करी कें ई देखी कें कि आय बण्टाहौ कें गुरु जीं खाड़ों करलें छेलै । सब के नजर कभी गुरु जी दिश जाय, कभी बण्टा दिश ।

''तोरों सिनी के चोरी कल हम्में आपनों आँखी सें देखलें छियौं, आपनों खेतों के मचानी सें । तोरा सिनी की बुझलौ, कि मचान खाली छै । हम्में सुतलों-सुतलों तोरों सिनी के सब तमाशा देखी रहलों छेलियौं । आबें यहें में भलाय छौं कि दसो डाँड़ों बल्लों पर झुकी कें खाड़ों होय जा ।''

इकबाल गुरु जी के आदेश होत्हैं दसो डाँड़ों बल्लों पर कमर कें सीधा करी खाड़ों होय गेलै । कमर भारों पर सौंसे देह । कुछुवे घंटा में सब डगमग करें लागलै, तें गुरु जी कें भीतरे-भीतर दया लागें लागलै । सोचलकै, ''हेना कें तें सबके ठेहुना, जांघ धरी लेतै । ई सजा ठीक नै ।''

सोचत्हैं कहलकै, ''ठीक छै, सब सोझों होय जा । आरो कैन्हें कि ई दसो के मुखिया बण्टा छेकै, यै लेली जों बण्टा हमरों सवालों के उत्तर दै दें, तें सबक सजा माफ । जो उत्तर नै दिऍ पारतै, तें होने कें सबकें खाड़ों करबौं ।

गुरु जी के बात सुनत्हैं दसो ठो सोझों होय गेलै आरो सवाल के प्रतीक्षा में गुरु जी के मूं देखें लागलै । एक क्षण चुप्पी साधला के बाद गुरु

जीं कहलकै, ''तोरा सिनी फल के चोरी करी रहलोॅ छेलौ, यै लेली बण्टा कें तीस ताजा फल आरो दस सुक्खा फल के नाम लै लें लागतै, नै तें दसो के सजा फेनू पहलके वाला मिलतै ।''

तीस ताजा फल आरो दस सुक्खा फल, बाप रे बाप, एत्तें नाम के बतावें पारतै—क्लास भरी के दिमाग सुनत्हैं सन्न छेलै आरो खास करी कें बण्टा छोड़ी कें दसो ठो के मूं एकदम झमान कि आबें फेनू वहें रं खाड़ोॅ होनाहै छै ।

मतरकि गुरु जी के सवाल सुनत्हैं बण्टा के दिमाग आटा-चक्की नाँखी हन-हन चलें लागलोॅ छेलै । ठीक-ठीक मने-मन हिसाब लगाय कें वैं अंगुली के पोरोॅ पर गिनाना शुरु करलकै, ''ताजा फलोॅ में छेकै—अमरुद, अनानास, अनार, अंगूर, आम, केला, ककड़ी, कटहल, खिरनी, खीरा, खजूर, खरबूजा, गुलाब जामुन, जामुन, तरबुज, नींबू, जमेरी नींबू, नासपाती, पपीता, फलसा, बेल, बैर, लीची, सपाटू, शरीफा, शहतूत, सन्तरा, सेव, सिंघाड़ा आरो कबरंगा ।''

कबरंगा के नाम सुनत्हैं बण्टा रोॅ नवो खासम खास दोस्त के देह काँपी गेलै । सोचलकै, यैं कबरंगा के नाम गिनाय कें नाश करलकै । गुरु जी के गोस्सा बढ़तै । मतरकि है नै होलोॅ छेलै । हेकरोॅ बदला सब के आँखी में चमक छेलै । गुरुवे जी नै, क्लास के सब लड़को दोनों हाथोॅ के अंगुली के पोरोॅ पर बुढ़बा अंगुली कें फिराय-फिराय संख्या गिनवो करी रहलोॅ छेलै । तीस सें एक ज्यादाहै, पूरे एकतीस ताजा फलोॅ के नाम बण्टा गिनैलै छेलै ।

फेनू वैं गुरु जी दिश देखत्हैं कहलें छेलै, ''आबें सुक्खा फल में प्रमुख छेकै—अखरोट, अंजीर, काजू, चिरौंजी, चिलगोचा, नारियल, पिश्ता, कागजी बादाम, चिनिया बादाम, किशमिश आरो खूबानी ।''

किलास भरी के आँख फटलोॅ के फटलोॅ रही गेलै आरो इकबाल गुरु जी तें एकदम दंग । हेनोॅ विलक्षण चटिया आय तक हुनका नै मिललोॅ छेलै । बण्टा के पीठ थपथपैतें हुनी गदगद भाव सें बोललै, ''बण्टू, खुबानी के खाली नामे सुनलें छैं कि खैलोॅ छैं ।''

''खैलें छियै गुरु जी, फल के ऊपरलका सुखलोॅ भाग खाय में मीट्ठोॅ लागै छै । फल के भीतर में बादाम नाँखी गुठली होय छै आरो गुठली में गिरी रहै छै, जे खाय में बादामें रं स्वादिष्ट होय छै । हम्में यहू जानै छियै

कि ई फल खाली उत्तर प्रदेश के ठंडे क्षेत्र में होलों ।''

''आरो चिलगोजा ?'' गुरु जी के कण्ठों सें हठाते ई सवाल निकली गेलै, तें बण्टाहौ रुकलै नै । कहलकै, ''चिलगोजा, भारत केरों फोंल नै छेकै, अफगानिस्तान दिश होय छै । ई कच्चो आरो भुजियो कें खैलों जाय छै ।''

''आचरज, घोर आचरज'' इकबाल गुरु जी के मोंन बोललै, ''ई कोय सामान्य बच्चा हुऐ नै पारें ।''

क्लास केरों ई घटना के एक अलगे असर बच्चा सिनी के दिमाग पर होलै । खाली दूसरे सिनी बच्चा पर नै, बण्टा के मंडलियो में कुछ कें यहें विश्वास हुऍ लागलै कि ओकरा जरूरे कोय जिन, भूत सें दोस्ती छै, जे बण्टा कें भीतरे-भीतर मदद करै छै ।

ई बात तखनी कोय बोललै तें नै, कैन्हें कि दसो वास्तें यहें बहुत बड़ों बात छेलै कि बण्टा के बुद्धिये कारण सब्भे मार आरो सजा सें बची गेलों छेलै । मजकि भूत आरो जिनवाला बात नै तें अंजुम, शेखर, रामखेली, मीरका, बिहारी, शेखावत के मनों सें गेलै, नै तें घोल्टू, सोराजी, अठोंगर आरो बमबम के । असल में ई बात वही क्लासों के एक कोना सें उड़लों छेलै आरो क्लास भरी के माथा पर हठाते बैठी गेलै । मतरकि बोलै कोय कुछुवो नै ।

आखिर बोलतियै की ? बण्टा के हाव-भाव कुछ हेनों छेवे नै करलै । मजकि शेखावत है केन्हौं कें मानै लें तैयार नै छेलै के बण्टा के वशों में जिन्न आकि भूत नै छै, वैं कहै, ''देखें रमखेलिया, जेकरों वशों में भूत आकि जिन्न हुऍ छै, ऊ भूत-जिन्न नाँखी थोड़े दिखावै छै, आकि कुछ काम करै छै; काम तें करै छै जिन्न, भूत । देखलैं नै, बण्टा ऊ दिन केना सब बुझौव्वल के मानें फटाफट बताय देलकै आरो पाँच रोज पहिलें ओत्तें-ओत्तें फलों के नाम केना बताय देलकै । अरे जिन आवी कें ओकरों कानों में बोललों गेलों होतै, आरो बण्टा तहीं सें ओत्तें-ओत्तें नाम बोलें पारलै ।''

''अच्छा है बात, हम्में ओकरा पूछयै ।'' रमखेलिया गंभीर होतें बोललै ।

''पुछबो नै करियैं, कहीं जिन, भूत कें हमरा सिनी के पीछू लगाय देलकौ, तें बुझी ले ।''

दोनों चुप भै गेलै ।

मतरकि फलवाला घटना सें बण्टा के आदर लड़का सिनी के बीच आरो बढ़ी गेलों छेलै । आबें वैं आपनों मंडली के दसे लड़का कें की, कलासों के कोय्यो विद्यार्थी कें कुछुवो बोली दै, तें वैं बण्टा के बात कें नकारै नै, ऊ जेना हुएँ करी दै, नहियो मोंन रहै, तहियो ।

शुरु-शुरु में तें बण्टो कें हठाते ई बढ़लों आवभगत के कुछ मानी नै बुझैलै, मतरकि धीरें-धीरें एकरों भेद खुलें लागलै, जबें एक दिन अंजुमें ओकरा सें कहलकै, ''किलासों के कुछ लड़का ई मानै छै कि बण्टा के वशों में जिन आकि भूत छै, जेकरा सें वै जखनी चाहै छै, पूछी कें उत्तर बताय दै छै, नै तें ओत्तें-ओत्तें बुझौव्वल आरो फलों के नाम केना बताय देलकै ।''

बण्टा बड़ी मनों सें अंजुम के बात सुनलकै आरो फेनू बोललै, ''ई बात आबें केकरो नै मालूम होना चाही, नै तें सब हमरा सें डरतै ।''

बण्टा ई बात कें हौ किसिम सें कहलें छेलै कि ई बात सच्चे रहें । जे जानी लेलकै, जानी लेलकै, आबें कोय नै जानें । कम-सें-कम अंजुम यहें अर्थ बुझैलकै ।

''अजी सुनै छों ।'' रुपसावालीं ऐंगन्हैं सें बराण्डा पर बैठलों भैरो कापरी सें कहलकै ।

''की बात छेकै ।'' भैरो नगीच ऐंतें पूछलकै ।

''बण्टू इस्कूली के बाद कहाँ जाय छै, केकरा-केकरा कन जाय छै कोंन घाट-कुघाट, एकरों खयाल राखै छौ की नै ?''

''तोहें तें हेनों बोलै छौ, जेना ऊ टुअर रहें आरो ओकरों देखभाल

रहबे नै करें ।''

''ओह, तोहें हमरों कहै के मतलब नै बुझी रहलों छौ ।''

''खूब बुझी रहलों छियै बिल्टू-माय । तोहें यहें नी कहै लें चाहै छौ कि आयकल ऊ केकरा-तेकरा कन नी बैठलों फुरै छै, यही नी ?''

''खाली यहें बात रहतियै तें चलों कुछु बात नै छेलै । जबें बिल्टू साथ में रहै छेलै, तबें तें कोय बाते नै छेलै । आबें बिल्टुओ बड़ों पढ़ाय लें भागलपुर चल्लों गेलै । की करतै, बंटुओ कें मोंन नै लागै छै तें हिन्नें-हुन्नें घाट-कुघाट भेलों फुरै छै ।

''ई तोहें घाट-कुघाट की बार-बार बोली रहलों छौ ?''

''आबें तोरा की बतैय्यौं कि मुहल्ला-टोला में बण्टू बारे में ई केन्हों कनफुसकी सुनै छियै कि वैं कोय भूत के सिद्धि करी लेलें छै । भला एतना टा बच्चा, आबें तोंही कहों, जे उमिर भूत-जिन सें डरै के छेकै, ऊ सिद्धि की करतै ।''

''बिल्टू-माय, कहावत छै कि रुपसा गाँव के बिल्लियो पढ़लों-लिखलों होय छै; तोहें केना बची गेलों ।''

''की तोहें कहै लें चाहै छों ।'' रुपसावाली चिढ़तें बोली उठलै तें भाव कें भाँपतें हुएँ भैरो कापरी तुरत आपनों बातों में आरो बात मिलैतें कहलकै, ''होना कें तें हम्मू ई बात सुनलें छियै, मतरकि अब तांय ई बात कें हम्में अनठियाय रहलों छेलियै । लागै छै, जरूर बण्टा कोय फकीर, या तांत्रिक सें हेनों मंत्र पावी लेलें छै, जेकरों बल्लों पर वैं गजब के कारगुजारी करी रहलों छै, आयकल ।''

''अरे यहें तें हम्मू कहै लें चाहै छेलियौं । गोस्साबों नै, तें एकटा बात कहै छियौं—डेढ़ दू महीना सें बण्टु के रंग-ढंग कुच्छु बदललों-बदललों देखै छियै । देर रात तांय की-की लालटेन के रोशनी में निरयासी-निरयासी पढ़तें-घोकतें रहै छै, नै कहें पारियौं । इस्कूली के पाठ होतियै, तें सुनाय-सुनाय कें पढ़तियै, मजकि मनेमन पढ़े के की मतलब ! जेना मंतर जपतें रहें ।''

''हम्मू महीना भरी सें बंटू के ई रंग-ढंग देखी रहलों छियै । मतरकि घबड़ावों नै बिल्टू-माय, ऊ भूत सिनी के बारे में हम्मू जानै के कोशिश करी रहलों छियै । जे पता लागलों छै, वै में तें एक जिन्न छेकै, बाकी सब प्रेत । ई प्रेत कतना छै, से नै कहें पारौं । तीन-चार प्रेत के पता करनें छियै । ई

प्रेत सिनी आपनों मशानों सें केन्हों कें नै हटै छै । शकल सूरत एकदम आदमिये नाँखी । पकड़ें नै पारभौ कि ऊ हवा छेकै, आदमी नै । छूलौ सें लागतौं कि हम्में आदमिये कें छुवी रहलों छियै । मतरकि छै बड़ी ज्ञानी प्रेत सब । वैं आपनों वहें ज्ञान सें, जेकरा चाहै छै, आपनों वश में करी लै छै, आरो जे चाहै छै, कराय छै । यहू मालूम होलों छै, कि जे बच्चा ओकरों शिकार होय जाय छै आरो ओकरों माय-बाप जों ऊ बच्चा कें बाहर जाय सें रोकै छै, तें एक्के साथ गाछी सें उतरी-उतरी कें सब प्रेत जिन कें लेलें ओकरों घरों पर आवी कें मंडराबें लागै छै । आरो आंखी सामनाहै में ऊ बच्चा कें उठाय कें लै जाय छै ।''

''की?'' रुपसावाली एक अजीब भय सें भौआय उठलै ।

''झूठ थोड़े कहै छियौं । कै आदमी, ओझा-गुनी सें पूछी कें ऐलों छियै, तबें कहै छियौं । आबें तोहें बण्टू के एक टा कहानी सुनों कि भूत-प्रेत के सिद्धि कैन्हें आरो केना करलकै । वैं, पोखरी के नगीच डेढ़ महीना पहिलें, लतामों के एक टा गाछ लगैनें छेलै । बित्ता भरी खद्दो खोदी कें वैंमें मुंह भरी गोबर भरी देलकै । फेनू ऊपर सें मिट्टी दै कें आधों गाछ कें गाड़ी देलकै, ताकि गाछ हवा नै सें गिरें पारें । बच्चा रं गाछ छेलै । जों बढ़बो करतियै, तें दस-बीस दिन के बादें । से नै, वैं रोज-रोज गोबर खोदी कें गाछ निकालै कि जोड़ बढ़लै की नै । भला है रं रोज-रोज गाछ कें निकाली कें देखला सें गाछ लगै वाला छेलै । गाछ धीरें-धीरें कुम्हलाय कें गिरी पड़लै ।

''बण्टा सोचलकै, ई काम हवा के छेकै । हवाएं ओकरों गाछी कें गिरैलें छै । से हवा कें सजा देलों जाय । जानै छों, ओकरों बाद बण्टू दिन भरी इस्कूली सें गायब रहलै । पता नै, कहाँ गेलै, आरो हवा के बारे में सब बात लेलकै । हवा के बारे में सब बात तें प्रेते बतावें पारें; भूत-प्रेत तें हवे नी होय छै बिल्टू-माय ।''

''हौ देखौ, बंटू कहां सें असकल्ले हफसलों-धपसलों आवी रहलों छौं । कुछ टोकियौ-टाकियौ नै । हवा वाला बात तें आबें सौंसे गाँव भरी के लोग जानें लागलों छै । नै विश्वास छौं तें अभी देखियौ, की रं वैं टन-टन जवाब देतौं ।''

तब तांय बण्टा ऊ सब के एकदम नगीच आवी गेलों छेलै । थकान के बावजूदो चेहरा पर काफी खुशी लहरी रहलों छेलै । भैरो कापरीं ओकरों

पीठ सहलैतें पूछलकै, ''कहाँ गेलोॅ छेलैं बण्टू ?''

''हौ दिश । बिसूबा थान के हुन्नें; हौ पार ।'' बण्टा हाथ सें इशारा करतें कहलकै ।

''अरे, हौ दिश तेॅ खाली आमे के गाछ छै । हुन्नें कथी लेॅ गेलोॅ छेलैं ? आरो के-के साथोॅ में छेलौ ?''

''आय कोय नै छेलै । असकल्ले छेलियै ।''

''असकल्ले ! डोॅर नै लगलोॅ ?'' भैरो कापरीं आचरज सें पुछलकै।

बण्टा मुस्कैतें हुएँ मूड़ी डोलाय केॅ बोललै—''नै ।''

''अच्छा, वहाँ कथी लेॅ गेलोॅ छेलैं ?''

''वहाँ हवा बड़ी अच्छा बहै छै ।''

हवा के बात सुनत्हैं रुपसावाली के दोनों कान फेनू खाड़ोॅ होय गेलै ।

''अच्छा बंटू, तोहें हवा के बारे में की-की जानै छैं, बतावेॅ पारैं ?'' भैरो कापरी लगले पूछलकै आरो लगले बण्टाहौं बिना रुकले जवाब देना शुरु करलकै, ''हवा केॅ देखना मुश्किल छै, एकरा केन्हौ केॅ नै देखलोॅ जावेॅ पारै । हवा जबेॅ हमरोॅ देहोॅ केॅ छुवै छै, तेॅ पता चलै छै—हवा छै आरो बही रहलोॅ छै ।''

''अच्छा बण्टू, तोहें है केना पता लगैबैं कि हवा चली रहलोॅ छै कि नै चली रहलोॅ छै ?''

''गाछ देखी केॅ ।''

'गाछ देखी केॅ' सुनत्हैं रूपसावाली हठाते कांपी गेलै । अभी, कुछ देर पहलैं तेॅ भैरो कापरी बतैलेॅ छेलै कि भूत-प्रेत गाछी सें उतरी केॅ.....

''सुनलौ, बिल्टू-माय, गाछी केॅ देखी केॅ पता लगाय लै छै ।''भैरो कापरी रुपसावाली दिश देखी केॅ बोललै । फेनू बण्टा दिश मूं करी कहलकै, ''गाछ देखी केॅ केना ?''

''जबेॅ गाछ इस्थिर रहेॅ, आगिन सें धुआँ उठी केॅ सीधे ऊपर जाय, तेॅ जानी लेॅ हवा प्रति घंटा, आधोॅ कोस सें कम चली रहलोॅ छै । जों पत्ता खड़खड़ाबै, तेॅ समझोॅ कि हवा प्रति घंटा दू कोस सें तीन कोस तांय के गति सें चली रहलोॅ छै । जों पत्ता साथें ठाहुरो हिलेॅ, तेॅ समझोॅ हवा प्रति घंटा चार सें छोॅ कोस बही रहलोॅ छै आरो जों धूल उड़ेॅ लागेॅ तेॅ बूझोॅ कि प्रति घंटा सात सें नोॅ कोस बही रहलोॅ छै । जों छोटोॅ गाछ डोलेॅ लागेॅ, तेॅ हवा निश्चित

रूपों सें प्रति घंटा नों सें बारह कोस बही रहलों छै । आरो जों बड़ों गाछ के ठाहुर साथें गाछों डोलें लागें, तें समझों कि तखनी हवा प्रति घंटा बारह सें लै कें उन्नीस कोस तांय बहतें रहै छै । हेन्हैं कें जों गाछ टूटें लागै छै, तें समझी लें कि हवा उन्नीस कोस सें लै कें सत्ताइस कोस तांय प्रति घंटा बही रहलों छै आरो जों गाछे उखड़ें लागै तें बूझों कि हवा प्रति घंटा सत्ताइस कोस सें लै कें सैंतीस कोस के रफ्तार से बही रहलों छै आरो आगू, जो तेज हवा सें छोंर-छप्पर उड़ें लागै, तें बुझों कि हवा सत्ताइस कोसों सें ज्यादा प्रति घंटा के हिसाब सें बही रहलों छै । आ जों कि हवा सें गाछ टूटें लागें, ऊ आंधी छेकै, जे गाछ उखाड़ें, ऊ तेज आंधी आरो जे छप्पर उड़ाबै, ऊ तूफान छेकै ।''

''सुनलौ नी बिल्टू माय ।'' भैरो कापरीं रूपसावाली दिश घूमतें कहलकै । मतरकि रुपसावाली सुनतियै की । ओकरों तें सौंसे ध्यान हवा के गति, आंधी, तूफान, पेड़ के गिरवों-उखड़वों आरो वही हवा के बीच मछली के पुछड़ी रं हाथ-गोड़ डुलैतें भूत-प्रेत आँखी के सामना नाचें लागलों छेलै ।

''अच्छा बेटा, जल्दी सें तैयार होय जा, आय हम्में तोरा नवयुग विद्यालय के गुरु अनिल शंकर झा जी सें मिलवाय लें लै चलबौं । हुनी यहाँ काली मठों में आवी कें ठहरलों छै ।''

बण्टा, ई बात सुनत्हैं, गदगदाय गेलै । दौड़ी कें आपनों कोठरी में घुसी गेलै आरो ओकरों वहाँ सें हटत्हैं भैरो कापरीं रूपसावाली सें कहलकै, ''देखलौ नी, की रं सब टा ओझा, भगत नाँखी बोललों गेलै ।''

''एक बात कहियौं, तोहें बण्टू कें दीदी लुग दै आवों । कोय किसिम के बात होय जाय, तें लांछन लेला सें की फायदा ? पढ़ै-लिखै लें जानिये लेलें छै, आबें घरे पर पढ़तै तें ठीक । होन्हौ कें बच्चा मैय्ये-बाप के नियंत्रण में ठीक रहें पारें । आबें होय्यो तें रहलों छै पाँच-छों महीना । आपनों बच्चा कें देखलें बिना की मैय्यो-बाप कें चैन मिलै छै ।''

''देखों बिल्टू-माय, तोहें बण्टू कें भगाय पर कैन्हें लागलों छौ । एक तें बिल्टू घरों सें बाहर रहें लागलै । पता नै, ई केन्हों पढ़ाय-लिखाय शुरु होय गेलै कि आँखी तरों सें बच्चे हटी जाय छै । की जानतै बच्चां माय-बाबू के बच्चा प्रति लगाव । आरो बच्चो सिनी कें माय-बाबू, घोंर-गाँव के प्रति जे लगाव नै रहलै—सब यहें कारण । ई पढ़ाय तें गाँव के

सुख-चैन-प्रतिभा, सब छीनी रहलों छै । हमरा सिनी के जमाना में ई फैशन नै छेलै ।''

''यहें सें तें कहै छियौं कि बंटू कें ओकरों माय-बाप लुग दै आवौ ।''

''है रं कैन्हें बोलै छौ । मौसी तें माय सें बढ़ी कें होय छै । कहलों कथी लें गेलों छै—मरें माय, जिएँ मौसी । चलों उठों, बण्टू कें तैयार करी दौ । जरा ओकरा झड़वैय्यो देबै, सुनै छियै, झा जी मुंगेरी के चण्डी थान में सिद्धि पैलों होलों छै ।''

आरो जबें रूपसावाली वैठां सें उठलै, तें भैरो कापरी नैं जानौ कोंन सोचों में हठाते डूबी गेलै ।

''इकबाल भाय, आरो सब बात तें ठीक । बण्टू आपनों उमिर सें बीस गुणा ज्यादाहै जानै छै । ओकरा कृषि कॉलेज के प्रोफेसरो सिनी एत्है मानै छै कि मत पूछों । मतरकि आयकल ऊ असकल्ले बीस बिघिया आम बगीचा दिश भागी जाय छै । कभी-कभी दिन भरी वहीं रही गेलों । है एकदम ठीक नै। आखिर छेकै तें बच्चे नी ।''

''अरे, रात भरी तें वोंन, बगीचा, बहियार में नहिये नी रहतै होतै भैरो । रहै लें दैं । वैं आयतक जत्तें भी जानलें छै, वही वन, बगीचा, नदी, बहियार, पोखरी, सरंग सें । हमरा सिनी सें वैं इकन्नी भरी सीखै छै आरो पन्द्रह आना वही सिनी सें, समाज सें, समाज के रीति-रिवाज, व्यवहार सें । तोहें चिन्ता नै करलों करें ।'' इकबालें भैरो कें आपने खटिया पर बैठे के इशारा करतें कहलकै ।

आरो जबें भैरो कापरी खटिया पर बैठी गेलै, तें इकबालें फेनू कहना शुरु करलकै, ''भैरो कापरी पुराण के कथा छेकै, तहूं जानतें होभैं कि की रं एक बालक शिक्षा पाबै खातिर एक ऋषि लुग पहुँचलै, तें ऋषि ओकरा एक गाय देतें कहलकै कि, 'जोंन दिन ई गाय सें सौ गाय हो जावं, वही दिन तोहें ऐयों आरो हम्में तोरा आपनों चटिया बनाय लेबौं ।' ऋषि के शर्त ऊ

लड़का मानी लेलकै आरो जंगल दिश चली देलकै । जंगल में ओकरा कै साल तें बीती गेलै आरो जबें एक गाय सें सौ गाय होय गेलै, तें सब गाय कें लै कें ऊ लड़का वहें ऋषि लुग ऐलै । सौ गाय देखी कें ऋषिं कहलकै, 'ठीक छै, आय सें तोहें यहाँ रही कें शिक्षा पावें सकै छों । आय सें हम्में तोरा शिक्षा देभौं । यै पर जाने छैं, वैं लड़का की कहलकै ? कहलकै 'हम्में आपनें के ऋणी छियै गुरुदेव, आपनें तें हमरा शिक्षा दै चुकलों छियै ।' जानै छैं, ई बातों पर वैं ऋषि आचरज सें पूछलकै 'सें केना ?' तबें वैं लड़का कहलकै, 'जंगल में एत्तें साल रहै के क्रम में वैं पशु, पक्षी, नदी, हवा-बतास, आकाश, तारा, चांद-सुरुज सबके गतिविधि के ढेर-ढेर बात जानी लेलें छै । कोंन ऋतु में की-की बदलै छै, कोंन-कोंन फल-फूल उगै छै, कोंन-कोंन पशु-पक्षी के जनम होय छै, केन्हों हवा केना चलै छै, कोन बादल की किसिम के होय छै । सब । के केना बोलै छै, ओकरों की मानै छै, यहू सब । आखिर आपन्हौं तें वहें सब के बारे में शिक्षा-दीक्षा देतियै । आरो ऊ सब तें हम्में प्रकृतिये बीच रही कें जानी लेलें छियै ।' बालक के ई बात सुनीकें ऋषि मुस्कैलै आरो माथा पर हाथ रखी आशीर्वाद देलकै कि वैं लड़का ऋषि के मनसा खाली जानबे नै करलकै, बलुक बढ़िया चटिया बनलै ।

''आबें समझलैं भैरू, हमरों जिनगी में जंगल-नदी, पहाड़-पर्वत, पक्षी, पशु के की महत्व छै । छोड़ी दैं बण्टा कें, जों ऊ पोखर किनारी में बैठलों रहै छै, गंगा नदी कें निहारतें रहै छै, पास-पड़ोस के धरों में केकरौ सें खिस्सा-गप्प सुनतें रहै छै । आभी ओकरों उमिरे की होलों छै । खेलै-धूपै के ही तें उमिर छेकै । एक बात जानी लें भैरू, समाज के एक-एक व्यक्ति हमरा कुछ-न-कुछ शिक्षा जरूरे दै छै । दत्तात्रेय मुनि के गुरु तें गिद्ध तक छेलै । आबें तोहें जानै छै कि नैं, नै जानौं, तहियो है सुनी लें—महात्मा बुद्ध कें ज्ञान कोय भगवान, देवी-देवता सें नै मिललों छेलै । मिललों छेलै तें केकरा सें—समाज के एक अदना गवैया-बजवैया सें । योग-तप करी कें बुद्ध आपनों हाड़-मांस सुखाय कें बैठलों छेलै कि तखनिये हुनकों सामना सें एक गायक-मंडली गुजरलै । जे मंडली में पुरुष तें एकतारा बजाय रहलों छेलै आरो जनानी गीत गाबै छेलै । हौ जे गीत गैलों जाय रहलों छेलै आकरों अर्थ ई छेलै कि सितार के तार कें एत्तें नै कस्सों कि तारे टूटी जाय, एत्तें ढिल्लों नै छोड़ों कि सुरे नै निकलें । जों तोहें तार ठीक सें बजैबौ, तें सब

के मोंन झूमी उठतै ।

''जानै छै भैरू, बुद्ध नें जबें ई बात सुनलकै, तें हुनकों ज्ञान खुली गेलै । हुनी मध्यम मार्ग कें पकड़ी लेलकै आरो हुनकों शिष्य सौंसे दुनिया होय गेलै । आरो है बुद्ध के गुरु के छेलै, तें छोटों-मोटों अदना रं गवैया । तहीं सें कहै छियौ कि समाज के एक छोटों-सें-छोटों आदमी हमरों जीवन कें महान बनावें पारें ।

''भैरू, हमरा सिनी जे ज्ञान दै छियै, ऊ खाली सिद्धान्त छेकै, हमरों आँखी के आगू में कुछ नै होय छै । प्रकृति आरो समाज के बीच रही कें जे आदमी ज्ञान हासिल करै छै, वैं जेटा हासिल करै छै, वहें सुच्चा ज्ञान छेकै—जेकरा तोहें प्रामाणिक ज्ञान कहै छैं । ऊ ज्ञान पर जत्तें भरोसों करलों जावें सकै, तें करलों जावें सकें । हमरो सिनी के ज्ञान तें किताबिये ज्ञान छेकै, अक्षर पर टिकलों ज्ञान, कहलों गेलों ज्ञान पर आधारित ज्ञान । एकरों कोंन भरोसों । छुच्छे कठदलीली ।'' ई कहतें-कहतें इकबाल हँसी पड़लै । आरो कुछ देर की सोचत्हैं रही गेलै ।

भैरो कापरी तें पुराणवाला कथाहै से जें चुप छेलै, तें चुप्पे छेलै । खाली दोस्त इकबाल के वहें बात कें गुनी रहलों छेलै ।

''भैरू, दू रोजों सें एक टा बात गमतें होबैं ।'' इकबालें भेरो के कान्हा पर हाथ धरी टोकलकै, तें जेना ऊ अनचोके नीनों सें जागी उठलों रहें आरो बोललै, ''की ?''

''यहें कि बंटू भोरे-भोर कांही निकली जैतै होतौ ।''

''हों, ई दस रोजों सें देखी रहलों छियै, मजकि ओकरा सें पूछलें नै छियै ।''

''पूछै के जरूरतो नै छै । रमखेली के जानै छैं, जे बंटू के गहरा दोस्त छेकै ?''

''हों, जानै छियै, ई तें ओकरों साथे लागले रहै छै ।''

''यहू जानै छैं कि रमखेलिया केकरों बेटा छेकै ?''

''केकरों ?''

''भगवत्ता मोची के । आय पाँच रोजों सें भगवत्ता बीमार छै । बस सोचें कि मरले दाखिल छै । कोय देखबैय्या नै । रमखेलिया के मैय्यो तें नहिये छै । बस वहें रमखेलिया; वैं पानी पिलैतै, कि असपताली सें दवाय

माँगी कें लानतै । वहू में भगवत्ता हेनों आदमी के कौनें सुनै छै ।.....जानै छैं भैरू, आयकल बण्टू आपनों आठ-नों साथी लै लैकें भगवत्ता के ही सेवा में लागलों रहै छै ।

''आबें तें भगवत्ता भागवत होय गेलों छै । बीमारी सें पहिलें जेहनों छेलै, ओकरों सें बढ़िया । बुलबे-चालबे नै करै छै, कामो पर जावें लागलों छै ।....हौ देखैं, हौ देखैं ।'' हठाते इकबालें भैरू कापरी कें दक्खिन दिश हाथों सें देखैतें बोललै, ''ई सब दोस्तों कें लैकें, बण्टू भगवत मोची के टोले सें निकल्लों छै । सुनै में यहू मिललों छै कि यै सिनी मिली कें हौ टोला में बच्चा सब कें जौरों करी, एकआध घंटा ओना मासी धंग भी पढ़ावै छै ।''

तखनिये तांय भैरो कापरी के चुप्पे देखी कें इकबालें ओकरों दिश देखतें कहलकै, ''तोहें कुछ सोचें तें नै लागलैं भैरु, अरे बण्टू के मंडली में कोन जातों के लड़का नै छै, कैथ, कहार, बामन, राजपूत, धानुक, वैस, सब जातों के । भैरू, हमरा सिनी जे व्यवस्था बनैलें छियै, आबें ऊ, यहें बच्चा-बुतरु तोड़तै, अश्वमेघ वाला घोड़ा कें लव, कुश रोकै लें तैयार छौ । देखी लें आवी रहलों छौ ।''

दोनों देखलकै, बण्टा आरो रमखेलिया आगू-आगू हर कदम पर उछललों-कूदलों आगू बढ़ी रहलों छेलै, तें पीछू के छौड़ो, हाथों में ढेलों उठाय कें दूर तांय फेंकै वास्तें, दौड़ी कें आगू निकली जाय । सब में होड़ा-होड़ी छेलै । कोय दोनों हाथों कें तुतरु रं बनैलें मुँहों सें फूंकी रहलों छेलै, तें कोय तरहत्थी पर ताली बजाय कें जग्घा पर, कलाई कें कलाई पर ठोकी कें नगाड़ा बजाय के नाटक में मशगूल । केकरो कुछ सुध-बुध नै ।

ई सब देखी भैरो आरो इकबाल एक्के साथें खिलखिलाय कें हाँसी पड़लै ।

सुनत्हैं सब मनझमान होय गेलै । जुटै के तें सब जुटलों छेलै इस्कूली में, मजकि बण्टा बिना सचमुचे में कलास हवांक हेनों लागी रहलों छेलै । गुरुओ

जी के चेहरा पर हौ चमक आरो पढ़ाय में तेज नै छेलै । होना कें एकरा इकबालें केन्हौ कें जाहिर हुएँ दै लें नै चाही रहलोॅ छेलै । बस कठहँस्सी में एतनै टा बोललै, ''की रमखेली, आबें बण्टू बिना तोरोॅ खेलकूद कना होतै?''

मजकि तखनिये गंभीर होतें फेनू कहलकै, ''देख अंजुम, मीरवा, बिहारी, शेखावत आरनी, बंटू घोॅर गेलोॅ छै तें की, वैं जे काम शुरु करनें छै, ऊ बंद नै हुएँ । सुनै छियै, तोरा सिनी डोमासियो में जाय कें पढ़ाना शुरु करनें छौ । हम्में तें चाहै छियै कि हमरोॅ इस्कूल के सब बच्चा, जे पढ़ै लिखै में तेज छै, आपनोॅ-आपनोॅ मुहल्ला के बच्चा कें अंगुरी पकड़ी कें अक्षर सिखाना शुरु करी दौ । खाली सरकारे पर भरोसे करी कें रहवोॅ बेवकूफी छेकै । आरो सरकार के भरोसे रही के कोय अच्छा काम पूरा होलोॅ छै की ? ऊ तें बण्टू हेनोॅ लड़का के जिद्दें सें पूरा होतै ।

''आरू बण्टू की वहाँ ढेरे दिन रहें पारतै । ओकरोॅ माय बीमार छेलै; ई बात सुनलकै, तें घोॅर जाय लें जिद्द पकड़ी लेलकै । एक दिन तें खैवो नै करलकै । हारी-पारी कें मौसां ओकरा भीखनपुर पहुँचाय ऐलै, मजकि ई शरतो पर कि माय के मोॅन ठीक होत्हैं ऊ भिट्टी आवी जैतै । हौ तें नहियो शर्त करवैतियै, तहियो ऐतियोॅ । ओकरोॅ मोॅन यहाँ लागी गेलोॅ छै । हम्में जानै छियै नी कि ऊ वहाँ बहुत्ते दिन नै रहें पारें ।''

इकबाल गुरु जी के ई बात सुनी कें शेखर, सोराजी, अठोंगर, बमबम आरनी तें भीतरे-भीतर गदगदाय गेलै। सोचलकै—चलें, ज्यादा सें ज्यादा दस रोज, या आरो ज्यादा, तें बीस रोज; होन्हौं कें महिनो तें देखत्हैं-देखत्हैं फुर्र होय जाय छै ।

ई ढाढस सें बण्टा के सब साथी कें बड़ी बोॅल मिललोॅ छेलै । सब ठीक समय पर कलासो जाय, ठीक समय पर कलासो लै । हौ सिनी वक्ती तें बण्टा के बहुत ज्यादा कमी नै अखड़ै, मजकि खेल के वकत हुऐ, तखनी बण्टा बिना ऊ खेल बेकारे लागै ।

खेल के बात याद ऐत्हैं मीरवा कें हौ दिनकोॅ जरूर याद आवी जाय, जबें वैं दौड़ै वक्ती, ई फेकड़ा पढ़ना शुरु करलें छेलै,

कबडी कबडुआ बाप तोरोॅ भड़ुआ
माय तोरी नेंगड़ी, घीच बेटा टेंगड़ी

तें बण्टा बीचे में खेल रोकतें कहलें छेलै, ''देख, आय सें खेल खेलै

वक्ती ई फेंकड़ा कोय नै पड़तै । आरो नै तेॅ ''सेल कबड्डी आला, भगत मोर साला' वालाहै फेंकड़ा पढ़तै । बस एक फेंकड़ा पढ़लोॅ जैतै ।''

आरो बण्टा दस कदम दौड़ी केॅ फेनू वहीं ठां आगू-पीछू होतें एक्के सांस बोलतें गेलोॅ छेलै,

सेल कबड्डी आला, तबला बजाला
तबला में पैसा, लाल बतासा ।

आरो वहेॅ दिनोॅ सें कोय्यो हौ दोनों फेकड़ा कबड्डी खेलै वक्ती, नै पढ़लेॅ छेलै ।

यहेॅ रं एक दिन हेन्हैं केॅ जबेॅ सोराजीं ई गीत पढ़ना शुरु करलकै,

एक तारा, दू तारा
मदन गोपाल तारा
मदना रोॅ बेटी बड़ी झगड़ाई
अक्का गोल-गोल, पक्का पान
शिवोॅ के बेटी कन्यादान
काना रे कनतुल्ला-तुल्ला
पीपर गाछी मारै गुल्ला
साँप बोलै कों-कों कबूतर मांगै दाना
हम्में तोरोॅ नाना ।

तेॅ बण्टा गीत के आखरी में कहलेॅ छेलै, ''यै सें 'काना' शब्द हटाय केॅ पढ़लोॅ करें । काना बदला कुछुवो बोली ले नी, है सिनी कथी लेॅ बोलै छैं ।''

मीरवां माथा पर जोर देतें सोचलकै, ''आखिर बण्टा ई सब बातोॅ सें एत्तेॅ चिढ़ै छै कथी लेॅ । ई की हम्में बनैलेॅ छियै, सब्भे तेॅ बोलै छै । आय तांय कोय्यों तेॅ केकरौ मना नै करलकै । जों बण्टू के माय-बाप हेनोॅ होतियै आरो चिढ़तियै तेॅ एक ठो बातो छेलै । तहियो बण्टू यहेॅ चाहै छै, तेॅ हमरौ सिनी केॅ यहेॅ करना चाही । आखिर ऊ हमरा सिनी लेॅ कत्तेॅ-कत्तेॅ अच्छा बात सोचै छै ।''

कि तखनिये इस्कूली के घण्टी तीन दाफी टन-टन-टन के बाद एकदम सें टनटनाय उठलै । घण्टी टनटनाना छेलै कि सब कॉपी-बस्ता लेलेॅ बिरनी रं बाहर निकली पड़लै आरो झुण्ड में चलतें, एक दुसरा केॅ धकेलतें,

लेरू-बाछा रं आगू बढ़ें लागलै ।

''अरे कहाँ छैं कापरी ? बाहर निकल, घरों में की घुसियैलों छैं ।'' भैरो कापरी के द्वारी पर आवी कें इकबालें गदगद कण्ठ सें कहलकै ।

''अरे इकबाल भाय, ठहरों, ठहरों, तुरत आवै छियौं ।'' कहतें-कहतें भैरो बाहर निकली ऐलै आरो बरण्डै पर खटिया बिछैतें-बिछैतें पूछलकै, ''से एत्तें भोरे-भोर ? कोंन खुशी आनलें छौ दोस्त कि पूसों में कोयल रं कंठ फूटी रहलों छौं। ला बैठों, आरो बतावों कि खुशी के बात की छेकै ।''

''पागल होय गेलों छैं । हेन्हैं कें बतैभौ, भौजी कें कहैं, पहिलैं सबोरों सें रसकदम के मिठाय दुकानी सें मंगैतौ, तें पुछियैं कि बात की छेकै ?'' इकबाल नें गोल करलों अखबार कें दायां हाथों सें बामां में लेतें कहलकै ।

''मीट्ठो ऐतै आरो मछलियो ऐतै, पहिलें बतावों तें दोस्त ।''

''अरे, बण्टू तें सौंसे इलाका के नाम रौशन करी देलकौ । है देखें, जागृत हिन्दुस्तान में की छपलों छै—बालक बण्टा को राज्य सरकार सम्मानित करेगी । एकदम मोटों-मोटों अक्षर में ई पंक्ति छपलों छै आरो नीचू में नान्हों-नान्हों अक्षर में ढेर सिनी बात ।''

भैरो इकबाल के हाथों सें अखबार लै कें पढ़ें लागलै । एकेक पंक्ति पर ओकरों मुंह कदम्ब नाँखी खिली रहलों छेलै ।

''भागवत, चौरासी आरनी के घरों में जबें मिठाय बँटी रहलों छै, तबें तें तोरा मिठाय के भोज टोला भरी में करी देना चाहियों भैरो ।'' इकबाल जना खुशी सें पागल होतें कहलकै, ''पढ़बे करलैं, हमरों इस्कूलो पुरस्कृत होतै, कैन्हें कि बण्टू ई स्कूल के छात्र छेकै । हम्में तें यहें बूझै छियै—बण्टू ई इलाका लेली अल्लाह के नियामत बनी कें ऐलै ।.....इखनी चलै छियौ भैरो, खबर ऐलों छै—डी. एम. कमिश्नर यहें संदर्भ में आपनों आदमी साथें इस्कूल आवै वाला छै । साँझै मिट्ठों, मछली दोनों खैभौ ।''

एतना कही झटकलों-झटकलों इकबाल आपनों टोला दिश मुड़ी गेलै ।

भैरो कापरी अखबार लेलें घरों के भीतर हेनों भागलै, जेना देर सें बाहर बंधलों बछड़ा बथानी दिश उड़ै छै । रूपसावाली के सामना में अखबार कें फैलाय कें राखी देलकै आरो कहलकै, ''पढ़ें सकै छों तें पढ़ों । बंटू के वश में भूते-प्रेत नै, सरकारो वश में होय गेलों छै ।'' आरो ई कही भैरो बच्चे नाँखी खिलखिलाय कें हाँसी पड़लै ।

सौंसे भीखनपुर मुहल्ला में भोरे सें गलगुदुर होय रहलों छै । ई मानै लें कोय्यो तैयारे नै छै कि जोन बण्टा कें राज्य सरकार सें पुरस्कृत करै के बात छपलों छै, ऊ पचरासिये के बेटा छेकै । हेनों बात रहैतियै तें भीखनपुर के नाम नै छपतियै । इस्कूलों के नाम छपलों छै तें भिट्टी के, जों यहें बण्टा रहतियै, तें भीखनपुरो के नाम जरूरे छपतियै । की बण्टा नाम के आरो लड़का आरो पचरासी नाम के बाप आरो कहीं नै हुऍ सकै छै ।

जत्तें किसिम के लोग, ओत्तें रकम के बात । मतरकि टोला भरी के बच्चा-बुतरु लें काका कनक लाल चौधरी हेनों-तेहनों आदमी नै छेकै । बड़ों वकिलाय पढ़लें छै, बड़का-बड़का जज-मिनिस्टर सें परिचय छै, ई बात के नै जानै छै । हुनी जेन्हें अखबार में ई समाचार पढ़लकै, तें सरकारी ऑफिसों में टेलीफोन करी-करी कें सब बात के पता लगाय लेलकै कि बण्टा केकरों लड़का छेकै, मूल बासिन्दा कहाँकरों छेकै, भिट्टी में ओकरों की रिश्ता छै, ओकरा कथी लें पुरस्कार मिली रहलों छै, पुरस्कार में ओकरा सरकारों सें की मिलतै, कहिया मिलतै, के देतै, कोनी स्थानों पर मिलतै, विशेष स्थिति में स्थान बदलें पारें की नै ? आरनी आरनी । आरो सब तरफ सें निश्चिन्त होय कें, साथे साथ यहू जानी कें कि बण्टा आरो कोय नै, ओकरों पड़ोसी पचरासिये के बेटा छेकै, हुनी मारे गदगद होतें घरों सें बाहर निकली ऐलों छेलै । दू नम्बर गुमटी पहुँची कें शंकर साव के मिठाय दुकानी में चार सेर मिहिन दाना के लड्डू लेलकै । आरो पचरासी घोंर दिश लौटी पड़लै । पटरिये-पटरी होलें हुनी एक नम्बर गुमटी तांय ऐलों छेलै आरो कारू मंडल

के दुकानी सें दस टाका के चॉकलेटो लै लेलकै। जेकरा खादी के आपनों लम्बा कुर्त्ता के जेबी में डाललकै आरो आगू बड़ी गेलै । हुनी बण्टा के बात कें लैकें एत्तै खुश छेलै, जेना ई पुरस्कार पचरासी बेटा कें नै, हुनके बेटा कें मिललों रहै ।

चौधरी काका पचरासी के दुआरी पर आवी कें रुकी गेलै, तें बण्टा कें आवाज देलकै । हुनकों आवाज सुनत्तैं पचरासी झपटी कें घरों सें बाहर आवी गेलै ।

''की बात छेकै दादा ?'' चौधरी काका के हाथों में मिठाय के डलिया देखी वैं आचरज सें पूछलकै ।

''अरे बण्टू कहां छै ?'' चौधरी का के उतावलापन के कोय सीमा नै छेलै ।

''ऊ तें बगीचा में सुखलों लकड़ी, काठी, पत्ता जौरों करी रहलों होतै । देखै नै छौ, कुहासों की रं राती घिरी आवै छै । लागै छै सबटा लगलों आलू पौधा कें झुलसा रोग मारी जैतै । तरसुऐ नी ऊ यहाँ ऐलों छै, आरो वही दिनों सें, हमरों मना करलहौ पर बगीचा भागी जाय छै, झाड़पात जमा करै लें । तबें एक बात होय जाय छै कि जखनी बण्टा खेतों के बीचों-बीचों में खोंर-पात राती जराय दै छै, तें कुहासों खेतों पर कम्मे गिरै छै । मनाहो करला पर मानै छै, जोरी सें बाल्टी-बाल्टी पानी लै आनै छै, फसलों पर छीटी देलकौ आरो खोंर-पतारों पर ताकि देर रात तांय ऊ धुऐंतें रहें । देखौ, ई ठहारों में ऊ बहियार गेलों होलों छै, तबें गांती बांधी देलें छियै आरो आपनों कम्बलो दै देलें छियै ।'' कहतें-कहतें पचरासी के बोली झमान होय गेलों छेलै, मजकि तखनिये कुछ हुलासों सें बोली उठलै, ''मतरकि जे कहों दादा, सालो भर तें नै होलों होत्तै बण्टा के भिट्टी गेलौ, आरो वहाँ सें ऐलों छै, तें पच्चीस साल के इलिम लै कें ऐलों छै ।''

''अरे यहें इलिम लें तें सरकारें ओकरा पुरस्कृत करी रहलों छै । पहलें है मिठाय घरों में रखी कें आवों । यै में कुछ तें बण्टा के संगी-साथियों में बांटी दियौ ।''

पचरासी कें है सब बहुत कुच्छू समझै में नै ऐलै । वैं अभी तांय ई खबर कें जानलो नै छेलै । कोय कहवो नै करलें छेलै, जानतियै कहाँ सें । ऊ आपने में हेरैलों-हेरैलों हेनों बुझैलै । जबें चौधरी कां फेनू घरों में मिठाय

धरी आय कें कहलकै, तें पचरासी तखनी बिना कुछ पूछले मिठाय घरों में राखी ऐलै आरो तुरत्ते बाहर निकली ऐलै, एक कुर्सियो लै ऐलों छेलै ।

''आबों, बैठों दादा ।'' कुर्सी दुआरी के बाहर रखतें पचरासी कहलें छेलै ।

''अरे नै, नै, एकरों कोय जरूरत नै छै ।'' चौधरी कां हाथों सें इनकार करतें कहलें छेलै आरो बाकी बात अखबार पढ़ी कें सुनैलें छेलै । सुनैला के बाद बड्डी गौरव के साथ कहने छेलै, ''की समझलौ, आबें बण्टा कें सरकारें पढ़ैतै । सरकारे के पैसा पर ऊ पटना जैतै, दिल्ली जैतै, लन्दन जैतै । आरो तोहें जानिये लेलौ कि कथी लें बण्टा कें सरकार है सुविधा दै रहलों छै । पूरे कदरसी-डोमासी कें बण्टा जे रं आपनों साथी संगें मिली कें स्वर्ग बनाय देलकै, वहें लें । पचरासी, ई काम तें आजादी पैला के बाद, नेहरु सें लैकें आपनों झुट्टा सांसद आरो विधायको नै करें पारलकै । डपोर संख रं बाजी लौ कत्तो ।''

पचरासी तें खुशी सें कुछ बोल्है नै पारी रहलों छेलै । की बोलतियै ऊ । वैं तें अभी तांय के ई जिनगी में कभी है बात सपन्हौं में नै सोचलें छेलै । जों सोचलें छेलै, तें एतने टा कि बण्टा चार अक्षर पढ़ी लै छै, तें बारह नम्बर गुमटिये पर कोय मनिहारी के दुकान खोलवाय देवै, नै घरों में दिएँ पारतै तें नै, आपनों जेब तें चलैतै ।

''अरे, सोचें की लागलौ । ई सपना के बात नै छेकै । अखबारों में छपलों बात छेकै । अखबारो झूठ हुएँ पारें, मजकि हम्में तें भागलपुर कमिश्नरी सें लैकें पटना तक पूछी लेलें छियै । एकदम सच-सच बात छेकै ।'' ई कहतें चौधरी कां आपनों जेबी में हाथ डाली कें सब टा चौकलेट निकाललें छेलै आरो पचरासी के दायां तरहत्थी आपनों बायां तरहत्थी पर धारतें, वै पर सब चॉकलेट राखी देलकै, ई कहतें कि, ''है खाली बण्टू वास्तें छेकै । हमरों दिश सें दै दियौ । पता नै, ऊ कखनी लौटें, नै तें हम्मी आपनों हाथों सें देतियै । है रं पूत तें घरों-घरों में हुएँ ।''

कहतें-कहतें हुनी एकदम गंभीर होय उठलों छेलै आरो जेन्हें लौटै लें घुमलै, ओन्है कें फेनू पचरासी दिश होतें बोललै, ''आरो सुनों, बण्टू पुरस्कृत तें होतियै भिट्टियें में, मजकि मॉर-मिनिस्टर सें पैरवी करी कें ऊ स्थान बदलवाय कें हम्में भीखनपुर करवाय लेलें छियै । आबें कालिये

थानवाला इस्कूली में सबटा मोर-मिनिस्टर, डी. एम. कमिश्नर ऐतै । सरकार सें कहीं देलियै कि बण्टू के माय के मॉन बहुत खराब छै, से सब बातों के देखतें हुऍ ई समारोह भीखनपुरे में हुऍ । डी. एम., कमिश्नरें मानियो लेलकै । आरो एक बात, ई कार्यक्रम अगले महिना के पहिलकों मंगलवार कें होना छै । यहू सबकें कही दियौ । से तें अखबार में ई सब बात निकलबे करतै ।'' कहतें-कहतें चौधरी काका विषहरी-थान दिश बढ़ी गेलों छेलै ।

पचरासी तें वहीं पर बक्खों नाँखी खाड़े रही गेलों छेलै—ढेर देरी लें । ई सब बातों पर जेना विश्वास होय्यो कें ओकरा विश्वास नै होय रहलों छेलै ।

भीखनपुर के प्राइमरी इस्कूल सजी-धजी कें बड़का घरकुण्डा रं सुन्दर दिखावें लागलों छेलै । आमों पल्लों कें, नारियल रस्सी सें गूंथी-गूंथी कें, माला नांखी बनैलों गेलै, जेकराहै इस्कूली छत के बीच में खड़ा सीक आरो बीस गज के दायरा में आवैवाला गाछ, मकान सें हेनों बांधलों गेलौ छेलै, जेना सीधा तनलों आधों छतरी रहें । बाहर-बाहर जहाँ रस्सी के छोर खतम हुऐ, वहाँ-वहाँ गेंदा फूलों के माला लटकैलों गेलों छेलै ।

छतरी के भीतर दू सौ सें ज्यादा प्लास्टिक वाला लाल-लाल कुर्सी दू भागों में राखलों गेलों छेलै—तीन हाथों के बीचे बीच खाली जग्घों छोड़ी कें, कि बड़ों-बड़का लोगों कें आबै-जाबै में कोय दिक्कत नै हुऍ ।

इस्कूली के बरण्डा सें लागलों पाया-वाया तें कुछुवे नै छेलै, से वहीं पर लम्बा रं तीन टेबुल जोड़ी कें रखलों गेलै आरो वैं पर बगुला के उजरों पंख नाँखी बगबग एकसलगा चादर हेनों बिछैलों गेलै कि तीन टेबुल जोड़ी कें एक करलों गेलों के पतो नै चलें । टेबुल के बीचों-बीचों में काँचों के गुलदस्ता में हजारा गेंदा आरो पत्ता सहित गुलाबो गोलियाय कें राखलों । वही टेबुल पीछू पांच ठो काठ वाला कुर्सी । कृष्णमोहन घोष बाबू के यहां से मंगैलों गेलों छेलै । बीचों में सिंहासननुमा एक काठों के कुर्सियो छेलै, जे

कनक लाल चौधरी के यहाँ सें मंगवैलोॅ गेलोॅ छेलै, जेकरा चौधरी जी आपने लेली खास करी कें बनवैलें रहै । आय वही कुर्सी शिक्षा मंत्री वास्तें ऐलै।

बरण्डा के नीचें दायां दिश वाला कुर्सी सिनी के सबसें आगू वाला कुर्सी सिनी पर इकबाल गुरु जी साथें, भैरो कापरी, पचरासी महतो, कनक लाल चौधरी, हरि दूबे, उमाकांत भारती साथें बण्टा केरोॅ नवो साथी अंजुम, रमखेली, मिरवा, शेखावत, घोल्टू, सोराजी, अठोंगर आरो बमबम बैठलोॅ छेलै ।

ऊ पंक्ति के ठीक पीछू वही इस्कूल के गुरु जी सिनी बैठलै । साथें साथें मुहल्ला भरी के आरो कुछ गणमान्य लोगो । बाकी पीछू कुर्सी पर मुंदीचक, बरहपुरा, लालूचक, लोदीपुर, इशाकचक, के लोग सिनी जमलोॅ होलोॅ छेलै । होन्हैं कें दांया दिश के अगुलका कुर्सी पर कुछ अफसर टाइप के लोग बैठलोॅ छेलै आरो पिछुलका कुर्सी पर पूरे भीखनपुर भरी के लोग पहिलें सें जमी चुकलोॅ रहै ।

मंच के पश्चिम, पूरब, आरो दक्खिन के पटरी तांय देखवैय्या के खचाखच भीड़, गड़लोॅ खुट्आ रं, स्थिर दिखावै । मंच के एकदम पीछू प्लास्टिक के पाँच कुर्सी पर पाँच जनानियो बैठलोॅ छेलै, जै में बण्टा आरो बिल्टू माय तें अलगे सें पहचान में आवी रहलोॅ छेलै, बाकी तीन कुर्सी पर चौधरी, भारती आरो दुबे जी के जनानी बैठलोॅ छेलै कि हठाते हुचक्का उठलै—मिनिस्टर साहब आवी गेलै, मिनिस्टर साहब आवी गेलै । जे खाड़ोॅ छेलै, ऊ तें खाड़े रहलै, लेकिन बैठलोॅ सब हेनोॅ खाड़ोॅ होय गेलै, जेना हठाते कलासोॅ में हेडमास्टर साहब घुसी गेलोॅ रहें ।

सब्भैं देखलकै, शिक्षा मंत्री जी सबसें आगू-आगू दोनों दिश बिछलोॅ कुर्सी सिनी के बीच के रास्ता सें निकली मंचोॅ दिश बढ़ी गेलै । एकरोॅ साथे पुलिस के रौन खतम होय गेलोॅ छेलै । सब एक दिश खाड़ोॅ होय गेलोॅ रहै ।

मंत्री जी के कुर्सी पर बैठत्हैं सांसद, विधायक हुनकोॅ एक दिश आरो मंत्री जी के साथ ऐलोॅ दू आदमी एक दिश बैठलै ।

मंत्री जी के जयजयकार के बीच जबें स्वागत गान खतम होलै, तें शिक्षा मंत्री होय के नाता मंत्री जी खाड़ोॅ होय कें अंग्रेजी में आधोॅ घंटा तांय बोललै, ताकि लोग हुनका कम पढ़लोॅ-लिखलोॅ नै समझें ।

तें आचरज में छेलै, बाकी ढेरे हेनों मूडों में, जेना हुनी मंत्री जी के एक-एक बातों कें समझी रहलों छेलै । कभियो-कभियो बगल के आदमी कें गुर्राय कें देखियो लै, है बताय लें कि ओकरों बोलला सें मंत्री कें सुनै में दिक्कत होय रहलों छै ।

मंत्री जी के भाषण खतम होलै, तें दायां दिश खड़ा एक आदमी सामना में आवी कें बोललै, ''आबें आपना सिनी के सामना में भिट्टी स्कूल के हेडमास्टर इकबाल जी आपनों बात राखतै ।''

मंच के नीचें जेना नया उत्तेजना उठी गेलों छेलै । इकबाल गुरु मंच पर चढ़लों छेलै । सफेद चूड़ीदार पजामा आरो सफेदे लंबा कुर्त्ता । चेहरा पर कटलों-छटलों कारों-घन्नो दाढ़ी आरो दाढ़ी के रंग सें मिलतें पातरों मूंछ । आँखी पर पातरों फ्रेम में सफेद शीशा के चश्मा । देखलै सें लागै कि खूब पढ़लों-लिखलों आदमी छेकै, यही सें सब्भै यहें सोचलकै कि हिनियो जरूरे अंग्रेजिये में बोलतै । मतरकि बात उल्टा निकललै । मंच पर आवी कें हुनी जबें माइक आपनों हाथों में लेलकै, तें एतनै टा कहलकै, ''आय देश में जों शिक्षा, बच्चा सिनी कें शिक्षित नै करें पारी रहलों छै, तें ओकरों एक्के कारण छेकै, कि शिक्षा ओकरों मातृभाषा में नै देलों जाय रहलों छै । एक बच्चा वहें भाषा में, सिर्फ वही भाषा में दुनिया भरी के बात समझें पारें, जे भाषा में ऊ बच्चा के पुरखां सब बातों कें हजारो लाखो बरसों सें समझतें ऐलों छै । ई देश के ज्ञान, ई देश के भाषा में छुपलों छै, आरो हम्में ई देश कें शिक्षित यहाँकरे माँटी के भाषा में करें पारौं, वही भाषा, जे दुबड़ी रं ई जमीन पर गड़लों छै, जेकरा जत्तें मोचारलों जाय, कत्तो काटलों जाय, ऊ फेनू उगी आवै छै, कैन्हें कि दुबड़ी कभियो नै मरै छै । बण्टा आरो एकरों साथीं टोला-टोला कें ओकरे भाषा में शिक्षित करी कें यहें देखैलें छै, जे काम कोय दूसरों भाषा सें दू सौ साल मे नै होतियै, ऊ काम बण्टू आरो ओकरों साथी सिर्फ पाँच महीना में करी दिखैलें छै । हमरा बड्डी गौरव होतै, जों ई बात कें ई देश के शिक्षाविद् समझें पारतै ।''

जब तांय इकबाल गुरु के भाषण होतें रहलै, तब तांय तें एकदम चुप्पी रहलै, मजकि हुनकों बात खतम होल्हैं ताली के गड़गड़ाहट हेनों गूंजलै कि मत पूछों । तीन मिनिट तांय गूंजतै रहलै । कम हुऐ कि फेनू तेज होय जाय । इकबाल जी के आपनों कुर्सी पर बैठी गेला के बादो ।

मंच-संचालक की बोललकै, केकरौ कुछ नै मालूम होलै । ताली बजबोॅ तेॅ तबेॅ रुकलै, जबेॅ मंच पर बण्टा आपनोॅ नवो साथी साथें खाड़ोॅ होय गेलोॅ छेलै ।

बण्टा के आपनोॅ साथी साथें मंच पर खड़ा होवोॅ तेॅ एक अलगे दृश्य खाड़ोॅ करी देलेॅ छेलै । जे सिनी नीचें कुर्सी पर बैठलोॅ छलै आकि कुर्सी के पीछू खड़ा छेलै, ऊ तेॅ बैठले आरू खड़े रहलै, मजकि दायां-बायां खड़ा देखवैय्या के पीछू वाला लोग गजब के हुलुक-बुलुक करेॅ लागलोॅ छेलै । छोटोॅ-छोटोॅ बुतरु तेॅ जन्हैं भीड़ोॅ में फांक देखै, मूड़ी घुसाय केॅ आगू निकली आवै । देखवैय्या के आँखी में अजीब भाव छेलै, जेना मंच पर खड़ा बुतरु सिनी अभी हवा में उड़ी केॅ देखतै ।

मंच संचालकें माइक बण्टा के आगू में करी देलकै आरो कुछ बोलै के इशारो करलकै । बण्टा एक क्षण लेली आपनोॅ दोस्त सिनी केॅ दायां-बायां दिश मूड़ी करी केॅ देखलकै—कि वैं की बोलतै ? कि तखनिये मंचोॅ सें नीचें उतरी केॅ ऊ पचरासी लुग आवी गेलै । पचरासी के हाथोॅ में राखलोॅ बस्ता केॅ लेलकै । एक कापी निकाललकै आरो वहीं सें एक कागज निकाली केॅ मंचोॅ पर फेनू खाड़ोॅ होय गेलै । ठीक वही जग्घा पर । एक दाफी दायां-बायां दिश के आपनोॅ नवो साथी केॅ देखलकै आरो मूं के माइक सें लगभग सटाय लेलकै । ठोर बंद करले हूं-हूं करी केॅ गल्ला साफ करलकै आरो बोलेॅ लागलै, ''हमरोॅ साथी सिनी बोलै छेलै कि हम्में एत्तेॅ बात केना जानै छियै । हम्में जरूर कोय भूत-प्रेत पोसलेॅ छियै । आय हम्में एकरोॅ राज बतावै छियै कि कना हम्में एत्तें-एत्तेॅ बात जानलियै आरो करलियै । है देखोॅ अखबारोॅ के ई टुकड़ा ।''

ई कही केॅ बण्टा दायां हाथ सें ऊ अखबार के टुकड़ा हवा में कुछ देर तांय लहरैलेॅ छेलै आरो फेनू नीचेॅ करी कहना शुरु करलेॅ छेलै, ''ई छेकै हमरोॅ पहिलकोॅ राष्ट्रपति अब्दुल कलाम द्वारा हमरा सिनी लेली बनैलोॅ गेलोॅ दस मंत्र, जेकरा हम्में रोज एकान्ती में घोकियै आरो वहेॅ मंत्र मोताबिक काम करियै, जहाँ दिक्कत हुएॅ, बड़ोॅ-बड़ोॅ विद्वानोॅ सें पूछियै । ई मंत्र सिनी हमरा में बड़ी हिम्मत लानी देलकै । आबेॅ तोरा सिनी जानै लेॅ चाहबौ कि ऊ मंत्र की छेकै, हम्में पढ़ी केॅ सुनाय छियौ ।''

आरो बण्टा दोनों हाथोॅ सें ऊ कतरन के पंक्ति सिनी केॅ ठीक सें

रेघाय-रेघाय कें पढ़ना शुरु करलकै,

''पहिलों मंत्र छेकै—हम्में आपनों पढ़ाय आरो कार्य भीतरी मनों सें करवै आरो महान बनबै ।

''दूसरों छेकै, आबें सें हम्में कम-सें-कम दस अनपढ़ लोगों कें पढ़बों-लिखवों सिखैबै ।

''तेसरों मंत्र छेके, हम्में कम-सें-कम दस गाछ लगैवै आरो ओकरों अच्छा नांखी देखभल करबै ।

''आबें चौथों मंत्र छेकै, हम्में शहर-गाँव जाय कें कम-सें-कम पांचो लोगों कें नशाखोरी आरो जुआ खेलै के आदत सें मुक्ति दिलैबै ।'

''पाँचमों मंत्र सुनों, पाँचमों मंत्र छेकै कि हम्में बीमार आदमी के दुख दूर करै के सद्दोखिन प्रयास करबै ।'

''वहें रं छठमों मंत्र ई छेकै कि हम्में धम्र, जाति आरो भाषा के नामों पर केकरो भेदभाव के समर्थन नै करबै ।

''सातमों मंत्र छेकै कि हम्में ईमानदार बनबै आरो समाज कें भ्रष्टाचार सें मुक्त करै के प्रयास करबै ।

''आठमों छेकै कि हम्में बुद्धिमान नागरिक बनै लेली काम करबै आरो आपनों परिवारो कें आदर्शवान बनैबै ।

''रहलै नौमों, तें नौमों मंत्र ई छेकै कि हम्में मंद बुद्धि आरो शारीरिक रूप सें कमजोर लोगों साथें दोस्ताना व्यवहार करवै आरो सहयोग देबै ताकि हुनकों सिनी हमरे नांखी जीवन जीएँ सकें ।''

कहतें-कहतें बण्टा हठाते रुकलों छेलै आरो कतरन कें बायां हाथों सें लेतें दायां हाथों सें दोस्त सिनी के छूवी-छूवी कें जल्दी-जल्दी गिनलें छेलै, ''एक, दू, तीन, चार, पाँच, छों, सात, आठ नौ आरो फेनू आपना पर अंगुरी रखतें कहलें छेलै, दस ।''

वैं एकरों बाद होन्हैं कें अखबार दोनों हाथों के दोनों चुटकी के बीच दबैतें बोललै छेलै, ''आरो मिसाइल मानव डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम जी कें दशमों दैलों मंत्र छेकै कि हम्में आपनों देशवासी आरो देश के सफलता पर गौरव करबै ।''

पढ़ला के बाद बड़ी हिफाजत सें वैं ऊ कतरन चपोती कें कमीज के ऊपरलका जेबी में राखी कें दोस्ते सिनी के पंक्ति में सीधा खाड़ों होय

गेलै ।

बण्टा के दशमों मंत्र पढ़त्हैं सब्भे दिशा सें ताली के हेनों गड़गड़ाहट होलों छेलै कि मत पूछों ।

तालिये के गड़गड़ाहट के बीच मंत्री जी उठलों छेलै आरो मंत्री जी साथें, मंचों के आरो सब आदमियो ।

टेबुल पर गांधी जी रों डेढ़-डेढ़ बित्ता के चमचम करतें स्टील वाला दस मूर्त्ति एक अर्दली आवी कें राखी गेलों छेलै ।

ताली के गड़गड़ाहट रुकिये नै रहलों छेलै ।

एक आदमी मंत्री जी के हाथों में एकेक करी कें मूर्त्ति राखलें जाय आरो मंत्री जी एकेक करी कें मूर्त्ति बहादुर बच्चा कें देलें जाय । पत्रकार आरो फोटो खिंचवैया के तें तांता । धांय-धांय कैमरा सें फोटो खिचलों जाय रहलों छेलै, कैमरा के छटाक-छटाक-छटाक सें बण्टा, अंजुम, रमखेली, मिरवा, शेखावत, घोल्टू, सोराजी, अठोंगर, बमबम, शेखर के चेहरा रही-रही कें वहें रं चमकी उठै, जेना धारापाती सजैलों आइना पर सुरुज के किरिन सब्भे पर एक्के साथ चमकी-चमकी जैतें रहें । बण्टा आरनी के आँख तें एकदम चौंधियैलों जाय छेलै । सामना में मूं राखवों एकदम कठिन । मजकि फोटो खिंचाय के हुलास के कोय ठिकानों नै छेलै । सब मूर्त्ति लेलें मूर्त्तिये नाँखी खाड़ों रहलै । ऊ बीचों में पीछू खड़ा होय कें मंत्री जी फेनू की बोललै, कोय नै सुनलकै । भला हौ ताली में कोय्यो केकरों की सुनें पारतियै ।

धीरें-धीरें मंच खाली होय गेलै । बण्टौ आपनों साथी साथें नीचे उतरी इकबाल गुरु जी कें घेरी खाड़ों होय गेलों छेलै ।

चौधरी जी घूमी कें जमुआर गुरु जी सें कुछ कहै लें चाहलकै, मजकि हुनी आपनों साथी साथें हौलें सें कखनिये खिसकी गेलों छेलै ।

आरो मंत्रियो आरनी जाय चुकलै, मजकि देखवैय्या, सुनवैय्या के ठसाठस भीड़ होन्है कें खाड़ों छेलै, जेना बिना नगीचों सें बण्टा कें देखलें जाय लें तैयार नै रहें । ताली के गड़गड़ाहट थमी गेलों छेलै, तहियो नै जानौं, सबके कानों में हौ गड़गड़ाहट कत्तें देर तांय गनगनैतैं रहलै । जेकरा भी कोय कुछ बोलतें सुनलकै, तें बस यही कि ''बेटा हुएँ तें बण्टा जेन्हों ।''

◆◆◆